COLLECTA
S.TÆ GENOVE

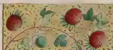
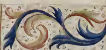



IHS
MA
MA
IHS





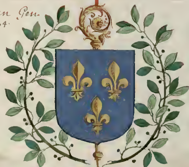

120



# Collectarium. Ad usum canonicorum Regularium Sᵗᵉ Genouefæ Parisiensis. Ordinis Sancti Augustini ad formam sacro sancti Concilii tridentini emendatum ac repurgatum. Anno domini millesimo sexcentesimo decimo septimo.












# Tabella Temporalia.

| Anni Domini | Litterę Dominicales | Aureus Numerus | Epactę | Septuagesima | Dies cinerum | Pascha |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1618 | g | 4 | iiij | 11. febr. | 28. febr. | 15. April. |
| 1619. | f. | 5 | xv | 27. Janu. | 15 febr. | 31 mart. |
| 1620 | e d | 6 | xxvj | 16. febr. | 4. mart. | 19. April. |
| 1621 | c | 7 | vij | 7. febr. | 24. febr. | 11. april. |
| 1622 | b | 8 | xviij | 23. ianu. | 9. febru. | 27. mart. |
| 1623 | A | 9 | xxix | 12. febru. | 1. mart. | 16. april. |
| 1624 | g f | 10 | x | 4. febru. | 21. febr. | 7. April. |
| 1625 | e | 11 | xxj | 26. ianu. | 12. febr. | 30. mart. |
| 1626 | d | 12 | ij | 8. febru. | 25. febr. | 12. April. |
| 1627 | c | 13 | xiij | 31. ianu. | 17. febr. | 4. April. |
| 1628 | b A | 14 | xxiiij | 20. febr. | 8. mart. | 23. April. |
| 1629 | g | 15 | v | 11. febru. | 28. febr. | 15. April. |
| 1630 | f | 16 | xvi | 27. Janu. | 13. febru. | 31. Mart. |
| 1631 | e | 17 | xxvij | 16. febru. | 5. Mart. | 20. April. |
| 1632 | d c | 18 | viij | 8. febru. | 25. febru. | 11. April. |
| 1633 | b | 19 | xix | 23. Janu. | 9. febru. | 27. Mart. |
| 1634 | A | 1 | j | 12. febru. | 1. mart. | 16. April. |
| 1635 | g | 2 | xij | 4. febru. | 21. febru. | 8. April. |
| 1636 | f e | 3 | xxiii | 20. Janu. | 6. febru. | 23. mart. |
| 1637 | d | 4 | iiij | 8. febru. | 25. febru. | 12. April. |
| 1638 | c | 5 | xv | 31. Janu. | 17. febru. | 4. April. |
| 1639 | b | 6 | xxvj. | 20. febru. | 9. Mart. | 24. April. |
| 1640 | A g | 7 | vij. | 5. febru. | 22. febr. | 8. April. |
| 1641 | f | 8 | xviij. | 27. Janu. | 13. febr. | 31. mart. |
| 1642 | e | 9 | xxix. | 16. febr. | 5. mart. | 20. April. |

# Festorum mobilium :-

| Anni Domini | Ascensio Domini. | Pentecostes | Corpus christi | indictio. | dñice post pente. | Dominica j. aduẽtꝰ. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1618 | 24. maij. | 3. Junij. | 14. Junij. | 1 | 25 | 2. decẽb. |
| 1619 | 9. maij. | 19. maij. | 30. maij | 2 | 27 | 1. decẽb. |
| 1620 | 28. maij. | 7. Junij. | 18. Junij | 3 | 24 | 29. nou. |
| 1621 | 20. maij. | 30. maij. | 10. Junij. | 4 | 25 | 28. nou. |
| 1622 | 5. maij. | 15. maij. | 16. maij. | 5 | 27 | 27. nou |
| 1623 | 25. maij. | 4. Junij. | 15. Junij | 6 | 25 | 3. decẽb. |
| 1624 | 16. maij. | 26. Junij. | 6. Junij. | 7 | 26 | 1. decẽb. |
| 1625 | 8. maij. | 18. maij. | 29. maij. | 8 | 27 | 30. nou. |
| 1626 | 21. maij. | 31. maij. | 11. Junij. | 9 | 25 | 29. nou. |
| 1627 | 13. maij. | 23. maij. | 3. Junij. | 10 | 26 | 28. nou. |
| 1628 | 1. Junij. | 11. Junij. | 22. Junij. | 11. | 24 | 3. decẽb. |
| 1629 | 24. maij. | 3. Junij. | 14. Junij. | 12 | 25 | 2. decẽb. |
| 1630 | 9. maij. | 19. maij. | 30. maij. | 13 | 27 | 1. decem. |
| 1631 | 29. maij. | 8. Junij. | 19. Junij. | 14 | 24 | 30. nou. |
| 1632 | 20. maij. | 30. maij. | 10. Junij | 15 | 25 | 28. nou. |
| 1633 | 5. maij. | 15. maij. | 26. maij. | 1. | 27 | 27. nou. |
| 1634 | 25. maij. | 4. Junij. | 15. Junij | 2 | 25 | 3. decem |
| 1635 | 17. maij. | 27. maij. | 7. Junij. | 3 | 26 | 2. decem. |
| 1636 | 1. maij. | 11. maij. | 22. maij. | 4 | 28 | 30. nou. |
| 1637 | 21. maij. | 31. maij. | 11. Junij | 5 | 25 | 29. nou. |
| 1638 | 13. maij. | 23. maij. | 3. Junij | 6 | 26 | 28. nou |
| 1639 | 2. Junij. | 12. Junij. | 23. Junij. | 7 | 23 | 27. nou |
| 1640 | 17. maij. | 27. maij. | 7. Junij. | 8 | 26 | 2. decem |
| 1641 | 9. maij. | 19. maij. | 30. maij | 9 | 27 | 1. decem. |
| 1642 | 29. maij. | 8. Junij. | 19. Junij | 10 | 24 | 30. nou. |

KL Januarius habet dies xxxi. Luna vero xxx. 

| | | | |
|---|---|---|---|
| A | Kal | 1 | Circumcisio domini. Duplex. |
| B | iiij. | 2 | De octava s. Stephani iij s. le. |
| C | iij | 3 | Genouefe virg. to dup s. Octa s Joannis. |
| D | pri. | 4 | De octa ss. Innocentium memo. |
| E | non | 5 | Vigilia me. |
| F | viij. | 6 | Epiphania dom. to Dup. s. |
| G | vij. | 7 | De octava. |
| A | vi. | 8 | De octava. |
| B | v. | 9 | De octava. |
| C | iiii. | 10 | De octa s. Genouef Dup. Guillermi archi. m. |
| D | iij. | 11 | De octava. |
| E | pri | 12 | De octava. |
| F | idi | 13 | De oct. Epiph. iij dup. B Remigij. epis. me. m. Sequenti domi imponitur liber psalmorum. |
| G | xix. | 14 | Hilarij Docto. ix lect. Felicis presb mr. memo. |
| A | xviij. | 15 | Mauri abb. ix lect. |
| B | xvij. | 16 | Marcelli Pape et mar. iij. lect. |
| C | xvj. | 17 | Anthonij conf. ix lect. |
| D | xv. | 18 | Prisce virg. et mar. iij. lect. |
| E | xiiij. | 19 | Launomarij abb. m. |
| F | xiij. | 20 | Fabiani et Sebastia. mart. ix lect. |
| G | xij. | 21 | Agnetis virg et mart. m° dupl. |
| A | xj. | 22 | Vincentij martyris. m° duplex. |
| B | x | 23 | Sulpitij episco et confess. ix. lect. |
| C | ix. | 24 | |
| D | viij. | 25 | Conversio s pauli Apost. Dup. |
| E | vij. | 26 | Preiecti episco et mart. iij. lect. |
| F | vj. | 27 | |
| G | v. | 28 | Agnetis secundo. iij. lect. |
| A | iiij. | 29 | |
| B | iij. | 30 | |
| C | | 31 | |

KL Februarius. habet dies xxviij
Luna vero xxix.

| | | | |
|---|---|---|---|
| D | Kal | 1 | Ignatij episco et mart. iii. |
| E | iiij | 2 | Purificatio B. marie to dup. |
| F | iij | 3 | |
| G | pri | 4 | |
| A | non | 5 | Agathe virg et mar. ix lect. |
| B | viij | 6 | Vedasti episco. ix lect. Amandi epi. mem. |
| C | vij | 7 | |
| D | vj | 8 | Primum xl. |
| E | v | 9 | |
| F | iiij | 10 | Scholastice virg. mem. |
| G | iij | 11 | |
| A | pri | 12 | |
| B | idi | 13 | |
| C | xvj | 14 | Valentini mart. iij lect. |
| D | xv | 15 | |
| E | xiiij | 16 | |
| F | xiij | 17 | |
| G | xij | 18 | |
| A | xj | 19 | |
| B | x | 20 | |
| C | ix | 21 | |
| D | viij | 22 | Cathedra S. Petri. Dup. |
| E | vij | 23 | |
| F | vj | 24 | Matthie Apost. dupl. Locus bisser. |
| G | v | 25 | |
| A | iiij | 26 | |
| B | iij | 27 | |
| C | pri | 28 | Translatio S. August. ix. lect. |

# KL Martius habet dies xxxi

## Luna vero xxx.

| | | | |
|---|---|---|---|
| d | Kal | 1 | Albini episco. mem. |
| e | vi | 2 | |
| f | v | 3 | |
| g | iiij | 4 | |
| A | iij | 5 | |
| b | pri | 6 | |
| c | no | 7 | Satyri sociorum qz. eius. mar. ix lect. |
| d | viij | 8 | Thome de aquino confess. ix. lect. |
| e | vij | 9 | |
| f | vi | 10 | |
| g | v | 11 | |
| A | iiij | 12 | Gregorij pape et eccle. doct[us]. dup. |
| b | iij | 13 | |
| c | pri | 14 | Vltimum. xl. |
| d | idi | 15 | |
| e | xvij | 16 | |
| f | xvj | 17 | |
| g | xv | 18 | |
| A | xiiij | 19 | |
| b | xiij | 20 | |
| c | xij | 21 | Benedicti Abb. ix. lect. primu[m] pasc. |
| d | xi | 22 | |
| e | x | 23 | |
| f | ix | 24 | |
| g | viij | 25 | Annunciatio dominica to. dup. |
| A | vij | 26 | |
| b | vi | 27 | |
| c | v | 28 | |
| d | iiij | 29 | |
| e | iij | 30 | |
| f | pri | 31 | |

# KL Aprilis, habet dies. xxx. Luna vero. xxix.

| | | | |
|---|---|---|---|
| G | Kal. | 1 | Mariæ Egyptiacæ. ix. lect. |
| A | iiij | 2 | |
| B | iij | 3 | |
| C | pri. | 4 | Ambrosii episco. Et eccle. doct. dup. |
| D | non. | 5 | |
| E | viij | 6 | Guillermi Abb. iij dup. |
| F | vij | 7 | |
| G | vj | 8 | |
| A | v | 9 | |
| B | iiij | 10 | |
| C | iij | 11 | |
| D | pri. | 12 | |
| E | idi. | 13 | |
| F | xviij | 14 | Tiburtij. et Valeriani mar. iij. lect. |
| G | xvij | 15 | |
| A | xvj | 16 | |
| B | xv | 17 | |
| C | xiiij | 18 | |
| D | xiij | 19 | |
| E | xij | 20 | |
| F | xj | 21 | |
| G | x | 22 | Inuētio. ss. corpor. Dionisij Rust. et Eleut. ix. lect. |
| A | ix | 23 | Georgij mart. iij. lect. |
| B | viij | 24 | |
| C | vij | 25 | Marci Euang. dup. litaniæ maior. |
| D | vj | 26 | |
| E | v | 27 | |
| F | iiij | 28 | Vitalis mart. iij lect. Vltimū pasc. |
| G | iij | 29 | Petri mart iij. lect. |
| A | pri. | 30 | Eutropii episco et mar. iij. lect. primum Ascē. |

# Mayus. habet dies. xxxj. Luna vero. xxx.

| | | | |
|---|---|---|---|
| B | Kal. | 1 | SS. Apost. Philippi. et Jacobi. Dup. |
| C | vj | 2 | Athanasij. episc. et conf. ix lect. (Inuenci. |
| D | v | 3 | Inuētio s. cru. iij. dup. Alexandri sociorūq3 eius mar. m |
| E | iiij | 4 | Monice vidue. ix. lect. |
| F | iij | 5 | Joannis Damasc. ix. lect. |
| G | pri | 6 | |
| A | non | 7 | |
| B | viij | 8 | |
| C | vij | 9 | Translatio S. Nicolai. iij. lect. s. |
| D | vj | 10 | Gordiani et epimachi mar. iij. lect. Primū pētt. |
| E | v | 11 | Gregorij Nazanzeni. ix. lect. |
| F | iiij | 12 | Nerei et Achilei atq3 Pancracij mar. ix lect. |
| G | iij | 13 | |
| A | pri. | 14 | |
| B | idi. | 15 | |
| C | xvij | 16 | |
| D | xvj | 17 | Primū Trinitatis. hist. regum imponitur. |
| E | xv | 18 | Potentiane virg. iij. lect. |
| F | xiiij | 19 | Yuonis confess. iij. lect. |
| G | xiij | 20 | Austrigisili episc. et conf. iij. lect. |
| A | xij | 21 | Bandelij mar. ix. lect. Primum Sacrament. |
| B | xj | 22 | |
| C | x | 23 | Desiderij epis et mar. mem. |
| D | ix | 24 | |
| E | viij | 25 | Urbani pape et mar. iij. lect. |
| F | vij | 26 | |
| G | vj | 27 | |
| A. | v | 28 | Germani paris. episc. ix. lect. |
| B. | iiij | 29 | Maximi episc. mem. |
| C. | iij | 30 | |
| D. | | 31 | |

KL Iunius, habet dies. xxx.
Luna vero. xxix.

| | | | |
|---|---|---|---|
| E | Kal | 1 | Nicomedis mart. mem. in. |
| F | iiij | 2 | Marcellini et petri mar. iij. lect. |
| G | iij | 3 | Clotildis Regine francie dup. Vltim. Ascens. |
| A | pri. | 4 | |
| B | no. | 5 | |
| C | viij | 6 | Claudij conf. et episc. ix. lect. |
| D | vij | 7 | |
| E | vj | 8 | Medardi episc. et conf. ix. l. Gildardi. m. |
| F | v | 9 | |
| G | iiij | 10 | |
| A | iij | 11 | Barnabe Apostoli. dup. |
| B | pri. | 12 | Basilidis sociorumque eius mart. iij. lect. |
| C | idi. | 13 | Vltimu pentecost. |
| D | xviij | 14 | Basilij magni confess. ix lect. |
| E | xvij | 15 | Viti et modesti mar. iij. lect. |
| F | xvj | 16 | Cirici et Iulite matris eius. mar. iij. le. |
| G | xv | 17 | |
| A | xiiij | 18 | Marci et Marcelliani mar. iij. lect. |
| B | xiij | 19 | Geruasii et Prothasii. mar. ix. lect. |
| C | xij | 20 | |
| D | xj | 21 | Leufredi Abb. ix. lect. |
| E | x | 22 | |
| F | ix | 23 | Vigilia. iij. lect. |
| G | viij | 24 | Natiuitas B. Ioannis Baptiste. dup. |
| A | vij | 25 | Vltimu fest. Sacramenti. |
| B | vj | 26 | Ioannis, et pauli mar. ix. lect. |
| C | v | 27 | Sequenti dna imponit. hist. Sapientie. |
| D | iiij | 28 | Leonis pape. m. Vigilia. iij. lect. |
| E | iij | 29 | SS. Aposto. Petri et pauli. to. dup. |
| F | pri | 30 | Commemoratio S. pauli. dup. |

KL Iulius. habet dies. xxxi. 

Luna vero. xxx.

| | | | |
|---|---|---|---|
| G | Kal. | 1 | Oct. b Joannis baptiste. iij dup. b. |
| A | vi. | 2 | Visitatio B. Marie. iij dup. b. processi |
| b | v. | 3 | et Martiniani mart. mem. |
| c | iiij. | 4 | Translatio S. martini episc. ix. lect. |
| d | iij. | 5 | |
| e | pri | 6 | Oct. Apost. dup. |
| f | no | 7 | Marcialis episc. et conf. ix. lect. |
| g | viij. | 8 | |
| A | vij. | 9 | |
| b | vj. | 10 | Septem fratrum mart. iij. lect. |
| c | v. | 11 | Savini episc. et mart. iij. lect. |
| d | iiij. | 12 | |
| e | iij. | 13 | Turiani episc. et confess. ix. lect. |
| f | pri | 14 | Bonaventure doctor. ix. lect. |
| g | id | 15 | |
| A | xvij. | 16 | |
| b | xvj. | 17 | |
| c | xv. | 18 | Arnulphi episc. et mart. ix lect. |
| d | xiiij. | 19 | |
| e | xiij. | 20 | Margarete virg. et mart. ix. lect. |
| f | xij. | 21 | Victoris mart. iij dup. Praxedis virg. memo |
| g | xj. | 22 | Marie magdalene. Dupl. |
| A | x. | 23 | Apollinaris mart. mem. m. |
| b | ix. | 24 | |
| c | viij. | 25 | Jacobi Apost. dup. Cucuphatis mar. mem. |
| d | vij. | 26 | Christophori mart. ix. lect. |
| e | vj. | 27 | |
| f | v. | 28 | S. Anne matris x[ri]. marie. ix. lect. s. Sequenti do[minica] imponit[ur] historia Iob. |
| g | iiij. | 29 | Oct. s m. magdalene. iij. dup. b. Felicis so(ciorumque. eius. mart. mem. m.) |
| A | iij. | 30 | Abdon et Senes mart. iij. lect. |
| b | pri | 31 | Germani Antissiodorensis. episc. iij dup. |

16

# KL Augustus, habet dies. xxxj.
## Luna vero. xxx.

| | | | |
|---|---|---|---|
| C | Kal. | 1 | Petri ad vincul. dup. Machabeor mar. me. |
| D | iiij | 2 | Stephani pape et mart. iij. lect. |
| E | iij | 3 | Inventio s. Stephani prothom. ix. lect. s. |
| F | pri | 4 | Dominici confess. ix. lect. |
| G | nō. | 5 | Marthe virg. iij. lect. |
| A | viij | 6 | Transfiguratio Dñi. iij dup. Sixti epi et mart. me. m. Felicissimi et agap. mem. |
| B | vij | 7 | Lupi Trecens. episco. ix. l. Donati epis et mar. |
| C | vj | 8 | Ciriaci, Largi et smarag. m. iij. lect. |
| D | v | 9 | Romani mart. mem. Vigilia. |
| E | iiij | 10 | B. Laurentij mart. iij dup. |
| F | iiij | 11 | Translatio ss. Corone Domini. iij dup. (Tiburcij mar. mem. |
| G | pri | 12 | Radegundis Reg. franc. ix. l. |
| A | idi | 13 | Hyppoliti sociorumq. ix. lect. |
| B | xix | 14 | Eusebij confess. iij. lect. m. Vigilia. |
| C | xviij | 15 | Assumptio B. M. Virginis. to. dup. ann. |
| D | xvij | 16 | Rochi confess. mem. m. |
| E | xvi | 17 | De oct. s. Laurentij mem. m. |
| F | xv | 18 | Agappiti mart. mem. m. |
| G | xiiij | 19 | Magni mart. mem. Dedicatio cappelle. m. |
| A | xiij | 20 | |
| B | xij | 21 | |
| C | xi | 22 | De oct b. m. V. dup. Timothei et Simphoriani mart. memo. m. |
| D | x | 23 | Benardi Abb. ix. lect. Timoth. et Apolinar (mart. memor |
| E | ix | 24 | Bartholomej. Apo. dup. Audoeni episc. memo. |
| F | viij | 25 | Ludovici reg. franc. ix. lect. s. |
| G | vij | 26 | |
| A | vj | 27 | Georgij sociorq. eius. mar. ix. lect. Rufi mar. me. |
| B | v | 28 | Augustinj P. N. epis. et eccl. doctor to. dup. Hermetis mar. mem. sequenti dom. impo. hist. tobie. |
| C | iiij | 29 | Decolatio. b. Joann. bapt. ix. l. Mederici. abb. me. Sabine virg. memo. Missa eiusd. debet iniungi alicui fra. |
| D | iij | 30 | Fiacri confess. ix. lect. Felicis et Audacti mar mem. Missa eiusd. debet iniungi alicui fratrum |
| E | pri. | 31 | |

# KL September, habet dies. xxx. Luna vero. xxix

| | | | |
|---|---|---|---|
| F | Kal | 1 | Lupi episc iij. lect. Prisci mart. mem. Egidij Abb. mem. Commemoratio fratrū nostru |
| G | iiij | 2 | |
| A | iij | 3 | |
| b | pri | 4 | De oct S. Augustini. iij° dup. b. |
| C | no | 5 | |
| D | viij | 6 | |
| E | vij | 7 | Euurtij epi. Aurelianēn. dup. Clodoaldi presb. me. m. |
| F | vj | 8 | Natiuitas b. m. V. to. dup. Adriani mart. memo. |
| G | v | 9 | Gorgonij mart. memo. m. |
| A | iiij | 10 | |
| b | iij | 11 | Prothi et hiacinthi mar. mem. m. Sequenti |
| C | pri | 12 | Do^ca. imponit^r. historia Judith. |
| D | idi | 13 | |
| E | xviij | 14 | Exaltatio s. crucis. iij. dup. SS. Cornelij et Cipri. mar. mem. |
| F | xvj | 15 | De oct b. m. V. iij. dup. b. Nicomed. mar. me. m. |
| G | xv | 16 | Eufemiæ virg. et mar. iij. lect. Luciæ et Gemma. m. me. |
| A | xiiij | 17 | Lamberti episc et mart. memo. Sequenti |
| b | xiij | 18 | Do^ca. imponit^r. historia. Hester. |
| C | xij | 19 | |
| D | xj | 20 | Vigilia. |
| E | x | 21 | Mathei Apost. et. euang. dupl. |
| F | ix | 22 | Mauricij sociorūq. eiꝰ. mart. ix. lect. |
| G | viij | 23 | |
| A | vij | 24 | Solemnis episc. et confess. ix. lect. |
| b | vj | 25 | Firmini episco. et mart. iij. lect. |
| C | v | 26 | |
| D | iiij | 27 | Ceraunī parisiens. epis. iij. dup. Sequenti Do^ca. imponit^r hist. Machabeorum. |
| E | iij | 28 | Cosmæ et Damiani mart. ix. lect. |
| F | pri | 29 | Michaelis Archangeli. iij. dup. |
| G | non | 30 | Hieronimi presb. et Ecclesie doct. |

# KL October. Habet dies. xxxi.
## Luna vero. xxx.

| | | | |
|---|---|---|---|
| A | Kal. | i | Remigij episc. et confess. ix. lect. Germani Vedasti et Bauonis episcoporum. mem. |
| B | vj | 2 | Leodegarii episc. et mart. ix. lect. |
| C | v | 3 | |
| D | iiij | 4 | Francisci confess. ix. lect. |
| E | iij | 5 | Aureæ Virg. iij. lect. |
| F | prid | 6 | |
| G | nō | 7 | Marci papæ. iij. lect. Marcelli sociorumque eius mar. me. |
| A | viij | 8 | |
| B | vij | 9 | Dionisij Rustici, et Eleutherij. mart. dup. |
| C | vj | 10 | |
| D | v | 11 | |
| E | iiij | 12 | |
| F | iij | 13 | |
| G | prid | 14 | Calixti papæ et mart. memo. |
| A | idib. | 15 | |
| B | xvij | 16 | De oct. S. Dionisij. iij. dup. b. |
| C | xvj | 17 | Ambrosij biturriensis episc. iij. lect. |
| D | xv | 18 | Lucæ Euangelist. dup. |
| E | xiiij | 19 | |
| F | xiij | 20 | |
| G | xij | 21 | |
| A | xi | 22 | |
| B | x | 23 | |
| C | ix | 24 | Maglori episc. et confess. ix. lect. |
| D | viij | 25 | Crispini et Crispiniani. mart. iij. lect. |
| E | vij | 26 | |
| F | vj | 27 | Vigilia. Apost. Simonis et Iude. |
| G | v | 28 | Translatio. S. Genouefæ. Virginis. to. dup. |
| A | iiij | 29 | SS. Apost. Simonis et Iude. dup. Sequenti |
| B | iij | 30 | Dominica imponitur, historia. Ezech. |
| C | prid. | 31 | Quirini mart. Vigilia. |

# KL Nouember. habet dies. xxx. Luna vero. xxix.



| | | | |
|---|---|---|---|
| D | Kal. | i | Festiuitas omniū Sanctoꝝ. to dup. anu. |
| E | iiij | 2 | Commemoratio fidelium Animarum. |
| F | iij | 3 | Marcelli parisiensis. epise. ix. lect. |
| G | pri | 4 | De oct. s. Genouefe ter du. b. |
| A | nō | 5 | De oct omnium Sanct. |
| B | viij | 6 | De oct. |
| C | vij | 7 | De oct. |
| D | vj | 8 | De oct. omniū Sāct. SS. Quatuor corona. me. |
| E | v | 9 | Theodori mart. iij. lect. |
| F | iiij | 10 | Martini pape. mem. |
| G | iij | 11 | Martini Archi epise. dup. Menne mar. me. |
| A | pri | 12 | |
| B | idi | 13 | Bricij et Gendulphi epise. mem. m. |
| C | xviij | 14 | |
| D | xvij | 15 | |
| E | xvi | 16 | Translatio. s. Ceraunj parisien. epis. ix. l. |
| F | xv | 17 | Aniani Aurelianensis epise. mem. |
| G | xiiij | 18 | Alde virg. iij. dup. De oct. s. martini. me. m. |
| A | xiii | 19 | |
| B | xij | 20 | |
| C | xj | 21 | Presentatio B. M. Virg. iij. dup. b. |
| D | x | 22 | Cecilie Virg. et mart. ix. lect. |
| E | ix | 23 | Clementis pape. et mar. ix. l. s. Felicitatis Vidue et mar. |
| F | viij | 24 | Grisogoni mart. iij. lect. C memo. |
| G | vij | 25 | Catherine Virg. et mart. dup. |
| A | vj | 26 | Miracula B. Genouefe. to dup. Celedonij. j. Adūct9. |
| B | v | 27 | Suffredi epise. iij. in Annuncia, magnū Reg. |
| C | iiij | 28 | Dedicatio eccles. B. Genouefe to du. Sol. |
| D | iij | 29 | Saturnini mart. mem. Vigilia. |
| E | pri | 30 | Andree Apostoli. Duplex. |

# KL December. Habet dies. xxxi. Luna vero. xxx.

| | | | |
|---|---|---|---|
| F | Kal. | j | Eligij episc. et confess. ix lect. |
| G | iiij | 2 | |
| A | iij | 3 | Ultimus Adventus. |
| B | pri. | 4 | Barbare virg. et mart. ix. lect. |
| C | no. | 5 | De oct. Dedicationis iij. dup. b. |
| D | viij | 6 | Nicolaj episc. et confess. dup. |
| E | vij | 7 | De oct. S. Andree Apost. mem. iii. |
| F | vj | 8 | Conceptio B. M. Virginis. to dup. |
| G | v | 9 | |
| A | iiij | 10 | |
| B | iij | ij | Gentiani, Fusciani et Victor. mart. mem. |
| C | pri | 12 | |
| D | idj | 13 | Lucie Virg. et mart. ix. lect. |
| E | xix | 14 | Nichasij episc. et mart. ix. lect. |
| F | xviij | 15 | O Sapientia. |
| G | xvij | 16 | |
| | xvj | 17 | |
| B | xv | 18 | |
| C | xiiij | 19 | |
| D | xiij | 20 | |
| E | xij | 2j | S. Thome. Apost. dup. |
| F | xj | 22 | |
| G | x | 23 | |
| A | ix | 24 | Vigilia. iij. lect. |
| B | viij | 25 | Nativitas Domini. Nost. Jesu, to. du. ann. |
| C | vij | 26 | S. Stephanj prothomart. dup. Anastasie virg. |
| D | vj | 27 | S. Joannis. Evangelist. dup. |
| E | v | 28 | SS. Innocentium. iij. dup. |
| F | iiij | 29 | Thome Cantuariensis. Archi episc. et mar. ix. l. |
| G | iij | 30 | |
| A | prid | 31 | Silvestri pape. ix. lect. |

# Absolutiones. et benedictiones. Dicende ante Lectiones in officio novem et trium lectionum.

## In primo Nocturno.

### Absolutio.

Exaudi domine Iesu christe, preces servorum tuorum, et miserere nobis, qui cum patre et spiritu sancto vivis et regnas in secula seculorum. ℟. Amen. Prima benedi.

Benedictione perpetua benedicat nos pater eternus. ℟. Amen. Secunda benedi.

Unigenitus dei filius nos benedicere et adiuvare dignetur. ℟. Amen. Tertia bene.

Spiritus sancti gratia illuminet sensus et corda nostra. Amen. In secundo Noct°.

Absolutio. Ipsius pietas et misericor-

dia nos adiuuet. qui cum patre et spiritu sancto viuit et regnat in secula seculorum. ℟. Amen. Prima benedictione.

D eus pater omnipotens sit nobis propitius et clemens. ℟. Am. Secunda be.

C hristus perpetue det nobis gaudia vite. ℟. Amen. Tertia benedictione.

I gnem sui amoris accendat deus in cordibus nostris ℟. Am. In iii° noct°.

Absol. A vinculis peccatorum nostrorum absoluat nos omnipotens et misericors dominus ℟. Am prima. bene.

E uangelica lectio sit nobis salus et protectio. Amē. secunda benedict.

D iuinum auxilium maneat semper nobiscum. ℟. Amen. Tertia benedict.

Quando

Quando fit officium de sancto, vel sancta, vel pluribus sanctis dicitur.

Omnius, vel, Quorum, vel, Quarum festum colimus ipse, vel, ipsa, vel, ipsi, vel ipse, intercedat, vel, intercedant pro nobis ad dominum :-

Quando fit officiū de Sancta maria.

Cuius festum colimus ipsa virgo virginum intercedat pro nobis ad dominum.

Tertia Absolutio.

Ad societatem ciuium supernorum perducat nos rex angelorum.

Quando dicitur aliud Euangelijs dicit^{r}.

Per euangelica dicta deleantur nostra delicta.

Quando fit officium trium lectionum; .

Absolutiones et benedictiones Primi No
cturni dicuntur feria secunda et quinta
Secundi Nocturni, feria iij.ª et vj.ª
Tertij Nocturni feria iiij.ª et Sabbato,
omissa benedictione Ante euangelium
cuius loco dicitur.

Ille nos benedicat qui sine fine viuit
et regnat.

Si autem fit de sancto aliquo,
Feria iiij.ª Prima benedictio erit.
Ille nos benedicat. Secunda.
Cuius festum. Tertia.
Ad societatem.

Die vero Natalis domini, In iij.º
Nocturn.º dicuntur sic benedictiones.
Prima, Euangelica lectio. Secunda

Per euangelica dicta deleantur nostra delicta.
Verba sancti euangelii doceat nos christus filius dei.

Precibus et meritis beate marie semper virginis, et omnium sanctorum perducat nos dominus ad regna celorum. ℟ Amen.

Nos cum prole pia benedicat virgo maria.
Ipsa virgo virginum intercedat pro nobis ad dominum. Amen.
Per virginem matrem concedat nobis dominus salutem et pacem. Amen.



# In Aduentu

Dominica prima Aduentus
Vtrasqꝫ Vesperas, Ad laudes
Ad tertiam.

Capitulū.



Ora est iam nos de
somno surgere: nunc enim pro
pioꝛ est nostra salus quam cum
credidimus. Oratio.

Excita quæsumus domine po
tentiam tuam, et veni: ut ab im
minentibus peccatorum nostrorum
periculis te mereamur protegen
te eripi te liberante saluari. Qui
viuis et regnas, &c. Ad sextam. ca.

Nox præcessit, dies autem
appropinquauit: abiiciamus er
go opera tenebrarum, et indua
mur arma lucis. Ad nonam, ca.
Sicut in die honeste ambulem[us],
non in comessationibus et ebrie
tatibus, non in cubilibus et im
pudicitijs, non in contentione,
et æmulatione: sed induimini-

dominum Iesum christum.

Diebus ferialibus.

Ad laudes. Capitul.

Venite et ascendamus ad montem domini. et ad dominum dei iacob: et docebit nos vias suas, et ambulabimus in semitis eius, quia de sion exibit lex, et verbum domini de ierusalem, His Ferialibus Diebus, Dicuntur Preces vt habentur.

Ad Vesperas, Capitulum.

Non auferetur sceptrum de iuda, et dux de femore eius, donec veniat qui mittendus est: et ipse erit expectatio gentium.

Dicuntur Preces.

Dominica secunda. Aduentus.

Capitulum.

Quecumque scripta sunt, ad nostram doctrinam scri pta sunt: vt per patientiam, et consolationem scripturarum spem habeamus. Oratio.

Excita domine corda nostra ad preparandas vnigeniti tui vias: vt per eius aduentum purificatis tibi mentibus seruire mereamur. Qui tecum viuit. Ad sextam, Ca.

Deus autem patientie et sola tij det vobis idipsum sapere in al terutrum secundum Jesum christu:

vt vnanimes, vno ore honorificetis
deum et patrem domini nostri iesu
christi. Ad nonam. Capitulum.
Deus autem spei repleat vos
omni gaudio et pace in credendo:
vt abundetis in spe, et in virtute
spiritus sancti. Dominica tertia.
Capitulum.
Gaudete in domino semper,
iterum dico gaudete: modestia ve
stra nota sit omnibus hominibus,
dominus enim prope est. Oratio.
Aurem tuam quesumus do
mine, precibus nostris accommo
da: et mentis nostre tenebras gra
tia tue visitationis illustra. Qui

uiuis et regnas, cum deo patre in unitate spiritus. Ad sextam. Capi.

Nihil solliciti sitis, sed in omni oratione et obsecratione cum gratiarum actione, petitiones vestre innotescant apud deum.

Ad nonam. Capitulum.

Et pax dei, que exuperat omnem sensum, custodiat corda vestra et intelligentias vestras, in christo Iesu domino nostro. Feria iiij.

Quatuor tempor. Ad matut. or.

Presta quesumus omnipotens deus: ut redemptionis nostre ventura solemnitas, et presentis nobis vite subsidia conferat, et eter-

ne beatitudinis praemia largiatur. Per do. no. Jes. Ad vesperas, Oratio. In do^ca precedenti, Aurem. F^z vj. Ora.

Excita, quaesumus domine, potentiam tuam, et veni: ut hi, qui in tua pietate confidunt, ab omni citius adversitate liberentur. Qui vivis. Ad vesperas, Oratio. Aurem tuam. Sabbato

Ad matutinas, Oratio.

Deus, qui conspicis, quia ex nostra pravitate affligimur: concede propitius, ut ex tua visitatione consolemur. Qui vivis et regnas cum. Do^ca iiij. Capitulum.

Sic nos existimet homo, ut

ministros christi, et dispensatores mysteriorum dei: hic iam quaeritur inter dispensatores, ut fidelis quis inveniatur. Oratio.

Excita, quaesumus domine potentiam tuam, et veni, et magna nobis virtute succurre: ut per auxilium gratiae tuae, quod nostra peccata praepediunt, indulgentia tuae propitiationis acceleret. Qui vivis et regnas. Ad sextam, Cap.

Mihi autem pro minimo est, ut a vobis iudicer, aut ab humano die, sed neque meipsum iudico. Ad nonam, Capitul.

Itaque nolite ante tempus

iudicare; quoadusque veniat domi-
nus: qui et illuminabit abscondi-
ta tenebrarum, et manifestabit con-
silia cordium: et tunc laus erit
unicuique a deo. In vigilia Na-
tivitatis dñi. Ad laudes. Cap.
Paulus servus iesu christi,
vocatus Apostolus: segregatus in
euangelium dei. quod ante promi-
serat per prophetas suos in scriptu-
ris sanctis de filio suo, qui factus
est ei ex semine David secundum
carnem. Oratio.
Deus qui nos redemptionis
nostre annua expectatione letifi-
cas: presta, ut unigenitum tuum,

quem

quem redemptorem leti suscepimus, venientem quoque iudicem securi videamus. dominum nostrum iesum christum filium tuum. Qui tecum vivit. Ad sextam. Capitulum.

Qui praedestinatus est filius dei in virtute. secundum spiritum sanctificationis. ex resurrectione mortuorum iesu christi domini nostri. Ad nonam. Capitulum.

Per quem accepimus gratiam et apostolorum ad obediendum fidei in omnibus gentibus pro nomine eius. in quibus estis et vos vocati Iesu christi domini nostri.

Apparuit

In Natiuitate Domini.

Ad vesperas, Cap.



Apparuit benigni-tas et humanitas saluatoris nostri dei, non ex operibus iustitiae quae fecimus nos, sed secundum misericordiam suam saluos nos fecit.

Oratio.

Concede quaesumus omnipotens deus, ut nos unigeniti tui noua per carnem natiuitas liberet: quos sub peccati

iugo vetusta servitus tenet. Per eum
dem do. no. iesum. Nulla fit cōmemo.
Ad laudes. Capitulū.
Multi-fariam, multisque modis
olim deus loquens patribus in pro
phetis; novissime diebus istis lo
cutus est nobis in filio, quem con
stituit heredem universorum, per
quem fecit et secula. Ad Tertiam.
cap. Multi fariā. Ad sextā, ca.
Et tu in principio domine
terram fundasti, et opera manuū
tuarum sunt celi. Ad nonam. Cap.
Ipsi peribunt, tu autem perma
nebis: et omnes sicut vestimentum
veterascent, et velut amictum mu

tabis eos, et mutabuntur: tu autē
idem ipse es, et anni tui non defi
cient. Ad vesperas, Capitul'.
Multifariam, ut supra.
Oratio. Concede quesumus. ut sup.
In Festo S. Stephani. Oratio.

Da nobis quesumus domi
ne, imitari quod colimus,
ut discamus et inimicos diligere:
quia eius natalitia celebramus,
qui novit etiam pro suis persecu
toribus exorare dominum nostrū
Iesum christum filium tuum,
Qui tecum vivit et regnat in
unitate, etc. Ad laudes, et Ad vesperas.
Capitulū.

Stephanus autem plenus gra
tia et fortitudine, faciebat prodia,
et signa magna in populo.

Ad sextam. Capitulū.

Surrexerunt autem quidam
de synagoga, quae appellatur liber
tinorum, et cyrenensium, et ale
xandrinorum, et eorum qui erāt
a cilicia et a sia, disputantes
cum stephano: et non poterāt
resistere sapientiae, et spiritui
qui loquebatur. Ad nonā. capitu.

Positis autem genibus, cla
mavit voce magna, dicens: do
mine, ne statuas illis hoc pecca
tum: et cum hoc dixisset, obdor

minuit in domino. In festo S. Joannis Apo. et Euang. ora.

Ecclesiam tuam, quaesumus domine, benignus illustra: ut beati Joannis apostoli tui et euangelistae illuminata doctrinis, ad dona perueniat sempiterna. Per dominum nostrum Iesum christum filium. Ad laudes, et ad vesperas, Capitulum.

Qui timet deum, faciet bona: et qui continens est iustitiae apprehendet illam, et obuiabit illi quasi mater honorificata.

Ad sextam, Capitulum.

Cibauit illum pane vitae et

intellectus, et aqua sapientiae salutaris potavit illum dominus deus noster. Ad nonam, Capitul.

In medio ecclesiae aperuit os eius, et implevit illum dominus spiritu sapientiae et intellectus, et stolam gloriae induit eum.

In festo ss. Innocētiū, orā.

Deus cuius hodierna die praeconium Innocentes martyres non loquendo, sed moriendo confessi sunt: omnia in nobis vitiorum mala mortifica: ut fidem tuam, quam lingua nostra loquitur, etiā moribus vita fateatur. Per dominum no. Ad laudes et ad vesp'as, cap.

Vidi supra montem sion Agnum stantem. et cum eo centum quadraginta quatuor millia. habentes nomen eius. et nomen patris eius scriptum in frontibus suis. Ad sextam. Capitulũ.

Hi sunt qui cum mulieribus non sunt coinquinati: virgines enim sunt: hi sequuntur agnum quocumque ierit. Ad nonã. cap.

Hi empti sunt ex hominibus primitie deo et agno. et in ore ipsorum non est inventum mendatium: sine macula enim sunt ante thronum dei.

In festo S. Thome mart. Oratio.

Deus

Deus pro cuius ecclesia gloriosus pontifex Thomas gladiis impiorum occubuit: praesta quaesumus: ut omnes, qui eius implorant auxilium, petitionis suae salutarem consequantur effectum. Per dominum, etc. Capitula de communi unius martyris.

Dominica infra Oct. Nativitatis. Ad vesperas et ad laudes. Cap.

Quanto tempore heres parvulus est, nihil differt a servo, cum sit dominus omnium: sed sub tutoribus et actoribus est usque ad praefinitum tempus a patre.

Omnipotens sempiterne deus, dirige actus nostros in beneplacito tuo: ut in nomine dilecti filii tui mereamur bonis operibus abundare. Per eundem dominum nostrum Iesum. Ad sextam. Cap.

At ubi venit plenitudo temporis, misit deus filium suum, factum ex muliere, factum sub lege: ut eos qui sub lege erant, redimeret: ut adoptionem filiorum reciperemus. Ad nonam. Cap.

Itaque iam non est servus, sed filius: quod si filius, et heres per deum. In Festo S. Silvestri Confessoris, pontificis.

## In Circumcisione Domini.

Ad vesperas, Ad laudes. Et ad tertiam, cap.

R.A.G 1617

Apparuit gratia dei salvatoris nostri omnibus hominibus, erudiens nos, ut abnegantes impietatem, secularia desideria; sobrie, et iuste, et pie vivamus in hoc seculo.

Oratio.

Deus qui salutis eterne, beate marie virginitate fecunda, humano generi premia prestitisti: tribue quesumus, ut ipsam pro nobis intercedere sentiamus, per quam meruimus an

ctorem vite suscipere dominum no
strum iesum christum filium tuũ
Qui tecum vivit et regnat in uni
tate. Ad sextam. ca. Et Te in prin
cipio. Ad nonam. cap. Ipsi peribũt.
quere in Nativitate Domini. fo.

In Octava Sancti Ste
phani, Oratio

Omnipotens sempiterne de
us, qui primitias martyrum in be
ati levite stephani sanguine dedica
sti: tribue quesumus, ut pro nobis
intercessor existat, qui pro suis etiã
persecutoribus exoravit, dominum
nostrum Iesum christum filium
tuum. Qui tecum vivit et regnat.

In festo Sanctissi-
mae Virginis Geno-
uefae Patronae nostrae,
Ad vs. et laudes, capi.



ui gloriatur, in
domino glorietur: non enim qui
seipsum commendat, ille proba-
tus est, sed quem deus commen-
dat. Oratio.

Beatae genouefae natali-
tia ueneranda, ecclesia
tua, domine, deuota sus-
cipiat, et fiat magnae glorifica-
tionis amore deuotior, et tanta fi-
dei proficiat exemplo. Per domi-
num nostrum, Ad sextam, cap.

Emulor enim vos dei emulatione: despondi enim vos uni viro virginem castam exhibere christo.

Ad nonam. Capitulum.

Quam pulchra est casta generatio cum claritate: immortalis est enim memoria illius: quoniam apud deum nota est, et apud homines. In vigilia Epiphanie Quando venerit in Dominica, omnia fient ut in dominica infra octavam. Nativitatis. domini.

In epiphania dñi. Ad utrasque vesp̄s. Ad laudes.

Surge illuminare ierusalem, quia venit lumen

tuum, et gloria domini super te orta est. Oratio.

Deus, qui hodierna die vnigenitum tuum gentibus stella duce reuelasti: concede propitius, vt qui iam te ex fide cognouimus, vsque ad contemplandam speciem tue celsitudinis perducamur. Per eundem dominum nostrum Jesum. Nulla fit commemoratio.

Ad sextam, Capitul'.

Leua in circuitu oculos tuos, et vide: omnes isti congregati sunt, venerunt tibi: filij tui de longe venient, et filie tue de latere surgent. Ad nonam. Capitul'.

Omnes de saba venient, aurum et thus deferentes, et laudem domino annunciantes. In octava Sancte Genovefe Omnia sicut in die. Commemoratio S^ti Guillermi Confess. Oratio. Exaudi quesumus, ut in Communi Confess. pontificum. fo.

Dominica Infra octavam, Epiphanie. Capitul

Obsecro vos per misericordiam dei, ut exhibeatis corpora vestra hostiam viventem, sanctam, deo placentem, rationabile obsequium vestrum.

Oratio.

Vota, quesumus domine, supplicantis populi, celesti pietate pro

sequere : vt et quae agenda sunt, vide
ant, et ad implenda quae viderint,
conualescant. Per dominum no
strum Jesum christum. etc.

Ad sextam, Capitulum.

Dico enim per gratiam quae
data est mihi, omnibus qui sunt in
ter vos, non plus sapere quam opor
tet sapere, sed sapere ad sobrietatem.

Ad nonam, Capitulum.

Sicut enim in vno corpore mul
ta membra habemus, omnia autem
membra non eundem actum habent;
ita multi vnum corpus sumus in
christo, singuli autem alter alterius
membra, in christo iesu domino nostro.

Domine cuius.

In octava epiphaniæ. Oratio.

D Eus, cuius unigenitus in substantia nostræ carnis apparuit: præsta quæsumus, ut per eum, quem similem nobis foris agnovimus, intus reformari mereamur. Qui tecum vivit et regnat in unitate spiritus.

Dñica ij, post epiphaniā. Orō.

O Mnipotens sempiterne deus, qui cælestia simul et terrena moderaris: supplicationes populi tui clementer exaudi: et pacem tuam nostris concede temporibus. Per dominum nostrum iesum christum.

Dominica iij. Oratio.

O Mnipotens sempiterne deus,

infirmitatem nostram propitius respice: atque ad protegendum nos dexteram tuae maiestatis extende. Per dominum nostrum iesum. etc.

Dominica iiij. Oratio.

DEus, qui nos in tantis periculis constitutos, pro humana scis fragilitate non posse subsistere: da nobis salutem mentis et corporis: vt ea, quae pro peccatis nostris patimur, te adiuuante vincamus. Per dominum nostrum

Dominica Quinta. Oratio.

FAmiliam tuam, quaesumus domine, continua pietate custodi: vt quae in sola spe gratiae caelestis

innitatur. tua semper protectione mu
niatur. Per dominum nostrum ie
sum xpm. Dca sexta, Oratio.
Praesta quaesumus, omnipo
tens deus: ut semper rationa
bilia meditantes: quae tibi sunt pla
cita, et dictis exequamur, et factis.
Per dominum nostrum iesum xpm.
Dca in septuagesima, Capitu.
Nescitis quod ii qui in stadio
currunt, omnes quidem currunt,
sed unus accipit brauium? Sic curri
te, ut comprehendatis. Oratio.
Preces populi tui, quaesumus
domine, clementer exaudi, ut
qui iuste pro peccatis nostris affli

gimur

gimur: pro tui nominis gloria mi
sericorditer liberemur. Per dominū.
nostrum iesum christum filium.
O Ad sextam. Capitul'.
mnis autem, qui in agone
contendit, ab omnibus se abstinet:
et illi quidem ut corruptibilem co
ronam accipiant, nos autem incor
ptam. Ad nonam, Capitul'.
B ibebant autem de spiritali,
consequente eos, petra: petra autem
erat christus. Dominica in
Sexagesima, Capitulū.
L ibenter sufferetis insipien
tes, cum sitis ipsi sapientes: susti
netis enim si quis vos in servitute

redigit, si quis deuorat, si quis acci
pit, si quis extollitur, si quis in fa
ciem vos cedit, Oratio.

Deus qui conspicis, quia ex
nulla nostra actione confidimus:
concede propitius: vt contra aduer
sa omnia, doctoris gentium prote
ctione muniamur. Per dominū
nostrum. Ad sextam, Capitulū.

Ter virgis cesus sum, semel
lapidatus sum, ter naufragi
um feci, nocte et die in profundo
maris fui. Ad nonam. capitul.

Libenter igitur gloriabor in
infirmitatibus meis, vt in
habitet in me virtus christi.

Dominica in Quinquagesima. Ad Tertiam. Capitulum.

**S**I linguis hominum loquar et angelorum, charitatem autem non habeam, factus sum velut aes sonans, aut cymbalum tinniens. Oratio.

**P**Reces nostras, quaesumus domine, clementer exaudi: atque a peccatorum nostrorum vinculis absolutos, ab omni nos adversitate custodi. Per dominum nostrum Iesum christum filium tuum. Qui tecum vivit et regnat.

Ad Sextam. Capitulum.

**C**haritas numquam excidit:

siue prophetie euacuabuntur, siue lingue cessabunt, siue scientia destruetur: ex parte enim cognoscimus, et ex parte prophetamus.

Ad nonam, Capitulum.

Nunc autem manent, fides, spes, charitas; tria hec: maior autem horum est charitas.

Feria iiij Cinerum, dicuntur Preces ad omnes, horas per totam Quadragesimam vt suo loco habentur.

Ad matutinas, Oratio.

Presta domine fidelibus tuis; vt ieiuniorum veneranda solemnia, et congrua pietate suscipiant, et secura deuotione percurrant. Per

dominum.

Ad vesperas. Oratio.

Inclinantes se, domine maiestati tuae, propitiatus intende: ut qui divino munere sunt refecti, caelestibus semper nutriantur auxiliis. Per do. no. Iesum christum.

Feria quinta, Oratio.

Deus, qui culpa offenderis, poenitentia placaris: preces populi tui supplicantis propitius respice: et flagella tuae iracundiae, quae pro peccatis nostris meremur, averte. Per dominum no. Iesum christum.

Ad vesperas, Oratio,

Parce domine, parce populo tuo: ut dignis flagellationibus

castigatus. in tua miseratione resspiret. Per dominum no. iesum. ec.

Feria sexta. Oratio.

Inchoata ieiunia, quesumus domine, benigno fauore prosequere: ut obseruantiam, quam corporaliter exhibemus: mentibus etiam sinceris exercere valeamus. Per dominum no. iesum christũ. ec.

Ad vesperas. Oratio.

Tuere domine populum tuum. et ab omnibus peccatis clementer emunda: quia ei nulla nocebit aduersitas. si nulla ei dominetur iniquitas. Per dominum nostrũ iesum christum filium tuum. ec.

Sabbato. Oratio.

A Desto domine, supplicatio nibus nostris, et concede: ut hoc so lemne ieiunium, quod animabus cor poribusque curandis salubriter insti tutum est, deuoto seruitio celebrem?. Per dominum nostrum iesum xpm filium tuum, Qui, ec. Dominica prima i Quadragesime. cap.

H Ortamur vos, ne in vacu um gratiam dei recipiatis: ait eni: tempore accepto exaudiui te, et in die salutis adiuui te. Oratio.

D Eus, qui ecclesiam tuam annua quadragesimali ob seruatione purificas: presta fam

lie tue: ut quod a te obtinere absti
nendo nititur, hoc bonis operibus
exequatur. Per dominum nostrū
iesum xp̄m. Ad sextam. Capitul.

Ecce nunc tempus acceptabi
le, ecce nunc dies salutis: nemini
dantes ullam offensionem, ut non
vituperetur ministerium nostrum.

Ad nonam. Capitul.

Ut castigati, et non mortifi
cati: quasi tristes, semper autem gau
dentes: sicut egentes, multos autē
locupletantes: tamquam nihil ha
bentes, et omnia possidentes.

Dieb⁹ ferialib⁹. Ad laudes. cap.

Clama, ne cesses, quasi tuba
exalta vocem tuam: et annuntia

populo meo scelera eorum, et domui iacob peccata eorum. Feria ij. Ora.

Converte nos deus salutaris noster: et ut nobis ieiunium Quadragesimale proficiat, mentes nostras caelestibus instrue disciplinis. Per dominum nostrum iesu.

Ad vesperas. Capitulum.

Inter vestibulum et altare plorabunt sacerdotes ministri domini, et dicent: parce domine, parce populo tuo; et ne des hereditatem tuam in opprobrium, ut dominentur eis nationes. Oratio.

Absolve, quaesumus domine, nostrorum vincula pec-

catorum : et quidquid pro eis meremur,
propitiatus averte. Per dominum
no. Iesum, Feria tertia, Oratio.
Respice domine familiam tuã,
et presta : ut apud te mens no
stra tuo desiderio fulgeat, que se car
nis maceratione castigat. Per do
minum nostrum Iesum. christum.
filium tuũ. Ad vesperas, Oratio.
Ascendant ad te domine preces
nostre : et ab ecclesia tua cun
ctam repelle nequitiam. Per domi
num nostrum. Feria Quarta.
Quatuor temporum, Oratio.
Preces nostras, quesumus do
mine, clementer exaudi : et con

tra cuncta nobis aduersantia dextram
tuae maiestatis extende. Per dominum
nostrum. etc. Ad vesperas, Oratio.
Mentes nostras, quaesumus domine, lumine tuae claritatis
illustra: ut videre possimus, quae
agenda sunt, et quae recta sunt, agere valeamus. Per dominum nostrum
iesum. etc. Feria quinta, Oratio.
Deuotionem populi tui, quaesumus domine, benignus intende: ut qui per abstinentiam macerantur in corpore, per fructum boni operis reficiantur in mente. Per dominum nostrum iesum christum filium tuum. etc. Ad vesperas, Oratio.

DA quesumus domine, populus christianis, et quae profitentur agnoscere: et caeleste munus diligere, quod frequentant. Per dominum nostrum.

Feria Sexta, Quatuor temporum, Oratio.

ESto domine propitius plebi tuae: et quam tibi facis esse devotam, benigno refove miseratus auxilio. Per dominum no. Iesum.

Ad vesperas, Oratio.

EXaudi nos misericors deus: et mentibus nostris gratiae tuae lumen ostende. Per dominum no. &c.

Sabbato, ora.

POpulum tuum, quaesumus

domine, propitius respice: atque ab
eo flagella tue iracundie clementer
auerte. Per dominum nostrum.
iesum christum. etc. Dominica ii.
In Quadragesima. Cap.
R Ogamus vos, et obsecramus
in domino iesu: ut quem admodum
accepistis a nobis quomodo vos o
porteat ambulare, et placere deo: sic
et ambuletis, ut abundetis magis.
Oratio.
D Eus, qui conspicis omni nos
virtute destitui: interius exteriusque
custodi: ut ab omnibus aduersitati
bus muniamur in corpore, et a pra
uis cogitationibus mundemur in

mente

mente. Per dominum nostrum ie
sum christum. Ad sextam. Cap.
Hec est enim voluntas dei,
sanctificatio vestra: ut abstine
atis vos a fornicatione, ut sciat unus
quisque vestrum vas suum possidere
in sanctificatione et honore.
Ad nonam. capit.
Non enim vocavit nos deus
in immunditiam, sed in sanctifica
tionem, in christo iesu domino no
stro. Feria secunda. Oratio.
Praesta quaesumus omnipo
tens deus: ut familia tua,
quae se, affligendo carnem, ab alimen
tis abstinet: sectando iustitiam, a



culpa

culpa ieiunet. Per dominum no.

Ad Vesperas, Oratio.

Adesto supplicationibus nostris omnipotens deus: et quibus fiduciam sperandae pietatis indulges: consuetae misericordiae tribue benignus effectum, Per dominum nostrum,

Feria Tertia. Oratio.

Perfice, quaesumus domine, benignus in nobis observantiae sanctae subsidium: ut quae te auctore facienda cognovimus, te operante impleamus, Per dominum nostrum.

Ad vesperas, Oratio.

Propitiare domine supplicationibus nostris: et animarum no-

strarum medere languoribus: ut remissione percepta, in tua semper benedictione lætemur, Per dominum no.

Feria Quarta. Oratio.

Populum tuum, quæsumus domine, propitius respice: et quos ab escis carnalibus præcipis abstinere: a noxijs quoque vitijs cessare concede. Per dominum nostrum iesũ.

Ad Vesperas. Oratio

Deus innocentiæ restitutor & amator: dirige ad te tuorum corda seruorum: ut spiritus tui feruore concepto, et in fide inueniantur stabiles, et in opere efficaces, Per dominũ no. Iesum christũ filiũ tuum, Qui.

P Feria Quinta. Oratio.

Resta nobis, quaesumus domine, auxilium gratiae tuae: ut ieiuniis et orationibus convenienter intenti, liberemur ab hostibus mentis et corporis, Per dominum no.

A Ad vesperas. Oratio.

Adesto domine famulis tuis, et perpetuam benignitatem largire poscentibus: ut iis, qui te auctore et gubernatore gloriantur, et congregata restaures, et restaurata conserves, Per dominum nostrum.

D Feria Sexta, Oratio.

A quaesumus omnipotens deus: ut sacro nos purificante ie-

nimio, sinceris mentibus ad sancta ventura facias pervenire. Per dominum nostrum Jesum christum.

Ad vesperas. oratio.

Da quaesumus domine populo tuo salutem mentis et corporis: ut bonis operibus inhaerendo, tue semper virtutis mereatur protectione defendi. Per dominum nostrum.

Sabbato. ora.

Da quaesumus domine nostris effectum ieiuniis salutarem: ut castigatio carnis assumpta, ad nostrarum vegetationem transeat animarum. Per dominum nostrum Jesum christum filium tuum Qui tecum, et.

## Dominica. Tertia.

In Quadragesima. Oratio.

Estote imitatores dei. sicut filii charissimi: et ambulate in dilectione, sicut et christus dilexit nos et tradidit semetipsum pro nobis oblationem et hostiam deo in odorem suavitatis. Oratio.

Quesumus omnipotens deus, vota humilium respice: atque ad defensionem nostram, dexteram tue maiestatis extende. Per.

Ad sextam, Capitulum.

Hoc enim scitote intelligentes, quod omnis fornicator, aut immundus, aut avarus, quod est idolorum servitus, non habet here

ditatem in regno christi et dei.

Ad nonam, capit.

Eratis enim aliquando tenebrae, nunc autem lux in domino: ut filii lucis ambulate: fructus enim lucis est in omni bonitate, et iustitia, et veritate.

Feria Secunda. oratio.

Cordibus nostris, quaesumus domine, gratiam tuam benignus infunde: ut sicut ab escis corporalibus abstinemus: ita sensus quoque nostros a noxiis retrahamus excessibus. Per dominum nostrum.

Ad Vesperas. Oratio.

Subveniat nobis domine

misericordia tua: vt ab imminen
tibus peccatorum nostrorum pericu
lis, te mereamur protegente eripi
te liberante saluari. Per dominū
nostrum iesum christum filium.

Feria Tertia. Oratio.

Exaudi nos omnipotens et
misericors deus: et continentie sa
lutaris propitius nobis dona con
cede. Per dominum nostrum. etc.

Ad vesperas. Oratio.

Tua nos domine protectione
defende: et ab omni semper iniqui
tate custodi. Per dominum no.

Feria Quarta. oratio.

Grata nobis, quesumus do

mine. ut salutaribus ieiuniis eru-
diti: a noxiis quoque vitiis absti-
nentes, propitiationem tuam faci-
lius impetremus. Per dominum no.

Ad vesperas. Oratio.

Concede nobis, quesumus
omnipotens deus: ut qui protectionis
tue gratiam querimus: liberati a
malis omnibus, secura tibi mente
serviamus. Per dominum nostrum.

Feria Quinta. oratio.

Da nobis quesumus domine
rex eterne cunctorum: ut sacro nos
purificante ieiunio, sinceris quoque
mentibus ad tua sancta ventura fa-
cias pervenire. Per dominum no.

Ad vesperas. Oratio.

Subiectum tibi populum, quaesumus domine, propitiatio caelestis amplificet: et tuis semper faciat servire mandatis. Per dominum no

Feria sexta. Oratio.

Ieiunia nostra quaesumus domine, benigno favore prosequere: ut sicut ab alimentis abstinemus in corpore: ita a vitijs ieiunemus in mente. Per dominum nostr.

Ad vesperas. Oratio.

Praesta quaesumus omnipotens deus: ut qui in tua protectione confidimus: cuncta nobis adversantia te adiuvante vincamus. Per do.

Sabbato. Oratio.

PResta quæsumus, omnipotens deus: ut qui se, affligendo carnem, ab alimentis abstinent: sectando iustitiam a culpa ieiunent. Per dominum nostrum Iesum christum.

Dñca iiij. in Quadrage. Epla.

SCriptum est, quoniam Abraham duos filios habuit: unum de ancilla, et unum de libera: sed qui de ancilla, secundum carnem natus est: qui autem de libera, per repromissionem: quæ sunt per allegoriam dicta. Oratio.

COncede quæsumus, omnipotens deus: ut qui ex merito nostræ actionis affligimur, tuæ gra-

tue consolatione respiremus. Per
dominum nostrum iesum christũ.

Ad sextam. capitulũ.

Letare sterilis que non paris:
erumpe et clama que non parturis:
quia multi filii deserte, magis quã
eius que habet virum.

Ad nonam. capitu.

Itaque fratres, non sumus
ancille filii, sed libere: qua libertate
christus nos liberavit.

Feria secunda, ora.

Presta quesumus omnipo
tens deus: ut observationes sacras
annua devotione recolentes, et cor
pore tibi placeamus, et mente. Per

dominum nostrum Iesum christum.

D Ad vesperas. Oratio.

Eprecationem nostram, quae sumus domine, benignus exaudi: et quibus supplicandi praestas effectum, tribue defensionis auxilium. Per dominum nostrum iesum christum.

S Feria Tertia. oratio.

Acrae nobis quaesumus domine observationis ieiunia, et piae conversationis augmentum, et tuae propitiationis continuum praestent auxilium. Per dominum nostrum iesum xpm.

M Ad vesperas. Oratio.

Iserere domine populo tuo: et continuis tribulationibus labo

rantem, propitius respirare concede.
Per dominum nostrum iesum xpm.

Feria Quinta. Oratio.

Deus, qui et iustis premia meritorum, et peccatoribus per ieiunium veniam prebes: miserere supplicibus tuis: ut reatus nostri confessio indulgentiam percipere valeat delictorum.
Per dominum nostrum iesum. etc.

Ad vesperas. Oratio.

Pateant aures misericordiae tuae domine precibus supplicantium: et ut petentibus desiderata concedas, fac eos quae tibi sunt placita, postulare. Per dominum nostrum iesum christum filium tuum, Qui tecum.

P Feria Quinta, oratio.
Praesta quaesumus omnipotens deus: ut quos ieiunia votiva castigāt, ipsa quoque devotio sancta laetificet: ut terrenis affectibus mitigatis, facilius caelestia capiamus. Per dominum. Ad vesperas, Oratio.
Populi tui deus institutor et rector, peccata, quibus impugnatur, expelle: ut semper tibi placitus, et tuo munimine sit securus. Per dominum nostrum Iesum.

D Feria Sexta, oratio.
Deus, qui ineffabilibus mūdum renovas sacramentis: praesta quaesumus, ut ecclesia tua et aeternis

proficiat institutis, et temporalibus non destituatur auxiliis. Per domi num nostrum Iesum christum filiu.

Ad vesperas. Oratio.

Da quesumus omnipotens deus: ut qui infirmitatis nostre con scij, de tua virtute confidimus: sub tua semper pietate gaudeamus. Per dominum nostrū. Sabbato.

Fiat domine quesumus per gratiam tuam fructuosus nostre devotionis affectus: quia tunc nobis proderunt suscepta ie iunia, si tue sint placita pietati. Per dominum. Dominica.

De passione. Capitulum.

christus

Christus assistens pontifex futurorum bonorum, per amplius et perfectius tabernaculum non manu factum, id est, non huius creationis: neque per sanguinem hircorum, aut vitulorum, sed per proprium sanguinem introivit semel in sancta, eterna redemptione inventa.

Oratio.

Quesumus omnipotens deus, familiam tuam propitius respice: ut te largiente, regatur in corpore: et te servante, custodiatur in mente. Per dominum nostrum iesum.

Ad Sextam, Oratio.

Si enim sanguis hircorum

et taurorum, et cinis vitulæ as
persus inquinatos sanctificat ad
emundationem carnis: quanto ma
gis sanguis christi. qui per spiritũ
sanctum semet ipsum obtulit im
maculatum deo, emundabit con
scientiam nostram ab operibus
mortuis. ad serviendum deo viventi.

Ad nonam. Capitul.

Et ideo novi testamenti me
diator est: ut, morte intercedente, in
redemptionem earum prævaricatio
num, quæ erant sub priori testamẽ
to, repromissionem accipiant. qui
vocati sunt. æternæ hereditatis. in
christo Jesu domino nostro.

Ad laudes. Capitul.

Venite, mittamus lignum in panem eius, et eradamus eum de terra viventium, et nomen eius non memoretur amplius.

Ad vesperas, Capitulū.

Tu autem domine sabaoth, qui iudicas iuste, et probas renes et corda, videam ultionem tuam ex eis: tibi enim revelavi causam meam, domine deus meus.

Feria secunda, oratio.

Sanctifica, quaesumus domine nostra ieiunia: et cunctarum nobis indulgentiam propitius largire culparum. Per dominum :·

D Ad vesperas, Oratio.
A quaesumus domine po
pulo tuo salutem mentis et corpo
ris: ut bonis operibus inhaerendo, tua
semper mereatur protectione defendi.
Per dominum no. Iesum christum.
N Feria Tertia, Oratio.
Ostra tibi domine quaesumus
sint accepta ieiunia: quae nos expi
ando, gratia tua dignos efficiant,
et ad remedia perducant aeterna.
Per dominum. Ad vesperas, oratio.
D A nobis, quaesumus domine,
perseverantem in tua volun
tate famulatum: ut in diebus no
stris et merito et numero populus

tibi fervens augeatur. Per domi
num no. Feria. Quarta, Oratio.
Sanctificato hoc ieiunio deus,
tuorum corda fidelium mise
rator illustra: et quibus devotio
nis praestas affectum, praebe sup
plicantibus pium benignus au
ditum. Per dominum nostrum.
Ad vesperas. oratio
Adesto supplicationibus no
stris omnipotens deus: et quibus
fiduciam sperandae pietatis indul
ges: consuetae misericordiae tribue
benignus effectum. Per dominum
nostrum iesum christum filium.
Feria Quinta, Oratio.

P Rasta quaesumus omnipo-
tens deus: ut dignitas con-
ditionis humane per immoderan-
tiam sauciata, medicinalis parsi-
monie studio reformetur. Per do-
minum. Ad Vesperas. Oratio.

E Sto. quaesumus domine,
propitius plebi tue: ut que
tibi non placent, respuentes: tuorum
potius repleantur delectationibus
mandatorum. Per dominum.

Feria Sexta. Oratio.

C Ordibus nostris, quaesumus
domine, gratiam tuam benignus
infunde: ut peccata nostra castiga-
tione voluntaria cohibentes, tem-

poraliter potius maceremur, quam suppliciis deputemur aeternis. Per dominum nostrum Iesum xpm. &c.

Ad Vesperas, oratio.

Concede quaesumus omnipotens deus: ut qui protectionis tuae gratiam quaerimus, liberati a malis omnibus: secura tibi mente serviamus. Per dominum nostrum Iesum christum. &c.

Sabbato, oratio.

Proficiat, quaesumus domine, plebs tibi dicata piae devotionis affectu: ut sacris actionibus erudita, quanto maiestati tuae fit gratior, tanto donis potioribus augeatur. Per dominum nostrum iesum &c.

Dominica in palmis
Capitulum.

Hoc sentite in vobis, quod et in christo iesu: qui cum in forma dei esset, non rapinam arbitratus est esse se aequalem deo: sed semetipsum exinanivit, formam servi accipiens, in similitudinem hominum factus, et habitu inventus ut homo.

Oratio.

Omnipotens sempiterne deus, qui humano generi, ad imitandum humilitatis exemplum, Salvatorem nostrum carnem sumere, et crucem subire fecisti; concede propitius: ut et patientiae ipsius habere documen-

ta, et resurrectionis consortia mere-
amur. Per eundem do. no. ie.

Ad Sextam. Capitulũ.

HUmiliavit semetipsum fact'
obediens usque ad mortem, mortem
autem crucis: propter quod et deus
exaltavit illum, et donavit illi no
men, quod est super omne nomen.

Ad nonam. capit'

IN nomine Iesu omne genu
flectatur, celestium, terrestrium, et
infernorum: et omnis lingua con
fiteatur, quia dominus noster ies'
christus in gloria est dei patris.

Feria Secunda. Oratio.

DA quesumus omnipotens-

deus: ut qui in tot adversis ex nostra infirmitate deficimus: intercedente unigeniti filij tui passione respiremus. Qui tecum vivit et regnat.

Ad vesperas. Oratio.

Adiuva nos deus salutaris noster: et ad beneficia recolenda, quibus nos instaurare dignatus es, tribue venire gaudentes. Per dominum.

Feria Tertia. Oratio.

Omnipotens sempiterne deus, da nobis ita dominice passionis sacramenta peragere: ut indulgentiam percipere mereamur. Per eundem dominum nostrum Iesum christum.

Ad vesperas. Oratio.

Tua nos misericordia deus, et ab omni surreptione vetustatis expurget: et capaces sancte novitatis efficiat. Per dominum nostrum.

Feria Quarta. oratio

Praesta quaesumus omnipotens deus: ut qui nostris excessibus incessanter affligimur: per unigeniti filij tui passionem liberemur. Qui tecum vivit et regnat. etc.

Ad Vesperas. oratio.

Respice, quaesumus domine, super hanc familiam tuam, pro qua dominus noster Iesus christus non dubitavit manibus tradi nocentium, et crucis subire tormentum. Qui tecum.

Non dicitur. Dominus vobiscũ. nec, Benedicamus dño. Hec oratio deinceps dicetur ad omnes et Horas usque Ad nonam Sabbati inclusive.

Sabbato. Sancto. Ad Vesperas, Oratio.

Spiritum nobis domine: tue charitatis infunde: ut quos sacramentis paschalibus satiasti: tua facias pietate concordes. Per dominum nostrum nostrum Iesum christum filium tuum. Qui tecum vivit et regnat in unitate eiusdem spiritus sancti.



Dominica. Resurrectionis.

Oratio.

Deus, qui hodierna die per unigenitum tuum aeternitatis nobis aditum devicta morte reserasti: vota nostra, quae praeveniendo aspiras, etiam adiuvando prosequere. Per eundem dominum nostrum Iesum christum.

Ad processionem mane. Oratio.

Praesta quaesumus omnipotens deus, ut qui gratiam dominicae resurrectionis agnoscimus: ipsi per amorem spiritus a morte

anime resurgamus. Per eundem
dominum nostrum iesum xpm.
Ad vesperas, Ad crucem, ora.
P. Resta quesumus omnipotens
deus: ut qui resurrectionis domini=
ce solemnia colimus, ereptionis =
nostre suscipere letitiam mereamur.
Per eundem dominum nostrum:
Iesum christum. Ad fontes, ora.
P. Resta quesumus, Ut supra ad=
processionem. mane.
Feria secunda. Oratio.
D Eus qui solemnitate pas=
cali, mundo remedia contulisti:
populum tuum quesumus celesti=
dono prosequere: ut et perfectam =

libertatem consequi mereatur, et ad
vitam proficiat sempiternam.
Per dominum nostrum iesum,

Ad fontes, oratio.

Concede quesumus omnipotens deus: ut festa paschalia que
venerando colimus etiam vivendo
teneamus. Per dominum nostrum.

Ad crucem. Oratio.

Deus qui populum tuum
de hostis callidi virtute liberasti,
preces eius misericorditer respice,
et aduersantes ei tua virtute prosterne. Per dominum nostrum.

Feria tertia, oratio.

Deus qui ecclesiam tuam

nouo semper foetu multiplicas: concede famulis tuis, ut sacramentum vivendo teneant, quod fide perceperunt. Per dominum nostrum, etc.

Ad fontes. Oratio

Praesta quaesumus omnipotens deus, ut per haec paschalia festa, quae colimus devoti in tua semper laude vivamus. Per dominum.

Ad crucem. Ora.

Deus qui conspicis familiam tuam omni humana virtute destitui; paschali interveniente festivitate, tui eam brachii protectione custodi. Per dominum nostrum Iesum christum.

Feria Quarta. Oratio.

Deus qui nos

Deus qui nos resurrectionis dominice annua solemnitate letificas: concede propitius: ut per temporalia festa que agimus peruenire ad gaudia eterna mereamur. Per dominum nostrum Iesum. etc.

Ad fontes. Oratio.

Deus qui nos per paschalia festa letificas: concede propitius, ut ea que deuote agimus, te adiuuante fideliter teneamus. Per dominum no. iesum christum. etc.

Ad crucem. Oratio.

Tribue quesumus omnipotens deus, ut illuc tendat christiane deuotionis affectus: quo tecum

est

est nostra substantia Jesus christus filius tuus dominus noster, Qui tecum viuit et regnat.

Feria Quinta. oratio

Deus, qui diuersitatem gentium in confessione tui nominis adunasti, da vt renatis fonte baptismatis vna sit fides mentium, et pietas actionum. Per dominum no. Ad fontes. ora.

Da quesumus omnipotens deus, vt ecclesia tua et suorum firmitate membrorum, et noua semper fecunditate letetur. Per dominum nostrum iesum christum. Ad crucem. oratio.

Multiplica quesumus domine fidem populi tui, ut cuius per te sumpsit initium, per te consequatur augmentum. Per dominum no.

Feria sexta. Oratio

Omnipotens sempiterne deus qui paschale sacramentum in reconciliationis humane federe contulisti: da mentibus nostris, ut quod professione celebramus, imitemur effectu. Per dominum nostrum.

Ad fontes. Oratio.

Adesto quesumus domine familie tue et dignanter impende, ut quibus fidei gratiam contulisti, et coronam largiaris eternam.



Per dominum nostrum Iesum. &c.

Ad crucem. Oratio.

Deus qui omnes in christo renatos genus regium et sacerdotale fecisti, da nobis et velle et posse que precipis: ut populo ad eternitatem vocato, una sit fides mentium et pietas actionum. Per eundem dominum.

Sabbato. Oratio.

Concede quesumus omnipotens deus: ut qui festa paschalia venerando egimus: per hec contingere ad gaudia eterna mereamur. Per dominum nostrum Iesum.

Ad vesperas, oratio.

Presta quesumus, omnipo-

tens deus. vt qui paschalia festa pe-
regimus: hec te largiente, moribus-
et vita teneamus. Per dominum
nostrum. In Octaua paschæ.
Oratio. dicitur sicut in die.

Dominica in albis. Capit.
Carissimi, omne quod na-
tum est ex deo, vincit mun-
dum: et hec est victoria que vincit-
mundum fides nostra. ℟. Deo gratias.
Presta quesumus. Vt supra.

Ad Sextam. Capitul.
Quis est autem qui vincit-
mundum, nisi qui credit-
quoniam iesus ait filius dei: hic est
qui venit per aquam et sanguinem.

iesus christus: non in aqua solu͂, sed in aqua et sanguine. Deo.

Ad nonam. Capit.

Si testimonium hominum accipimus, testimonium dei maius est: quoniam hoc est testimonium dei quod maius est, quoniam testificatus est de filio suo: qui credit in filium dei, habet testimonium dei in se. Priuatis diebus, Ad laudes, et Ad vesperas. Capitulum.

Christus resurgens ex mortuis iam non moritur, mors illi ultra non dominabitur: quod enim mortuus est peccato, mortuus est semel: quod autem viuit viuit deo.

Dominica secunda. Capi.

Carissimi, christus passus est pro nobis, vobis relinquens exemplum, ut sequamini vestigia eius: qui peccatum non fecit, nec inuentus est dolus in ore eius. Oratio.

Deus, qui in filii tui humilitate iacentem mundum erexisti: fidelibus tuis perpetuam concede letitiam: ut quos perpetue mortis eripuisti casibus, gaudiis facias sempiternis perfrui. Per eundem dominum nostrum Iesum christum.

Ad sextam. Capitulum.

Eratis autem sicut oues errantes: qui peccata nostra ipse pertu

lit in corpore suo super lignum: ut peccatis mortui, iustitiæ vivamus: cuius livore sanati sumus.

Ad nonam. Capit.

Erratis enim sicut oves errantes: sed conversi estis nunc ad pastorem, et episcopum animarum vestrarum.

Dominica tertia.

Ad vesperas. capi.

Carissimi, Obsecro vos tanquam advenas et peregrinos abstinere vos a carnalibus desideriis, quæ militant adversus animam.

Oratio.

Deus qui errantibus, ut in viam possint redire iustitiæ

veritatis tuae lumen ostendis: da =
cunctis qui christiana professione
censentur, et illa respuere, quae huic
inimica sunt nomini: et ea quae =
sunt apta, sectari. Per dominu͞m
nostrum. Ad sextam, ca.

Subiecti igitur estote omni
humanae creaturae propter
deum, sive regi quasi praecellenti,
sive ducibus, tamquam ab eo mis=
sis ad vindictam malefactorum,
laudem vero bonorum.

Ad nonam, capi.

Servi, subditi estote in om=
ni timore dominis, non tantum
bonis et modestis, sed etiam dysco

tis: hec est enim gratia in christo iesu domino nostro.

Dominica Quarta, Capit.

Carissimi, Omne datum optimum, et omne donum perfectum desursum est, descendens a patre luminum, apud quem non est transmutatio, nec vicissitudinis obumbratio. Oratio.

Deus, qui fidelium mentes unius efficis voluntatis: da populis tuis id amare quod praecipis, id desiderare quod promittis: ut inter mundanas varietates ibi nostra fixa sint corda, ubi vera sunt gaudia. Per dominum nostrum.

Ad Sextam, capitul.

SCitis fratres mei dilectissimi: sit autem omnis homo velox ad audiendum, tardus autem ad loquendum, et tardus ad iram: ira enim viri, iustitiam dei non operatur.

Ad nonam. Capitul.

PRopter quod abiicientes omnem immunditiam, et abundantiam malitie, in mansuetudine suscipite insitum verbum, quod potest saluare animas vestras.

Dominica Quinta. Capitu.

CHarissimi, estote factores verbi, et non auditores tantum: fallentes vosmetipsos: quia siquis

auditor est verbi, et non factor: hic comparabitur viro consideranti vultum nativitatis suae in speculo: consideravit enim se, et abiit, et statim oblitus est qualis fuerit. ℟ Deo.

Oratio.

Deus, a quo bona cuncta procedunt: largire supplicibus tuis: ut cogitemus te inspirante quae recta sunt, et te gubernante eadem faciamus. Per dominum nostrum.

Ad sextam, Capit.

Qui autem perspexerit in legem perfectae libertatis, et permanserit in ea, non auditor obliviosus factus, sed factor operis: hic beatus in facto suo

erit. ℟ Deo. Ad Nonam. capi.

Religio munda et immacula ta apud deum et patrem hec est: visitare pupillos et viduas in tribulatione eorum, et immacula tum se custodire ab hoc seculo.

Feria ij. Rogationum. Ad Presta quesumus, matut. ora. omnipotens deus: ut qui in afflictione nostra de tua pietate confidimus: contra adversa omnia tua semper protectione gaudeamus. Per dominum nostrum Ie. Ad vesperas. ora.

Deus a quo bona cuncta. vt supra, fo. Feria tertia et Quarta, Oratio de Dominica: —





In Ascensione Domini, Ad Vesperas, Capitu.

[P]Rimum quidem sermonem feci de omnibus, o theophile, quae coepit Iesus facere et docere, usque in diem, qua praecipiens apostolis per spiritum sanctum, quos elegit assumptus est.

Oratio.

[C]Oncede quaesumus omnipotens deus: ut qui hodierna die unigenitum redemptorem nostrum ad coelos ascendisse credimus: ipsi quoque mente in celestibus

habitemus. Per eundem dominum nostrum. Iesum christum filium.

Ad processionem, ora.

D eus cuius filius in alta celorum potenter ascendens, captiuitatem nostram sua duxit virtute captiuam: tribue quæsumus, vt dona quæ suis participibus contulit, largiatur et nobis Iesus christus filius tuus dominus noster. Qui tecum viuit. Ad sextam, Cap.

C onuescens, præcepit eis ab ierosolymis ne discederent, sed expectarent promissionem patris, quam audistis (inquit) per os meum: quia ioannes quidem baptizauit a-

qua, vos autem baptizabimini spiritu sancto non post multos hos dies.

Ad nonam. Capitulum.

Viri galilei, quid statis aspicientes in celum: hic iesus, qui assumptus est a vobis in celum, sic veniet, quemadmodum vidistis eum euntem in celum. Deo gra.

Dominica Infra octavam Ascensionis. Capitulum.

Karissimi, estote prudentes, et vigilate in orationibus: ante omnia autem mutuam in vobismetipsis charitatem continuam habentes: quia charitas operit multitudinem peccatorum.

Omnipotens

[illegible] Oratio.

Omnipotens sempiterne deus, fac nos tibi semper et devotam gerere voluntatem, et maiestati tue sincero corde servire. Per dominum nostrum.

Ad sextam. cap.

Hospitales invicem sine murmuratione: unusquisque sicut accepit gratiam, in alterutrum illã administrantes, sicut boni dispensatores multiformis gratie dei. R. Deo.

Ad nonam. cap.

Si quis loquitur, quasi sermones dei: si quis ministrat, tamquam ex virtute, quam administrat deus: ut in omnibus honorificetur deus per=

iesum

iesum christum dominum nostrum.

Feria sexta et Sabbato post Octa. in omnia sicut in Dom. infra.



In festo Pentecostes.

Capitulum.

Dum complerentur dies pentecostes, erant omnes discipuli pariter in eodem loco: et factus est repente de celo sonus tamquam advenientis spiritus vehementis, et replevit totam domum, ubi erant sedentes.

Oratio.

Deus, qui hodierna die co:

da fidelium sancti spiritus illustratione docuisti: da nobis in eodem spiritu recta sapere, et de eius semper consolatione gaudere. Per dominum no.

Ad processionem. Ora.

Adsit nobis, quaesumus domine, virtus spiritus sancti: quae et corda nostra clementer expurget, et ab omnibus tueatur adversis: Per dominum nost.

Ad sextam. Cap

Facta autem hac voce, convenit multitudo, et mente confusa est: quoniam audiebat unusquisque lingua sua illos loquentes. Deo gratias.

Ad nonam, capitul.

Judaei quoque, et proselyti, cre

tes

tes, et a rabes, audiuimus eos loquẽ-
tes nostris linguis magnalia dei.

D Feria secunda. oratio.
Eus, qui apostolis tuis san-
ctum dedisti spiritum: concede ple-
bi tuæ piæ petitionis effectum: ut
quibus dedisti fidem, largiaris et
pacem. Per dominum nostrum.

A Feria tertia. oratio.
Dsit nobis qs. quere in
festo pentecost. fo.

M Feria quarta. oratio.
Entes nostras, quæsumus do-
mine, paraclitus qui a te procedit,
illuminet: et inducat in omnem,
sicut tuus promisit filius, veritatẽ.

Qui tecum vivit et regnat.

**D** Feria Quinta. Oratio.
eus, qui hodierna, quere
In festo pentecostes. fo.

**D** Feria sexta. Oratio
A quesumus, ecclesie tue
misericors deus: ut sancto spiritu
congregata, hostili nullatenus incur
sione turbetur. Per dominum no.

**M** Sabbato. Oratio.
entibus nostris, quesumus
domine, spiritum sanctum benignus
infunde: cuius et sapientia conditi
sumus, et providentia gubernamur.
Per dominum nostrum Jesum xpm
filium tuum. Qui tecum vivit. etc.



In Festo. S. Trinitatis.

Capitulum.

Altitudo divitiarum sapientiæ et scientiæ dei: quam incomprehensibilia sunt iudicia eius, et investigabiles viæ eius.



Oratio.

Omnipotens sempiterne deus, qui dedisti famulis tuis in confessione veræ fidei, æternæ Trinitatis gloriam agnoscere, et in potentia maiestatis adorare unitatem: quæsumus, ut eiusdem fidei firmitate, ab omnibus semper muniamur adversis.

Per dominum nostrum Iesum xpm filium tuum, Commemoratio prime Dominice post pentecost. Ora.

Deus in te sperantium fortitudo, adesto propitius invocationibus nostris: et quia sine te nihil potest mortalis infirmitas: presta auxilium gratie tue, ut in exequendis mandatis tuis, et voluntate tibi et actione placeamus. Per dominum nostrum. Ad sextam. Capi.

Gratia domini nostri Iesu christi, et charitas dei, et communicatio sancti spiritus sit cum omnibus vobis Amen. R. Deo gratias :-

Ad nonam. Capitul.

Tres sunt qui testimonium dant in celo, pater, verbum, et spiritus sanctus: et hi tres unum sunt.





In festo Corporis Christi.

Capitulum.

Fratres, Ego enim accepi a domino, quod et tradidi vobis: quoniam dominus iesus in qua nocte tradebatur accepit panem, et gratias agens fregit, et dixit: accipite et manducate: hoc est corpus meum, quod pro vobis tradetur: hoc facite in meam commemorationem.



Oratio:

Deus, qui nobis sub sacramen-
to mirabili, passionis tue memoriam
reliquisti: tribue quesumus ita nos
corporis et sanguinis tui sacra myste-
ria venerari: ut redemptionis tue
fructum in nobis iugiter sentiam9.
Qui vivis et regnas cum deo.

Ad sextam, cap.

Quotiescumque enim mandu-
cabitis panem hunc, et calicem bibetis,
mortem domini annuntiabitis, do-
nec veniat. Ad nonam, cap.

Quicumque manducaverit
panem hunc, vel biberit cali-
cem domini indigne, reus erit cor-
poris et sanguinis domini.

Dominica Infra octauam .

Capitulum .

Charissimi, nolite mirari si odit vos mundus: nos scimus quoniam translati sumus de morte ad vitam, quoniam diligimus fratres.

Oratio .

Sancti nominis tui domine timorem pariter et amorem fac nos habere perpetuum: quia nunquam tua gubernatione destituis quos in soliditate tue dilectionis instituis. Per dominum nostrum Iesum . etc.

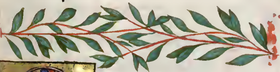
Ad sextam , capi .

In hoc cognouimus charitatem dei . quoniam ille animam suam pro-

nobis posint: et nos debemus pro fra-
tribus animas ponere. Deo gra.

Ad nonam. Capitu.

Filioli mei, non diligamus -
verbo, neque lingua: sed opere et veritate.





Sabbatis per Annum.

Ad vesperas, Capitulū.

Altitudo divitiarum=
sapientie et scientie dei: quam incom=
prehensibilia sunt iudicia eius, et =
investigabiles vie eius. R. Deo.

Quotidie, Ad primam.

Capitulum.

Benedictio, et claritas, et sapientia, et gratiarum actio, honor, virtus, et fortitudo deo nostro in secula saeculorum. Amen. ℟. Deo.

Quotidie, Ad primam.

Capitulum.

Regi saeculorum immortali et invisibili, soli deo honor et gloria in saecula saeculorum. Amen.

Preces dicuntur semper nisi in Duplicibus.

Kyrie eleison. Christe eleison. Kyrie eleis. Pater noster.

℣. Et ne nos inducas in tentationem. ℟. Sed libera nos a malo. Credo in deum.

℣. Carnis resurrectionem. ℟. Vitam eter-

nam. Amen.

℣. Et ego ad te domine clamaui. ℟.

Et mane oratio mea preueniet te.

℣. Repleatur os meum laude. ℟.

Et cantem gloriam tuam, tota die magnitudinem tuam.

℣. Domine auerte faciem tuam a peccatis meis ℟.

Et omnes iniquitates meas dele.

℣. Cor mundum crea in me deus. ℟.

Et spiritum rectum innoua in visceribus meis.

℣. Ne proiicias me a facie tua. ℟.

Et spiritũ sanctum tuum ne auferas a me.

℣. Redde mihi letitiam salutaris tui. ℟.

Et spiritu principali confirma me.

℣. Adiutorium nostrum in nomine domini. ℟.

Qui fecit celum et terram.

## Confessio.

Confiteor deo omnipotenti beate marie semper virgini, beato michaeli Archangelo, beato Joanni baptiste, sanctis Apostolis petro et paulo, beato Augustino, beate Genovefe: omnibus sanctis, et vobis fratres: quia peccavi nimis cogitatione, verbo, et opere: Mea culpa, mea culpa, mea maxima culpa: Ideo precor beatam Mariam semper virginem, beatum Michaelem baptistam, sanctos Apostolos petrum et paulum, beatum Augustinum, beatam Genovefam, omnes sanctos, et vos fratres, orare pro me ad dominum deum nostrum. Deinde.

Misereatur vestri omnipotens deus, et dimissis peccatis vestris, perducat vos ad vitam eternam. R. Amen.

Absolutio.

Indulgentiam, absolutionem et remissionem omnium peccatorum nostrorum tribuat nobis omnipotens et misericors dominus. ℟. Amen.

℣. Dignare domine die isto. ℟.
Sine peccato nos custodire.
℣. Miserere nostri domine. ℟.
Miserere nostri.
℣. Fiat misericordia tua dñe super nos. ℟.
Quemadmodū speravimus in te.
℣. Domine exaudi orationem meam. ℟.
Et clamor meus ad te veniat.
℣. Dominus vobiscum. ℟.
Et cum spiritu tuo. Oremus.

Domine deus omnipotens, qui ad principium huius diei nos peruenire fecisti: ut in hac die ad nullum declinemus peccatum, sed semper ad tuam iustitiam faciendam nostra procedant eloquia, dirigantur cogitationes et opera, Per dominum nostrum Iesum.

Dominus vobiscum. ℟. Et cum spiritu.

Benedicamus domino. ℟. Deo gratias.

Post martyrologium. dicitur.

Preciosa in conspectu domini. ℟. Mors sanctorum eius.

Sancta maria, et omnes sancti intercedant pro nobis ad dominum: ut nos mereamur ab eo adiuvari et salvari. Qui vivit et regnat in secula

seculorum

seculorum. ℟. Amen.

℣. Deus in adiutorium meum intende. ℟.

Domine ad adiuuandum me festina.

Et dicitur ter: Ultimo additur.

Gloria patri. ℣. Sicut erat. Kyrie

eleison. Christe eleison. Kyrie. pr. no.

Et ne nos inducas in temptationem. ℟.

Sed libera nos a malo. ℣.

Respice in seruos tuos domine, et in opera

tua, et dirige filios eorum. ℟.

Et sit splendor domini dei nostri super nos,

et opera manuum nostrarum dirige super nos,

et opus manuum nostrarum dirige.

Gloria patri. ℟. Sicut erat. Oratio.

Dirigere et sanctificare, regere et

gubernare dignare domine

deus rex celi et terre, hodie corda et corpora nostra, sensus, sermones, et actus nostros in lege tua, et in operibus mandatorum tuorum: Ut hic, et eternum, te auxiliante, salui, et liberi esse mereamur, saluator mundi: Qui uiuis et regnas in secula seculorum. ℟. Amen.

℣. Iube domine benedicere. benedictio

Dies et actus nostros in sua pace disponat dominus omnipotens.

℟. Amen.

Tunc dicitur Capitulum secundum Tempus.

Post capitulum, dicitur.

Adiutorium nostrum in nomine domini. ℟. Qui fecit celum et

terram. ℣. Benedicite. ℟. Deus.

Benedictio.

Dominus nos benedicat et ab omni malo defendat, et ad vitam perducat aeternam: et fidelium animae per misericordiam dei requiescant in pace. ℟. Amen.

Dominicis diebus per Annum.

Ad Tertiam. Capit.

Deus charitas est: et qui manet in charitate, in deo manet, et deus in eo. ℟. Deo gra.

Ad Sextam. Capitul.

Alter alterius onera portate; et sic adimplebitis legem christi. ℟. Deo. Ad nonam. cap.

E.mpti enim estis pretio ma-
gno: glorificate et portate deum in
corpore vestro. ℟ Deo gratias.
Dominicis: Et diebus ferialibus,
per Annũ. Ad vesperas, capitul'.
B enedictus deus, et pater
domini nostri iesu christi:
pater misericordiarum, et deus totius
consolationis: qui consolatur nos in
omni tribulatione nostra. ℟ Deo.
Quotidie Ad Completorium.
Capitulum.
T u autem in nobis es domi-
ne, et nomen sanctum tuum invo-
catum est super nos: ne derelinquas
nos domine deus noster. ℟ Deo.

Preces semper dicuntur preter quam in duplicibus.

Kyrie eleison. Christe eleison. ℟. Kyrie eleison. Pater noster

℣. Et ne nos inducas in temptationem. ℟.
Sed libera nos a malo.

Credo in deum.

℣. Carnis resurrectionem. ℟.
Vitam eternam. Amen.

℣. Benedictus es domine deus patrum nostrorum. ℟.
Et laudabilis et gloriosus in secula.

℣. Benedicamus patrem et filium cum sancto spiritu. ℟.
Laudemus et superexaltemus eum in secula.

℣. Benedictus es domine in firmamento celi.

Et laudabilis, et gloriosus et superexalta
tus in secula.
V. Benedicat, et custodiat nos omnipo
tens et misericors dominus. R. Amen.

## Confessio.

Confiteor. Misereatur. Indulgentiã.
quere ut supra. fo.
V. Dignare domine nocte ista. R.
Sine peccato nos custodire.
V. Miserere nostri domine. R.
Miserere nostri.
V. Fiat misericordia tua dñe super nos R.
Quemadmodum speravimus in te
V. Domine exaudi orationem meam. R.
Et clamor meus ad te veniat.
V. Dominus vobiscum. R.
Et cum spiritu tuo.

Visita, quaesumus domine habitationem istam, et omnes insidias inimici ab ea longe repelle: angeli tui sancti habitent in ea, qui nos in pace custodiant et benedictio tua sit super nos semper. Per dominum nostrum Iesum christum filium.
V. Dominus vobiscum. R.
Benedicamus domino. R. Deo gratias.

Benedictio.

Benedicat et custodiat nos omnipotens et misericors dominus, Pater, et filius, et spiritus sanctus. Amen.
Fidelium animae per misericordiam dei requiescant in pace. R. Amen.

In ferijs Aduentus, Quadragesimæ, Quatuor temporum et vigiliarum quæ Ieiunantur dicuntur istæ preces Ad matutinas et vesperas.

Kyrie eleison. Christe eleison. Kyrie eleison. pater noster.

℣. Et ne nos inducas in tentationem. ℟. Sed libera nos a malo.

℣. Ego dixi domine miserere mei. ℟. Sana animam meam quia peccavi tibi.

℣. Convertere domine usquequo. ℟. Et deprecabilis esto super servos tuos.

℣. Fiat misericordia tua domine super nos. ℟. Quemadmodum speravimus in te.

℣. Sacerdotes tui induantur iustitiam. ℟.

Et sancti tui exultent.

V. Domine saluum fac regem nostrũ. R.

Et exaudi nos in die, qua inuocauerimus te.

V. Saluum fac populum tuum domine et benedic hereditati tue. R.

Et rege eos, et extolle illos usque in eternũ.

V. Memento congregationis tue. R.

Quam possedisti ab initio.

V. Fiat pax in uirtute tua. R.

Et abundantia in turribus tuis.

V. Oremus pro fidelibus defunctis. R.

Requiem eternam dona eis domine. et lux perpetua luceat eis.

V. Requiescant in pace. R.

Amen.

V. Pro fratribus nostris absentibus. R.

saluos

Saluos fac seruos tuos deus meus sperantes in te.

℣. Pro afflictis, et captiuis. ℟.

Libera eos deus israel ex omnibus tribulationibus suis.

℣. Mitte eis domine auxilium de sancto. ℟.

Et de sion tuere eos.

℣. Domine exaudi oratione͂ meam. ℟.

Et clamor meus ad te ueniat. Deinde dicitur, psalmus. De profundis. Iste psalmus dicitur ad matutinas cum. Gloria patri. Miserere mei deus. Dicitur ad uesperas.

℣. Domine deus uirtutum conuerte nos. ℟.

Et ostende faciem tuam et salui erimus.

℣. Exurge christe adiuua nos. ℟.

Et libera nos propter nomen tuum.

℣. Domine exaudi orationem meam. ℟.
Et clamor meus ad te veniat.
℣. Dominus vobiscum ℟.
Et cum spiritu tuo.
Quando fit de feria. Ad primam. Capitu.
Pacem et veritatem diligite, ait dominus omnipotens. ℟. Deo.
Preces.
Kyrie eleison. Christe eleison.
Kyrie eleison. pater Noster.
℣. Et ne nos inducas in temptationem. ℟.
Sed libera nos a malo.
Credo in deum.
℣. Carnis resurrectionem. ℟.
Vitam eternam, Amen.
℣. Et ego ad te domine clamavi. ℟.

Et mane oratio mea preueniet te.
ꝟ. Repleatur os meum laude. ℟.
Ut cantem gloriam tuam, tota die magnitu-
dinem tuam.
ꝟ. Domine auerte faciem tuam a peccatis
meis. ℟.
Et omnes iniquitates meas dele.
ꝟ. Cor mundum crea in me deus. ℟.
Et spiritum rectum innoua in visceribus meis.
ꝟ. Ne proiicias me a facie tua. ℟.
Et spiritum sanctum tuum ne auferas a me.
ꝟ. Redde mihi letitiam salutaris tui. ℟.
Et spiritu principali confirma me.
ꝟ. Eripe me domine ab homine malo. ℟.
A viro iniquo eripe me.
ꝟ. Eripe me de inimicis meis deus meus. ℟.

Et ab insurgentibus in me libera me.

℣. Eripe me de operantibus iniquitatē. ℟.

Et de viris sanguinum salva me.

℣. Sic psalmum dicam nomini tuo in seculum seculi. ℟.

Ut reddam vota mea de die in diem.

℣. Exaudi nos deus salutaris noster. ℟.

Spes omnium finium terre et in mari longe.

℣. Deus in adiutorium meū intende. ℟.

Domine ad adiuvandum me festina.

℣. Sanctus deus, sanctus fortis, sanctus immortalis. ℟.

Miserere nobis.

℣. Benedic anima mea domino. ℟.

Et omnia que in tra me sunt nomini san

cto eius.

℣. Benedic anima mea domino. ℟.
Et noli oblivisci omnes tribulationes eius.
℣. Qui propitiatur omnibus iniquitatibus tuis. ℟.
Qui sanat omnes infirmitates tuas.
℣. Qui redimit de interitu vitā tuam. ℟.
Qui coronat te in misericordia et miserationibus.
℣. Qui replet in bonis desiderium tuū. ℟.
Renovabitur, ut aquile iuventus tua.
℣. Adiutorium nostrum in nomine dñi. ℟.
Qui fecit celum et terram. Confessio.
Confiteor. Misereatur. ec. ut supra

In ferialj officio, Ad Tertiam.
per Annum.
Capitulum.

Sana me domine, et sana-
bor: saluum me fac, et saluus ero:
quoniam laus mea tu es. ℟. Deo.
Preces, quae dicuntur. Ad tertiam.
Sextam, et Nonā. In Aduentu.
Kyrie eleison. Christe eleison.
Kyrie eleison. pater noster.
Et ne nos inducas in tentationem. ℟.
Sed libera nos a malo.
℣. Domine deus virtutum conuerte nos.
Et ostende faciem tuam et salui erimus.
℣. Exurge christe, adiuua nos. ℟.
Et libera nos propter nomen tuum.
℣. Domine exaudi orationem meam. ℟.
Et clamor meus ad te veniat.
℣. Domin᷒ vobiscū ℟. Et cū spiritu tuo.

In Adventu. capitul.

Ecce dies veniunt, dicit do-
minus, et suscitabo david germen
iustum: et regnabit rex, et sapiens
erit, et faciet iudicium et iustitiã
in terra. In Quadragesima, cap.

Convertimini ad me in to-
to corde vestro, in ieiunio, et
fletu, et planctu; et scindite corda
vestra, et non vestimenta vestra, ait
dominus omnipotens. ℟. Deo gr.

Tempore passionis. capi.

Domine, omnes qui te dere-
linquunt, confundentur: recedentes
a te, in terra scribentur: quoniã
dereliquerunt venam aquarum

viventiũ

viventium dominum. ℟. Deo.

C Tempore pascha. Capi.

Christus resurgens ex mortuis iam non moritur, mors illi ultra non dominabitur: quod enim mortuus est peccato, mortuus est semel: quod autem vivit, vivit deo.

Ad sextam, per Annum.

Capitulum.

Alter alterius onera portate: et sic adimplebitis legem christi. ℟. Deo gratias.

In Adventu. Capitu.

In diebus illis salvabitur iuda, et israel habitabit confidenter: et hoc est nomen quod vocabunt

cum, dominus iustus noster.

In Quadragesima. cap.

Derelinquat impius viam suam, et vir iniquus cogitationes suas, et revertatur ad dominum, et miserebitur eius, et ad deum nostrum, quoniam multus est ad ignoscendum. ℟. Deo gratias.

Tempore passionis, cap.

Confundantur qui me persequuntur, et non confundar ego: paveant illi, et non paveant ego: induc super eos diem afflictionis, et duplici contritione contere eos, domine deus noster. ℟. Deo gra.

Tempore Paschali. Capitulum.

Christus resurrexit a mortuis primitie dormientium: quoniam quidem per hominem mors, et per hominem resurrectio mortuorum: et sicut in adam omnes moriuntur, ita et in christo omnes vivificabuntur. R. Deo gratias.

Ad nonã. per Annũ. cap.

Empti enim estis precio magno: glorificate et portate deum in corpore vestro. R. Deo gratias.

In Adventu. capitu.

Prope est ut veniat tempus eius, et dies eius non elongabuntur: miserebitur enim dominus iacob, et israel salvabitur. R. Deo.

In Quadragesime. cap.

Frange esurienti panem tuum, et egenos vagosque induc in domum tuam: cum videris nudum, operi eum, et carnem tuam ne despexeris. ℟. Deo gratias.

In Tempore passio. cap.

Recordare quod steterim in conspectu tuo, ut loquerer pro eis bonum: et averterem indignationem tuam ab eis. ℟ Deo gra.

Tempore paschali. cap.

Christus semel pro peccatis nostris mortuus est, iustus pro iniustis: ut nos offerret deo, mortificatus quidem carne, vivificatus

autem spiritu. ℟. Deo gratias.

## ORATIONES.
## In Dominicis.

P Dominica iij.
post pentecosten. Ora.
Rotector in te sperantiū-
deus, sine quo nihil est validum,
nihil sanctum: multiplica super
nos misericordiam tuam: ut te re-
ctore, te duce, sic transeamus per bo-
na temporalia, ut non amittamus
æterna. Per dominum nostrū.

D Dominica iiij. Ora.
A nobis, quæsumus domine,
ut et mundi cursus pacifice nobis-

tuo ordine dirigatur: et ecclesia tua
tranquilla deuotione letetur.
Per dominum nostrum Iesum.

Dominica v. Ora.

Deus, qui diligentibus te bona inuisibilia preparasti: infunde cordibus nostris tui amoris affectum: vt te in omnibus, et super omnia diligentes, promissiones tuas, que omne desiderium superant, consequamur. Per dominum nostrum.

Dominica vj. Ora.

Deus virtutum, cuius est totum quod est optimum: insere pectoribus nostris amorem tui nominis, et presta in nobis religionis au-

gmentum: ut quae sunt bona, nutri
as: ac pietatis studio, quae sunt nutri
ta, custodias. Per dominum no.

Dominica. vij. Ora

Deus, cuius providentia in
sui dispositione non fallitur: te suppli
ces exoramus: ut noxia cuncta submo
ueas, et omnia nobis profutura con
cedas. Per dominum nostrum.

Dominica viij. Ora.

Largire nobis, quaesumus do
mine, semper spiritum cogitandi quae
recta sunt, propitius et agendi: ut
qui sine te esse non possumus, secun
dum te uiuere ualeamus. Per do
minum. Dominica ix. Ora.

Pateant aures misericordie
tue domine precibus supplicantium:
et ut petentibus desiderata concedas:
fac eos, que tibi sunt placita, postu-
lare. Per dominum nostrum. etc.

**Dominica. x. Ora.**

Deus, qui omnipotentiam
tuam parcendo maxime et miseran-
do manifestas: multiplica super
nos misericordiam tuam: ut ad tua
promissa currentes, celestium bonorum
facias esse consortes. Per dominum
nostrum.

**Dominica xi. Ora.**

Omnipotens sempiterne deus,
qui abundantia pietatis tue
et merita supplicum excedis et vota:

effunde super misericordiam tuam :
ut dimittas que conscientia metuit,
et adiicias quod oratio non presumit.
Per dominum nostrum Jesum.

Dominica xij. Ora.

Omnipotens et misericors
deus, de cuius munere venit, ut tibi
a fidelibus tuis digne et laudabili-
ter serviatur; tribue quesumus
nobis: ut ad promissiones tuas sine
offensione curramus. Per dominum
nostrum Jesum christum filium.

Domini xiij. Ora.

Omnipotens sempiterne deus,
da nobis fidei, spei, et charitatis
augmentum: et ut mereamur as

sequi quod promittis, fac nos a-
mare quod precipis. Per domi
num nostrum iesum christum.

Dominica. xiiij. Ora.

Custodi domine, quesu
mus, ecclesiam tuam propitiatio-
ne perpetua: et quia sine te labi-
tur humana mortalitas: tuis sem-
per auxiliis et abstrahatur a noxiis,
et ad salutaria dirigatur. Per
dominum nostrum iesum xpm.

Dominica xv. Orat.

Ecclesiam tuam, domine
miseratio continuata mundet et
muniat: et quia sine te non po-
test salua consistere, tuo semper

munere gubernetur. Per domi
num nostrum iesum christum.

Dominica xvj. Ora.

Tua nos, quesumus domi
ne, gratia semper et preueniat et
sequatur: ac bonis operibus iugi
ter prestet esse intentos. Per do
minum nostrum iesum christum.

Dominica xvij. Ora.

Da quesumus domine, popu
lo tuo diabolica vitare contagia: et
te solum deum pura mente sectari.
Per dominum nostrum iesum.

Dominica. xviij. Ora.

Dirigat corda nostra, quesu
mus domine, tue miserationis ope

ratio, quia tibi sine te placere nō possumus. Per dominum nostr iesum christum fi. tuū. Qui te.



Dominica. xix. Ora.

Omnipotens et misericors deus, universa nobis adversantia propitiatus exclude: ut mente et corpore pariter expediti, quae tua sunt, liberis mentibus exequamur. Per dominum nostrum iesum.

Dominica. xx. Ora.

Largire quaesumus domine, fidelibus tuis indulgentiam placatus, et pacem: ut pariter ab omnibus mundentur offensis, et secura tibi mente deserviant. Per

dominum nostrum Iesum christum.

Dominica xxi. Oratio.

Familiam tuam, quesumus domine, continua pietate custodi: ut a cunctis adversitatibus te protegente sit libera: et in bonis actibus tuo nomini sit devota. Per dominum nostrum iesum christum filium.

Dominica xxij. Ora.

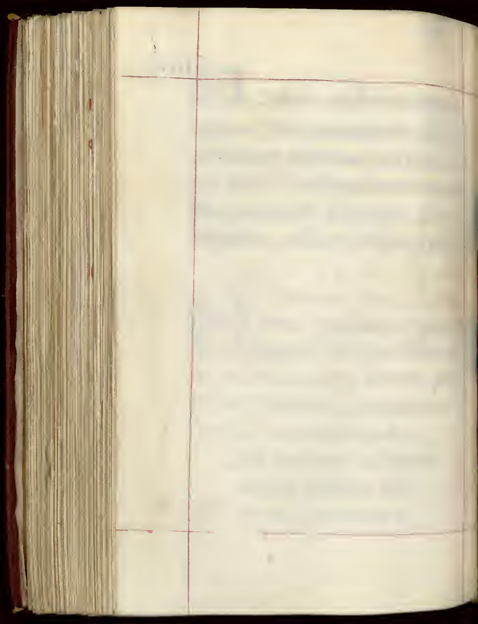
Deus refugium nostrum, et virtus: adesto piis ecclesie tue precibus auctor ipse pietatis, et presta: ut quod fideliter petimus, efficaciter consequamur. Per dominum nostrum Iesum christum filium.

Dominica xxiij. Oratio: -

A Bsolue, quæsumus domine, tuorum delicta populorum: ut a peccatorum nostrorum nexibus, quæ pro nostra fragilitate contraximus, tua benignitate liberemur. Per dominum nostrum iesum xpm.

Dominica xxiiij. oratio.

Excita, quæsumus domine, tuorum fidelium voluntates: ut divini operis fructum propensius exequentes, pietatis tuæ remedia maiora percipiant.
Per dominum nostrum
Iesum christum filiu
tuum, Qui tecum &c.



Sancti Saturnini.
Episcopi. Ora.

Deus qui nos beati saturnini. martyris tui atque pontificis cõcedis natalitio perfrui: ct^a nos tribue meritis adiuuari. Per.

In vigilia Sancti Andree Apostoli. Oratio.



Quesumus omnipotens deus: vt beatus Andreas apostolus, cuius preuenimus festiuitatem, tuum pro nobis imploret auxilium: vt a nostris reatibus absoluti, a cunctis etiam periculis eruamur. Per dominum nostrum.

In festo Sancti Andree Apostoli; Capitul.

Corde creditur ad iustitiã,

ore autem confessio fit ad salutem: dicit enim scriptura: omnis qui credit in illum, non confundetur. R. Deo.

Oratio

Maiestatem tuam domine suppliciter exoramus: ut sicut ecclesie tue beatus andreas apostolus extitit predicator et rector: ita apud te sit pro nobis perpetuus intercessor. Per dominum nostrum iesum c. f. tuum.

Ad sextam. Capitul

Non enim est distinctio iudei et greci: nam idem dominus omnium dives in omnes qui invocant illum: omnis enim quicumque invocaverit nomen domini, salvus erit. Deo g's.

Ad nonam Capitulum

Isaias enim dicit: domine
quis credidit auditui nostro? ergo
fides ex auditu, auditus autem per
verbum christi: sed dico: numquid
non audierunt? et quidem in om-
nem terram exivit sonus eorum et in
fines orbis terrae verba eorum.

S. Eligij, Ora.
Exaudi quaesumus. De
communi confessoris.

Sancte barbarae. Ora.
Deus qui inter cetera. de com
muni virgs. In festo Sancti
Nicolai, confess. Ora.
Deus, qui beatum nicolaum
pontificem innumeris decorasti mi

raculis

raculis: tribue quesumus, ut eius meritis et precibus, a gehenne incendiis liberemur. Per dominum no.

In festo conceptionis beate marie virginis. Capitulum.



Ab initio et ante secula creata sum, et usque ad futurum seculum non desinam, et in habitatione sancta coram ipso ministraui. ℟ Deo gratias. Oratio.

Famulis tuis, quesumus domine, celestis gratie munus impertire: ut quibus beate virginis partus extitit salutis exordium, conceptionis eius votiua solemnitas pacis tribuat incrementum.

Per dominum nostrum Iesum christum. Ad sextam. et ad nonā Capitul' ut in officio cuiusdē virgīs. in sabbato. Ff. Fusciani gentiani. cc. Ora.

Presta quesumus omnipotēs deus ut qui beatorum martyrum fusciani gentiani et victorici. cc. de commune plurimorum martyrum

S. Lucie virgis et mart. Ora.

Exaudi nos deus salutaris noster. ut sicut de beate lucie virginis et martyris tue festivitate gaudemus: ita pie devotionis erudiamur affectu. Per dominum nostrum.

S. Nicasii martyris. Ora.

Presta quesumus omnipotens.

In festo S. Thomæ. Oratio.

D A nobis, quæsumus domine beati Apostoli tui Thomæ solemnitatibus gloriari: ut eius semper et patrociniis subleuemur, et fidem congrua deuotione sectemur. Per dominum nostrum Iesum Christum.

Sancti Hilarij. oratio.

D eus qui populo tuo. De communi confessoris. Commemoratio S. Foelicis. oratio.

C oncede quæsumus omnipotens deus: ut ad meliorem vitam sanctorum tuorum exempla nos prouocent: quatenus quorum solemnia agimus, etiam actus imitemur. Per dominum nostrum.

I S. Sancti mauri. Oratio.
Intercessio nos. de commu
ni confess. non pontificis :—

P In festo S. marcelli. Oratio.
Reces populi tui, quaesumus
domine, clementer exaudi: ut be-
ati marcelli martyris tui atque -
pontificis meritis adiuuemur.
Per dominum nostrum iesum.

Sancti Antonij abba. Oratio.
Intercessio nos. de eodem
Communi confessoris.

D S. Priscae virginis. Ora.
A quaesumus omnipotens.

I S. Launomari. Ora.
Intercessio nos. de communi.

I Sanctorum fabiam et seba. orat.
Infirmitatem nostram. de
Communi plurimorum mrt.

De S. Agnetis vgs. Cap.

Confitebor tibi domine, rex, et collaudabo te deum salvatorem meum: confitebor nomini tuo, quoniam adiutor et protector factus es mihi, et liberasti corpus meum a perditione. R. Deo gratias. Oratio

Omnipotens sempiterne deus, qui infirma mundi eligis, ut fortia quaeque confundas: concede propitius ut qui beatae Agnetis virginis et martyris tuae solemnia colimus, eius

apud te patrocinia sentiamus. Per dominum nostrum Jesum.

Ad sextam, capitul.

Liberasti me. de com. Ad nonam. capitul.

Laudabit. de commun:—

S. Vincentij. Oratio

Adesto domine supplicatio nibus nostris: ut qui ex iniquita te nostra reos nos esse cognoscimus: beati Vincentij martyris tui inter cessione liberemur. Per dominū.

S. Sulpitij confess. Ora.

Exaudi quesumus. de com muni confesso.

In conuersione S. pauli. cap.

Paulus adhuc spirans mi

narū

narum et cedis in discipulos domi-
ni, accessit ad principem sacerdo-
tum, et petijt ab eo epistolas in
damascum ad synagogas: ut si quos
invenisset huius viae viros ac mu-
lieres, vinctos perduceret in ieru-
salem. ℟. Deo gra. Oratio

Deus qui universum mun-
dum beati pauli apostoli
predicatione docuisti: da nobis quaesu-
mus, ut qui eius hodie conversio-
nem colimus, per eius ad te exem-
pla gradiamur. Per dominum
nostrum Iesum christum filium.

Ad sextam. Capitu.

Surrexit autem saulus de
terra, apertisque oculis nihil vi

debat: ad manus autem illum trahen
tes, introduxerunt damascum: et
erat ibi tribus diebus non videns: -
et non manducavit, neque bibit. ℟.
Deo gratias. Ad nonam. Cap.
P Aulus autem multo magis -
convalescebat, et confundebat
iudeos, qui habitabant damasci, af-
firmans quoniam hic est christus.
M S. Prejecti martyris. Ora.
Artyris tui prejecti nos domi
ne interventio gloriosa commendet: -
ut quod nostris actibus non mere-
mur, eius precibus consequamur.
Per dominum nostrum iesum.
Sancti. Joannis Chrysostomi. Orat.

E cclesiam tuam, quaesumus domine, gratia caelestis amplificet: quam beati ioannis chrisostomi confessoris tui atque pontificis illustrare voluisti gloriosis meritis et doctrinis. Per dominum nostrum iesum.

D S cte Agnetis. secundo. ora eus qui nos annua. De communi

I S cti Ignatij mart. ora infirmitatem De communi



In festo purificationis b. m. ca.
Ecce ego mitto angelum meum, qui praeparabit

viam ante faciem meam: et statim veniet ad templum sanctum suum dominator, quem vos queritis, et angelus testamenti, quem vos vultis. ℟ Deo gratias. Oratio.

Omnipotens sempiterne deus, maiestatem tuam supplices exoramus: ut sicut unigenitus filius tuus hodierna die cum nostre carnis substantia in templo est presentatus: ita nos facias purificatis tibi mentibus presentari. Per eundem dominum nostrum.

Ad sextam. Capitul.

Ecce veniet, dicit dominus exercituum, et quis poterit cogi

tare

tare diem aduentus eius, et quis stabit ad videndum eum: ipse enim quasi=ignis conflans, et quasi herba fullo=num. R. Deo. Ad nonam. cap.

Et placebit domino sacrificium iuda et ierusalem sicut dies seculi, et sicut anni antiqui, dicit dominus omnipotens. R. Deo gratias.

Sancti Blasii. Martyris.

Deus qui nos beati blasii.

Sancte Agathe virg. et martyris.

Capitulum vt in festo S. Agnetis.

Oratio Deus, qui inter cetera potentie tue miracula etiam in sexu fragili victoriam martyrii contulisti: concede propitius, vt qui beate Agathe virgi

nis

us et martyris tue natalitia colimus, per eius ad te exempla gradiamur. Per dominum nostrum Jesum xpm.

Sti Vedasti. confess. Ora.

D a quesumus omnipotens. De communi confessoris

Sancti Amandi. confess. or.

D eus qui populo, De commun.

Sancte Scolastice virginis, ora.

E xaudi nos domine. de commu.

Sancti Valentini martyr, ora

P resta quesumus. de commun.

Cathedra St. petri capitula de communi confessor pontific.

D eus, qui beato petro apostolo tuo, collatis clavibus regni

celestis

celestis, ligandi atque solvendi ponti
ficium tradidisti: concede, ut interces
sionis eius auxilio, a peccatorum nostro
rum nexibus liberemur. Per domi
num nostrum Jesum christum fi.

Vigilia S. mathie. Oratio.

D A quesumus omnipotens
deus. De Communi

In festo S. mathie. Oratio.

Deus, qui beatum matthiam
apostolorum tuorum collegio
sociasti: tribue quesumus, ut eius
interventione, tue circa nos pietatis
semper viscera sentiamus. Per domi
num nostrum Jesum christum.

Translatio S. Augustini. Oratio.

D eus qui populo. de commun.
Sancti Albinj. Confess. ora.
Da quaesumus. de commun.
SS. saturnini et alijs. oratio.
D Omine deus noster multi
plica super nos gratiam tuam:
et sanctorum martyrum tuorum sat
ri. saturnini. foelicitatis. et perpetuae:
sociorumque eorum quorum comme
moramus gloriosa certamina tribue
subsequi in sancta professione vi
ctoriam. Per dominum nostrum
Iesum xpm. f. t. Qui tecum.
S. Thomae de Aquino. Ora.
D Eus qui ecclesiam tuam bea
ti thomae confessoris tui mira erudi

tione

tione clarificas, et sancta operatione fecundas: da nobis quaesumus, et quae docuit, intellectu conspicere: et quae egit, imitatione complere. Per dominum nostrum Iesum christum.

S. Gregorii pape. ora.

Deus, qui animae famuli tui gregorii, aeternae beatitudinis praemia contulisti: concede propitius, ut qui peccatorum nostrorum pondere premimur: eius apud te precibus sublevemur. Per dominum nostrum.

S. Benedicti. abb. ora.

Intercessio. De commun



In festo Annunciationis. b. m. v. capit.

Ecce virgo concipiet, et pariet filium, et vocabitur nomen eius emmanuel: butyrum et mel comedet, ut sciat reprobare malum et eligere bonum. ℟. Deo gratias.

Oratio.

Deus, qui de beate marie virginis utero, verbum tuum, angelo nunciante, carnem suscipere voluisti: presta supplicibus tuis: ut qui vere eam genitricem dei cre

dimus, eius apud te intercessioni
bus adiuuemur. Per eumdem
dominum nostrum Iesum xpm.

Ad sextam. Capit.

Dabit illi dominus deus
sedem dauid patris eius, et regna
bit in domo iacob in æternum,
et regni eius non erit finis.

Ad nonam. Capit.

Egredietur virga de radice
iesse, et flos de radice eius ascendet,
et requiescet super eum spiritus
domini. R. Deo gratias.

Ss. cte marie egyptiace. O.

Largire nobis clementissi

me pater, quod sicut beata maria egyptiaca dominum nostrum iesum christum super omnia diligendo, suorum obtinuit veniam peccaminum: ita nobis apud misericordiam tuam, sempiternam impetret beatitudinem. Per eundem dominum nostrum iesum christum.

S. Ambrosii doct. conf. O.

Deus qui populo. de comm.

S. Guillermi Abbatis. ora.

Omnipotens sempiterne deus qui mirabiliter fulges in electis tuis quos te inhabitatore voluisti: da nobis quaesumus beati

Guillermi

guillermi confessoris tui atque -
abbatis ita digne commemorati-
onem agere, ut eius suffraganti
bus meritis templum tuum fieri
mereamur. Per dominum no.

SS. Tiburtij et vale. ora.

Præsta quæsumus omni
potens deus: ut qui sanctorum -
martyrum tuorum tiburtij, vale
riani, et maximi solemnia coli-
mus: eorum etiam virtutes imi-
temur. Per dominum nostrum.

Inventio SS. corpor. Dionisij
Rustici et Eleutherij. ora.

Omnipotens sempiterne de'.

qui per gloriosa bella certaminis, ad immortales triumphos, dionysium, rusticum, et eleutherium extulisti: da cordibus nostris dignam pro eorum sacra inventione letitiam: ut quorum corpora pro amore amplectimur, eorum precibus adiuvemur. Per dominum nostrum.

S. Georgij martyris. ora.

Deus, qui nos beati georgij martyris tui meritis et intercessione letificas: concede propitius, ut qui tua per eum beneficia poscimus, dono tue gratie consequamur. Per dominum nostrum Iesum.

S. marci euangeliste. ora.

D Eus: qui beatum marcum
euangelistam tuum, euangelice pre-
dicationis gratia sublimasti: tribue
quesumus, eius nos semper et eru
ditione proficere, et oratione defendi.
Per dominum nostrum Iesum.

S. Vitalis. martyris. ora.

P Resta quesumus omnipo-
tens deus: ut qui beati vitalis mar-
tyris tui natalitia colimus, intercel
sione eius in tui nominis amore
roboremur. Per dominum nostrum.

S. Petri martyris. oratio.

P Resta quesumus omni

potens deus, ut beati petri marty
ris tui fidem congrua deuotione
sectemur: qui pro eiusdem fidei di
latatione, martyrii palmam me
ruit obtinere. Per dominum.

S. Eutropii. marty. Ora.

Omnipotens sempiterne deus,
qui hunc diem in beati eutropii mar
tyris tui atque pontificis honore
consecrasti: præsta quæsumus, ut
eius intercessione adiuti, valeamus
supernis sedibus adiungi. Per
dominum nostrum Iesum Christum.

SS. Apost. philippi et Iac. Or.

Deus, qui nos annua apo

stolorum

stolorum tuorum philippi et iaco
bi solemnitate letificas: presta-
quesumus, ut quorum gaudemus
meritis, instruamur exemplis.
Per dominum nostrum iesum.

S. Athanasii confess. ora.
Exaudi quesumus domine.
De communi Confessoris.

In festo Inventionis
S. Crucis. Capitulum.

Hoc sentite in vobis, quod
et in christo iesu, qui cum in for-
ma dei esset, non rapinam arbi-
tratus est esse se equalem deo: sed
semetipsum exinanivit, formam

ſeruı accipiens, in ſimilitudinem
hominum factus, et habitu inue
tus vt homo. R. Deo gratias.

Oratio

Deus, qui in praeclara salu-
tiferae crucis inuentione, passionis
tuae miracula suscitasti: concede,
vt vitalis ligni pretio, aeternae vi-
tae suffragia consequamur.
Qui viuis et regnas cum deo pa-
tre in vnitate spiritus sancti deus.
Per omnia secula seculorum.

Cõmemoratio SS. Alexandri Euentij et

Theodulj mr., ac Iuuenal' ad mat.

Praesta quaesumus omni

potens

potens deus, ut qui sanctorum tuo
rum alexandri, euentij, theoduli,
atque iuuenalis natalitia colim⁹,
a cunctis malis imminentibus,
eorum intercessionibus liberemur.
Per dominum nostrum Iesum.

M Ad sextam. Capitulū.
ihi autem absit gloriari,
nisi in cruce domini nostri iesu
christi: per quem mihi mundus
crucifixus est, et ego mundo.

H Ad nonam. Capi.
umiliauit semetipsum,
factus obediens usque ad mortem,
mortem autem crucis: propter
quod et deus exaltauit illum et

donauit illi nomen, quod est super omne nomen.

S. Monice vidue. O.

D[eus] qui beate monice pias lachrimas in glorisi doctoris atque pontificis tui augustini: da nobis quesumus, ut qui eius beneficia poscimus, meritis utriusque parcium nostrarum salutare[m] consequamur effectu[m]. Per dominum.

S. Joannis ante portam lat. O.

D[eus] qui conspicis quia nos undique mala nostra perturbant: presta quesumus, ut beati ioannis apostoli tui et euangeli

ste

ste intercessio gloriosa nos protegat. Per dominum nostrum Jesum cristum.

In Translatione S. nicolai.

Deus, qui pro tuorum sa-Oratio. lute fidelium, beatissimi nicolai corpus, barum de mira transferri voluisti: tribue nobis quaesumus, ut mereamur in praesenti a te eius suffragantibus meritis adiuvari, et in futuro cum ipso letari. Per dominum nostrum iesum cristum.

SS. Gordiani et epimachi. mr. or.

Da quaesumus omnipotens deus, ut qui beatorum martyrum tuorum gordiani et epima

chi solemnia colimus: eorum apud te intercessionibus adiuvemur. Per dominum nostrum Jesum xpm.

In festo s. Gregorii. oratio

Deus qui populo tuo eterne salutis beatum gregorium ministrũ tribuisti: presta quesumus, ut quẽ doctorem vite habuimus in terris, intercessorem habere mereamur in celis. Per dominum nostrum iesũ.

SS. Nerei achillei. oratio.

Semper nos domine martyrũ tuorum nerei, achillei, domitille, atque pancratij foveat quesumus beata solemnitas: et tuo dignos reddat

obsequio

obsequio. Per dominum nostrum.

S. Potentiane virg. ora.

Exaudi nos deus salutaris.

De communi unius virg.

Sancti. Iuonis. confess. ora.

Deus, qui beatum Iuonem confessorem tuum, pijs operibus, signis et virtutibus in ecclesia tua clarere fecisti: praesta quaesumus, vt eius meritis et precibus tua beneficia capiamus. Per dominum

S. Austregesilij. conf. ora.

Da quaesumus omnipotens deus. De communi confessoris.

S. baudelij martyris. ora.

Praesta quaesumus. de comm.

P Sc[th]. Desiderij mar. Ora. Pacta quesumus. S. Urbani.

D A quesumus omnipotens deus: ut qui beati Urbani martyris tui atque pontificis sollempnia colimus: eius apud te intercessionibus adiuvemur. Per dominum nostrum Jesum Sc[th]. Germani christum filium. Confessoris. Ora.

D Eus, qui es sanctorum tuorum splendor mirabilis: qui que hunc diem beati Germani confessoris tui atque pontificis depositione consecrasti: da ecclesie tue de eius natalitio semper gaudere. ut

apud

apud tuam misericordiam exem-
plis eius protegamur et meritis.
Per dominũ nostrum Jesum. etc.

S. Maximi confess. ora.

Da quesumus omnipotens deus. De commun confess.

S. Nicomedis mart. ora.

Deus qui nos beati nicome-
dis martyris tui meritis et interces
sione letificas, concede propitius,
ut cuius beneficia poscimus dono
tue gratie consequamur. Per do
minum nostrum iesum christum.

SS. marcellini et petri, m. or.

Deus qui nos annua. de com.

S. Clotildis Regine. ora.

Deus qui beate clotildis re=gine meritis et intercessione clodonei regis francorum que militum tenebras lumine fidei mirabiliter illustrasti: concede propitius. ut cuius solennia colimus ipsius exemplis ad te gradia=mur. Per dominum nostrum iesum.

S. Claudii confess. ora.

Omnipotens sempiterne deus qui es sanctorum tuorum splendor mira=bilis qui que hodierna die beatum claudium confessorem tuum atque pontificem beatitudinis gratiam sublimasti concede propitius ut cuius

merita

merita veneramur in terris eius auxilio apud tuam misericordiam muniamur in celis. Per dominum nostrum Jesum christum.

S. Medardi. confess. ora. **D**a quesumus. de commu.

Sancti. Gildardi. confess. oratio. **D**eus qui populo. de communi confessoris.

SS. Primi et feliciani. mr. ora. **F**ac nos quesumus domine, sanctorum martyrum tuorum primi et feliciani semper festa sectari: quorum suffragiis protectionis tue dona sentiamus.

Per dominum nostrum Iesum christum filium tuum. Qui tecum.

S. Barnabe Apost. Ora.

Deus, qui nos beati Barnabe apostoli tui meritis et intercessione letificas: concede propitius, vt qui tua per eum beneficia poscimus, dono tue gratie consequamur. Per dominum nostrum iesum christum. etc.

SS. basilidis Cyrini. Ora.

Sanctorum tuorum basilidis, cyrini, naboris, atque nazarij, quesumus domine, natalitia nobis votiua resplendeant: et quod illis contulit excellentia sempiterna, fru

ctibus

ctibus nostre devotionis accrescat.
Per dominum nostrum iesum xpm.

S. Basilii magni. cof. or.

Exaudi quesumus, de comuni.

SS. Viti et modesti. mr. ora.

Da ecclesie tue, quesumus domine sanctis tuis Vito, modesto, atque crescentia intercedentibus, superbe non sapere, sed tibi placita humilitate proficere: ut prava despiciens, quecumque recta sunt, libera exerceat charitate. Per dominum nostrum iesum christum.

SS. Cirici et Iulite. mr. ora.

Omnipotens sempiterne deus

qui cirico et Iulitte matri eius,
vna cum socijs eorum in passione
largitus es, vt omnia tormenta poe
narum susciperent: pietatem et mi
sericordiam tuam suppliciter depreca
mur: vt dum eorum gloriosam pas
sionem colimus, pacem et securitatē,
et peccatorum veniam consequamur.
Per dominum nostrum iesum ec.

SS. marci et marcelliani. m. o.

Presta quesumus omnipo
tens deus: vt qui sanctorum marty
rum tuorum marci et marcelliani
natalitia colimus a cunctis malis
imminentibus, eorum intercessioni
bus liberemur. Per dominum. ec.

D SS. Gervasii et prothasij. Ora
Eus qui nos annua. De
communi plurimorum martyrum.
I S. leufredi Abbatis. oratio
Ntercessio nos. De comuni.
In vigilia Scti. Joannis bapti
ste Oratio.
P Raesta quaesumus omnipo
tens deus: ut familia tua per viam
salutis incedat, et beati Joannis prae
cursoris hortamenta sectando, ad eu
quem praedixit, secura perveniat.
Dominum nostrum iesum xpm.
In festo Sancti Joannis bapti
ste. Ad vesperas. Capitulum



Audite insule, et attendite populi de longe: dominus ab utero vocavit me, de ventre matris mee recordatus est nominis mei. ℟. Deo gra.

Oratio.

Deus qui presentem diem honorabilem nobis in beati Joannis nativitate fecisti: da populis tuis spiritualium gratiam gaudiorum: et omnium fidelium mentes dirige in viam salutis eterne. Per dominum nostrum Jesum.

Ad sextam. Capitulum.

Et nunc hec dicit dominus, formans me ex utero servum sibi: dedi te in lucem gentium, ut sis salus mea usque ad extremum terre.

Ad nonam. Capitulum.

Reges videbunt, et consurgent principes, et adorabunt dominum deum tuum, et sanctum israel qui elegit te. R. Deo gratias.

SS. Joannis, et pauli; m. oratio.

Quesumus omnipotens deus: ut nos geminata letitia hodierne festivitatis excipiat, que de beatorum Joannis et pauli glorificatione pro

cedit: quos eadem fides et passio ve
re fecit esse germanos. Per domi
num nostrum Iesum christum.

S. leonis. pap. et m. ora.

Deus, qui beatum leonem
pontificem sanctorum tuorum me
ritis coequasti: concede propitius,
vt qui commemorationis eius festa
percolimus, vitae quoque imitemur
exempla. Per dominum nostrum.



In festo sanctorum
Apostolorum Petri
et pauli. cap.

Misit herodes rex
manus, vt affligeret

ret quosdam de ecclesia: occidit autem iacobum fratrem ioannis gladio. videns autem quia placeret iudeis, apposuit ut apprehenderet petrum.

Oratio.

Deus, qui hodiernam diem apostolorum tuorum Petri et pauli martyrio consecrasti: da ecclesie tue eorum in omnibus sequi preceptum, per quos religionis sumpsit exordium. Per dominum no.

Nulla fit commemoratio.

Ad sextam. Capitulum.

Petrus quidem servabatur in carcere, oratio autem fiebat sine intermissione ab ecclesia ad deum

pro eo. ℟. Deo gratias.

Ad nonam. Capitulū.

Et petrus ad se reversus, dixit: nunc scio vere, quia misit dominus angelum suum, et eripuit me de manu herodis, et de omni expectatione plebis iudeorum. ℟. Deo gratias.

In cōmemo S. Pauli. Ad

Bonum certamen laud. cap.

certavi, cursum consummavi fidē servavi: in reliquo reposita est mihi corona iustitie, quam reddet mihi dominus in die illa iustus iudex.

Oratio.

Deus, qui multitudinem

gentiū

gentium beati Pauli apostoli praedicatione docuisti: da quaesumus, ut cuius natalitia colimus; eius apud te patrocinia sentiamus. Per dominum nostrum Iesum.

Ad sextam. Capitul.

Ne magnitudo revelationum extollat me, datus est mihi stimulus carnis meae, angelus satanae, qui me colaphizet: propter quod ter dominum rogavi, ut discederet a me: et dixit mihi: sufficit tibi gratia mea. ℟. Deo gratias.

Ad nonam. Capitulum.

Ego enim sum minimus

apostolorum

apostolorum, qui non sum dignus vocari apostolus, quoniam persecutus sum ecclesiam dei: gratia autem dei sum id quod sum, et gratia eius in me vacua non fuit. ℞. Deo gratias:~



In festo Visitationis b. m. v. Cap. ut in parvo off.

Famulis tuis, oratio.

quaesumus domine, caelestis gratiae munus impertire: ut quibus beatae Virginis partus extitit salutis exordium, Visitationis eius votiva solemnitas, pacis tribuat

incrementum

incrementum. Per dominum nostrum Jesum christum filium.

De SS. processi et martiniani. ora.

Deus, qui nos sanctorum martyrum tuorum processi et martiniani gloriosis confessionibus circumdas et protegis: da nobis et eorum imitatione proficere, et intercessione gaudere. Per dominum nostrum iesum christum. filium tuum. Qui tecum vivit et regnat in unitate spiritus sancti deus.

Translatio Sti. Martini. Confessoris. Oratio.



Eus qui populo tuo aeternae salutis beatum N ministrum tribuisti: praesta quaesumus, ut quem doctorem vitae habuimus in terris, intercessorem habere mereamur in celis. Per dominum nostrum Jesum christum filium.

S. Martialis. confess. ora.

O. mnipotens sempiterne deus, qui beatum martialem pontificem, ecclesiae tuae sanctae praeesse voluisti, quaesumus, nobis eius suffragantibus meritis pietatis

tuae

tuæ gratiam largiaris. Per do
minum nostrum nostrum.

In Octaua Apostolorum petri
et Pauli. Oratio.

Deus, cuius dextera beatum
petrum ambulantem in fluctibus
ne mergeretur, erexit: et coapostolum
eius paulum, tertio naufragantentem,
de profundo pelagi liberauit:
exaudi nos propitius, et
concede: vt amborum meritis æternitatis
gloriam consequamur.
Qui viuis et regnas cum deo.

SS. septem fra. mar. ora.
Præsta quæsumus omn

nipotens deus: ut qui gloriosos
martyres, fortes in sua confessio-
ne cognovimus: pios apud te
in nostra intercessione sentiamus.
Per dominum  Sancti Iauini
nostrum Iesum. martyris. ora.
P Raesta quaesumus. De
communi unius mar.
S. Turiani confessoris. ora.
D A quaesumus. De commun.
S. bonauenturae. conf. ora.
D Eus qui populo tuo.
De communi. confesso.
S. Arnulphi. episc. et mar. ora.
P Raesta quaesumus omnipo

tens

tenus deus, ut intercedente beato arnulpho martyre tuo atque pontifice, et a cunctis adversitatibus liberemur in corpore, et a pravis cogitationibus mundemur in mente. Per dominum nostrum iesum christum filium.

S. Margarete V. et m. o.

Deus, qui beatam margaritam virginem, per martyrii palmam celestem fecisti conscendere gloriam: concede nobis quesumus, ut eius exempla sequentes, ad te pervenire mereamur. Per dominum nostrum iesum.

D S. Victoris. m. ora.
Eus qui beatum Victorem martyrem tuum, contra hostis antiqui sevitiam dimicantem, angelica visitatione confortasti: eius intercedentibus meritis, ab omni nos absolve peccatorum vinculo: et in aeterna laetitia fac gaudere cum illo. Per dominum nostrum iesu.

P S. praxedis v. et m. ora.
Raesta quaesumus domine, mentibus nostris, cum exultatione provectum: ut beatae praxedis virginis, cuius

dicm

diem annua devotione colimus, fidei constantiam subsequamur. Per dominum nostrum iesum.

**S. Marie magdalene. O.**

Beate marie magdalene, quesumus domine, suffragiis adiuvemur: cuius precibus exoratus, quatriduanum fratrem lazarum vivum ab inferis resuscitasti, Qui vivis et regnas.

**S. Apolinaris. Oratio.**

Deus fidelium remunerator animarum, qui hunc diem beati appollinaris sacerdotis tui martyrio consecrasti tribue nobis

quesumus famulis tuis: ut cu-
ius venerandam celebramus fe
stiuitatem, precibus eius indul
gentiam consequamur. Per
dominum nostrum Iesum. &c.

S. Iacobi Apostoli. ora.

Esto domine plebi tue
sanctificator et custos: ut apo
stoli tui Iacobi munita presi
diis, et conuersatione tibi pla
ceat, et secura mente deseruiat.
Per dominum nostrum iesum.

S. Cucufatis

Presta quesumus. De
communi.

P S. christophori m. ora.

Rasta domine quaesumus ut sicut populus christianus martyris tui Christophori temporali solemnitate congaudet, ita perfruatur aeterna, et quod votis celebrat comprehendat effectu. Per dominum nostrum iesum.

D S[te] Anne V. ora.

Eus, qui beatae Annae tantam gratiam conferre dignatus es, ut genitricis unigeniti filij tui mater effici mereretur: concede propitius, ut cuius solemnia celebramus, eius apud te patroci

mys admittimur. Per eundem dominum nostrum Jesum xpm.

S. Felicis sociorum. Ora.

Praesta quaesumus domine, ut sicut populus christianus martyrum tuorum Felicis, simplicij, Faustini, et Beatricis temporali solemnitate congaudet: ita perfruatur aeterna: et quod votis celebrat, comprehendat effectu. Per do. no. Jesum christum.

SS. Abdon socio. Ora

Deus qui sanctis tuis Abdon et Sennen ad hanc gloriam veniendi copiosum munus gratie

tiæ contulisti: da famulis tuis:
suorum veniam peccatorum: vt
sanctorum tuorum intercedenti-
bus meritis ab omnibus mere
amur aduersitatibus liberari.
Per dominum nostrum Jesum.
S. Germani Antist. cōfes.
Exaudi quæsumus. de cōmu.
In festo S. petri Ad vincula.
Capitula vt in festo s^ti.
petri. Oratio.
Deus, qui beatum petrum
apostolum à vinculis absolutum,
illesum abire fecisti: nostrorum
quæsumus absolue vincula pecca

torum: et omnia mala a nobis propitiatus exclude. Per dominum nostrum iesum christum.

SS. martyr. machabeor. o.

Ratrina nos domine martyrum tuorum corona letificet: que et fidei nostre prebeat incrementa virtutum: et multiplici nos suffragio consoletur. Per dominum nostrum.

SS. Stephani pape et m. o.

Deus qui nos annua. De communi unius martyris.

In Inventione S. Stephani m. omnia ut in festo:—

S. Dominici. confessoris oratio.
Deus, qui ecclesiam tuam
beati Dominici confessoris tui
illuminare dignatus es meritis
et doctrinis, concede, ut eius in-
tercessione temporalibus non
destituatur auxiliis, et spiritu-
alibus semper proficiat incre-
mentis. Per dominum nostrum.
S. Marthe V. Oratio.
Omnipotens sempiterne
Deus, cuius filius in aede beatae
Marthae hospitari dignatus est,
quaesumus, ut eius meritis
quae illum placide suscepit, in-

ac de polorum misericorditer hospitari mereamur. Per eundẽ dominum nostrum Iesum &c.

In festo Transfiguracationis Domini. Capitulũ.

Salvatorem expectamus dominum nostrum Iesum christum, qui reformabit corpus humilitatis nostrae configuratum corpori claritatis suae. ℟. Deo gratias.

Oratio.

Deus, qui fidei sacramẽta in unigeniti tui gloriosa transfiguratione patrum testimonio

monio roborasti: et adoptio-
nem filiorum perfectam, voce
delapsa in nube lucida, mirabi-
liter presignasti: concede pro-
pitius, ut ipsius regis glorie
nos coheredes efficias, et eius-
dem glorie tribuas esse consor-
tes. Per eundem dominum
nostrum iesum christum. etc.

Ad sextam. Capitul.

Nos omnes revelata fa-
cie gloriam domini speculan-
tes, in eandem imaginem trās-
formamur a claritate in clari-
tatem, tamquam a domini spi-
ritu

ritu. ℟. Deo gratias. Ym.

Ad nonam. Capitul.

Sustulit me in spiritu in montem magnum et altum, et ostendit mihi ciuitatem sanctam ierusalem, descendentem de celo a deo, habentem claritatem dei, et lucerna eius est agnus. ℟. Deo gratias: —

Ss. Xisti, felicissimi et Agap. Oratio.

Deus qui nos concedis. De communi plurimor. mr.

Sti. Lupi confess. ora.

Deus qui beatum lupum antistitem christiane fidei tribu-

sti esse deffensorem, praesta ut
cuius suffragantibus meritis spi
ritus sancti gratia nos illumina
re digneris. Per dominum. etc.

S. Donati epis. et mr. Oratio

Deus tuorum gloria sa
cerdotum: praesta quaesumus, ut
sancti martyris tui et episcopi
donati, cuius festa gerimus, senti
amus auxilium. Per dominum.

SS. Cyriaci largi et smarag. oratio

Deus, qui nos annua san
ctorum martyrum tuorum cyria
ci, largi, et Smaragdi solemnita
te laetificas: concede propitius, ut

quorum natalitia colimus: vir
tutem quoque passionis imite
mur. Per dominum nostrum.

S. Romani mar. Oratio.
Presta quesumus. De commun.

In Vigilia S. Laurentii. Ora.

Adesto domine supplicati
onibus nostris: et intercef
sione beati Laurentii martyris
tui, cuius preuenimus festiuita
tem, perpetuam nobis misericor
diam benignus impende. Per
dominum nostrum Iesum xpm.

In festo S. Laurentii. Capitulum.

Qui parce seminat, parce et metet: et qui seminat in benedictionibus, de benedictionibus et metet. ℟. Deo gratias.

Oratio.

Da nobis, quaesumus omnipotens deus, vitiorum nostrorum flammas extinguere, qui beato Laurentio tribuisti tormentorum suorum incendia superare. Per dominum nostrum iesum christum.

Ad Sextam. Capitulum.

Unus quisque prout destinauit in corde suo, non ex

tristitia, aut ex necessitate: hilarem enim datorem diligit deus. ℟. Deo gratias.

Ad nonam. Capitul.

Potens est autem deus omnem gratiam abundare facere in vobis: ut in omnibus semper omnem sufficientiam habentes, abundetis in omne opus bonum, sicut scriptum est: dispersit, dedit pauperibus, iustitia eius manet in seculum seculi.

In festo Susceptionis Sancte Corone. Capitul.

Egredimini filie sion

et videte regem salomonem in diademate, quo coronavit eum mater sua. ℟. Deo gratias.

Oratio.

Praesta quaesumus omnipotens deus, ut qui in memoriã passionis domini nostri Iesu christi coronam eius spineam veneramur in terris: ab ipso gloria et honore coronari mereamur in caelis. Qui tecum vivit.

De ss. Tiburtij, m. ora. Praesta quaesum. De commun.

Ad sextam. Capitul.

Vidi, et ecce equus albus,

et qui sedebat super illum habebat
arcum, et data ei corona, et exivit
vincens ut vinceret. ℟ Deo gra.

I Ad nonam. Capitu.

N illa die erit dominus
exercituum corona gloriæ, et
sertum exultationis residuo po
puli sui. ℟ Deo gratias.

O S. Radegundis. Ora.

Mnipotens sempiterne
deus, largitor probitatis ac remu
nerator da mentibus nostris san
cte vivendi affectum. et concede
ut qui vitiorum labe corrumpimur
beatissimæ famulæ tuæ Radegun

dis

dis intercventu salvemur. Per
dominum nostrum iesum xpm.

S. hippolyti. socio. ora.

Da quesumus omnipotens
deus, ut beatorum martyrum tuo
rum hippolyti et cassiani veneran
da solemnitas, et devotionem no
bis augeat et salutem. Per domi
num nostrum iesum christum.

S. Eusebij confess. ora.

Deus qui nos beati eusebij
confessoris tui annua solemnitate
letificas: concede propitius, ut
cuius natalitia colimus, per eius
ad te exempla gradiamur. Per

In festo Assumptionis. b. m. v. Capitul.

In omnibus requiem quaesivi, et in hereditate domini morabor: tunc praecepit et dixit mihi creator omnium: et qui creavit me requievit in tabernaculo meo. ℟ Deo grati.

Oratio.

Veneranda nobis, domine, huius diei festivitas opem conferat salutarem: in qua sancta dei genitrix mortem subiit temporalem: nec tamen mortis

nexib[us]

neribus deprimi potuit, quae filium tuum dominum nostrum Iesum christum de se genuit incarnatum. Qui tecum vivit et.

Ad sextam, Capitul.

Et sic in sion firmata sum, et in civitate sanctificata similiter requievi, et in ierusalem potestas mea: et radicavi in populo honorificato, et in parte dei mei hereditas illius, et in plenitudine sanctorum detentio mea. ℟ Deo.

Ad nonam. Capitu.

In plateis, sicut cinnamomum et balsamum aromatizans

odorem dedi: quasi myrrha electa dedi suavitatem odoris. R. Deo.

S(an)cti Rochi confess(oris). Ora(tio).

Deus, qui beato Rocho per angelum tuum tabulam eidem afferentem promisisti ut qui ipsum pie invocaverit a nullo pestis cruciatu lederetur praesta quaesumus, ut qui eius memoriam agimus ipsius meritis a mortifera peste corporis et animae liberemur. Per dominum nostrum.

In Octava S(an)cti Laurentii. O(ratio).

Beati Laurentii nos faciat domine passio veneranda letantes:

et

et ut eam sufficienter recola-
mus, efficiat promptiores.
Per dominum nostrum Iesum.

S. Agapiti mart. ora.

Laetetur ecclesia tua, deus,
beati Agapiti martyris tui confi
sa suffragiis: atque eius precibus
gloriosis et deuota permaneat,
et secura consistat. Per domi
num nostrum iesum christum.

S. Magni mart. ora.

Adesto domine supplica
tionibus nostris et intercedente
beato magno martyre tuo ab
hostium nos defende propitiatus

incursu. Per dominum nostrū iesum christum filium tuum.

SS. Thimothei et simpho. ō.

Auxilium tuum nobis domine, quaesumus, placatus impende: et intercedentibus beatis martyribus tuis Timotheo hippolyto, et Symphoriano dexteram super nos tuae propitiationis extende. Per dominum nostrum iesum christū.

SS. Thimothei. et Apollina. ō.

Deus, qui nos annua beatorum martyrum tuorum Timothei et apollinaris solemnitate laetificas

tificas eorum quæsumus continua intercessione super nos misericordiã tuam multiplica: ut quorum patrocinijs gratulamur, ipsorum suffragijs perpetuæ salutis auxilium nobis a desse sentiamus. Per dominum nostrum iesum xpm.

S. Bernardi Abb. Ora.
Intercessio. De communi.
Sti. Bartholomei Apostoli. O.

Omnipotens sempiterne deus: qui huius diei venerandã sanctam que letitiam, in beati Apostoli tui bartholomei festiuitate tribuisti, da ecclesiæ tuæ, quæsum

et

et amare quod credidit, et predi
care quod docuit. Per dominum
nostrum Jesum xpm f. t. Qui.
De S. Andoeni confess. ora.
A quesumus. De communi.
In festo Sancti Ludouici Regis
Capitulum.
Benedictus dominus deus
patrum nostrorum, qui dedit
hanc voluntatem in cor regis
clarificare domum suam, que est
in ierusalem. R. Deo gratias.
Oratio.
Deus. qui beatum ludoui
cum confessorem tuum de terreno
regno ad celestis regni gloriam

transtulisti: eius quaesumus meritis et intercessione, regis regni Iesu christi filii tui facias nos esse consortes. Per eundem dominum nostrum Iesum christum filium.

Ad sextam. Capitulum.

In gentibus multis non erat rex similis illi, et dilectus deo suo erat, et posuit eum deus regem super israel. R. Deo gratias.

Ad nonam. Capitulum.

Magnificavit eum dominus super omnem israel, et dedit illi gloriam regni, qualem nullus ante eum habuit rex. R. Deo gratias.

SS. Georgii, et Aurelii. Oratio.

O Mnipotens sempiterne deus, qui in sanctorum tuorum cordibus flammam tue dilectionis: da mentibus nostris, eamdem fidei charitatisque virtutem, ut quorum gaudemus triumphis, perfruamur exemplis. Per dominum nostrum iesum christum.

A S. Ruffi m[r]. Oratio.
Adesto dn̄e suppli. De cōmuni.

In festo S[ti]. Augustini conf. p. n. Oratio.

Adesto supplicationibus nostris omnipotens deus,

et

et quibus fiduciam sperandae pietatis indulges: intercedente beato Augustino confessore tuo atque pontifice, consueta misericordie tribue benignus effectum. Per dominum. In decollatione S[ti]. Joannis baptiste. Ora

Sancti Joannis baptiste, precursoris et martyris tui, quesumus domine, veneranda festivitas, salutaris auxilij nobis prestet effectum. Qui vivis et regnas.

S. mederici Abbatis. Ora. Intercessio. De communi. S[te]. Sabinae Virginis et martyris. Oratio.

Deus qui inter cetera potentie tue miracula etiam in sexu fragili victoriam martyrij contulisti: concede propitius ut cuius natalitia colimus, per eius ad te exempla gradiamur. Per dominum nostrum Jesum.

S. fiacrj, confess. ora.

Misericordiam tuam domine nobis, quesumus, interveniente beato fiacrio confessore tuo clementer impende, et nobis peccatoribus ipsius propitiare suffragijs. Per dominum nostrū.

SS. felicis et Adaucti. ora.

Maiestatem tuam domine

sup

supplices exoramus: ut sicut nos
iugiter sanctorum tuorum com-
memoratione laetificas: ita semper
supplicatione defendas. Per domi-
num nostrum iesum christum.

D S. lupi epis. et conf. ora.
A quaesumus o. de commun.
Sti. prisci martyris. Ora.

Omnipotens sempiterne deus
fortitudo certantium et
martyrum palma solemnitatem
hodiernae diei propitius intuere
et ecclesiam tuam fac celebritate
laetari: ut intercessione beati mar-
tyris tui prisci omnium in te
credentium vota perficias. Per

dominum nostrum Iesum . ec.

I S. Egidii abba. ora.
ntercessio. de communi.

S. Evurtii episcopi et cof. ora.

G Loriosus confessor tuus
Evurtius qui preclare
virtutis demonstrante indicio
electus plebis tue et institutus
est pastor quesumus omnipo-
tens deus ut nobis obtineat ve-
niam peccatorum. ut eius sacro
interventu perpetue consolatio-
nis gaudia mereamur. Per
dominum nostrum iesum xpm.

D S. Clodoaldi pbri. ora.
eus qui nos beati. de com.

In festo Natiuitatis B. M. Virginis. Ad Capitulum.

Ab initio, et ante sæcula creata sum et usque ad futurum sæculum non desinam, et in habitatione sancta coram ipso ministraui. ℟. Deo gratias.

Oratio.

Famulis tuis, quæsumus domine, cælestis gratiæ munus impertire: ut quibus beatæ Virginis partus extitit salutis exordium, Natiuitatis eius uotiua solemnitas, pacis tribuat in

crementum. Per dominum
nostrum Jesum christum filiũ.
Ad sextam. Capitul.
Et sic in sion firmata sũ
et in ciuitate sanctificata similiter
requieui, et in ierusalem potestas
mea: et radicaui in populo hono
rificato, et in partes dei mei here
ditas illius, et in plenitudine sã-
ctorum detentio mea. R. Deo.
Ad nonam. capitu.
In plateis sicut cinnamo
mum et balsamum aromatizans
odorem dedi: quasi mirrha electa
dedi suauitatem odoris. R. Deo.
S. Gorgonij. martyris. ora.

SAnctus tuus domine
Gorgonius sua nos intercessio
ne letificet: et pia faciat sole
nitate gaudere. Per dominum
nostrum iesum christum filiu.
B SS. Prothi et hiacinthi. o
Beatorum martyrum ra
tuorum Proti et hyacinthi nos
domine foveat pretiosa confes-
sio, et pia iugiter intercessio
tueatur. Per dominum nostr.
In festo exaltationis S. Cru
cis. Cap. ut i festo Inuentio.
Deus, qui nos hodierna
die exaltationis sancte Crucis

annua solemnitate laetificas: prae
sta quaesumus, ut cuius mysteri-
um in terra cognovimus, eius-
redemptionis praemia in caelo me
reamur. Per eundem dominum.

S. Nicomedis marty. ora

Adesto domine populo tuo:
ut beati Nicomedis martyris tui-
merita praeclara suscipiens, ad-
impetrandam misericordiam tuam
semper eius patrociniis adiuve
mur. Per dominum nostrum.

SS. Cornelii et cypriani. o.

Beatorum martyrum, pa
riterque pontificum, Cornelii

et

Cypriani nos quesumus domine festa tueantur: et eorum commendet oratio veneranda. Per dominum nostrum iesum, etc.

P SS. Eufemie lucie et Gemi.

Raesta domine, precibus nostris cum exultatione proventum: ut sanctorum martyrum Euphemie, lucie, et Geminiani, quorum diem passionis annua devotione recolimus: etiam fidei constantiam subsequamur. Per dominum nostrum iesum.

I S. Lamberti epis. et m[r]. ora.

nfirmitatem. de communi.

Vigilia S. mathei. Ora.

Da quesumus omnipotens deus, ut beati matthei apostoli tui et euangeliste, quam preuenimus, ueneranda solemnitas, et deuotionem nobis augeat, et salutem. Per dominum nostrum.

In festo S. mathei. Ora.

Beati Apostoli et euangeliste Matthei, domine precibus adiuuemur: ut quod possibilitas nostra non obtinet, eius nobis intercessione donetur. Per dominum nostrum iesum christum.

S. Maurici sociorumque eius. Ora.

Da nunc quæsumus omnipotens deus: vt sanctorum martyrum tuorum mauritij, et sociorum eius, nos lætificet festiua solemnitas: vt quorum suffragijs nitimur, eorum natalitijs gloriemur. Per dominum nostrum Jesum christum. ec.

S. Solennis, ep. et cōf. ora.

Da quæsumus, de communi.

S. firminj epis. et marty. ora.

In firmitatem, de communi.

S. Ceraunj epis. et conf. oratio.

Da quæsumus, de communi.

SS. Cosmæ et damiani, m̄r. oratio.

Praesta quaesumus omnipotens deus: ut qui sanctorum martyrum tuorum Cosme et damiani natalitia colimus, a cunctis malis imminentibus, eorum intercessionibus liberemur. Per dominum nostrum iesum.

S. Michaelis. Capitulum

Significavit deus quae oportet fieri cito loquens per angelum suum servo suo ioanni: qui testimonium perhibuit verbo dei: et testimonium Iesu christi quaecumque vidit. ℟. Deo gratias. Oratio.

Deus

Deus, qui miro ordine,
Angelorum ministeria, hom
minumque dispensas: concede pro
pitius: ut quibus tibi ministrã
tibus in caelo semper assistitur,
ab his in terra vita nostra muni
atur. Per dominum nostrum.
Ad sextam. capitulũ.
Audivi vocem angelorũ
multorum in circuitu throni,
et animalium, et seniorum: et
erat numerus eorum millia
millium, voce magna dicentiũ:
salus deo nostro. Ad nonam. cap.
Factum est praelium ma

gnũ

gnum in cęlo. Michael et ange-
li eius prelabantur cum dracone:
et draco pugnabat, et angeli eius:
et non preualuerunt, neque locus
inuentus est eorum amplius in
cęlo. ℟. Deo gratias.

Oratio.

Deus, qui ecclesię tuę in-
exponendis sacris scripturis beatū
hieronymum confessorem tuum,
doctorem maximum prouidere
dignatus es: presta quesumus,
ut eius suffragantibus meritis,
quod ore simul et opere docuit, te
adiuuante exercere ualeamus.
Per dominum nostrum iesum.

S. Remigij ep. et cõf. ora.

Deus qui per beati Remigij confessoris tui atque pontificis documenta francorum tibi colla subdidisti ferocia largire suppli cibus tuis ut per iter salutis quo dam pastor incessit dono tuæ pie tatis ad te gradiamur. Per do minum nostrum. SS. Germani

Vedasti et bauonis, cõf. ora

Deus qui nos san. de cõmuni.

S. leodegarij. martyris. oratio.

Omnipotens sempiterne deus sancto leodegario sacerdo te et martyre tuo intercedente cuius hodie natalicia celebramus

nostrae fragilitati diuinum prae
tende subsidium, ut misericordiã
sempiternam per quam felix illiꝰ
anima exultet nos saltem sincera
professione mereamur. Per do
minum nostrum iesum.

S. francisci, confess. ora.

Deus, qui ecclesiam tuam
beati francisci meritis foetu nouae
prolis amplificas: tribue nobis
ex eius imitatione terrena despice
re, et caelestium donorum semper
participatione gaudere. Per do
minum nostrum iesum christũ.

S. Aureae virginis. ora.

Exaudi nos. de communi.

S. marci pap. et cõf. ora.

Exaudi domine preces nostras, et in tercedente beato marco confessore tuo atque pontifice, supplicationes nostras placatus intende. Per dominum nostrum iesum.

S. marcelli sociorũqz eius. ora.

Sanctorum martyrum tuorum nos domine, sergij. bacchi. marcelli, et apulei, beata merita prosequantur: et tuo semper faciant amore feruentes. Per dominum.

In festo SS. martyrũ Dionisij Rustici et Eleutherij. cap.

Stans paulus in medio areopagi, ait: viri athenienses, per

omnia quasi superstitiosiores vos-
video: preteriens enim, et videns
simulacra vestra, inveni et aram,
in qua scriptum erat, ignoto deo:
quod ergo ignorantes colitis, hoc
ego annuntio vobis. ℟. Deo gr.

Oratio.

Deus qui hodierna die be
atum Dionysium martyrem tu
um atque pontificem, virtute cō
stantie in passione roborasti, qui-
que illi ad predicandum gentibꝰ
gloriam tuam, Rusticum et eleu
therium sociare dignatus es: tri
bue nobis quesumus, ex eorum
imitatione, pro amore tuo prospe

ra

ra mundi despicere, et nulla eius
adversa formidare. Per dominum
nostrum iesum christum filium.

Ad Sextam. capitulum

Cum audissent autem
resurrectionem mortuorum, qui-
dam quidem irridebant, quidam
vero dixerunt: audiemus te de
hoc iterum: sic paulus exivit
de medio eorum. ℟. Deo gratias.

Ad nonam. capitulum.

Quidam vero viri adhaeren-
tes ei, crediderunt: in quibus
et dionysius areopagita, et
mulier nomine damaris, et
alii cum eis. ℟. Deo gratias.

De S. Calisti pap. et m. Ora.
Deus, qui nos conspicis ex
nostra infirmitate deficere: ad amo
rem tuum nos misericorditer per
sanctorum tuorum exempla re
staura. Per dominum nostrū.
In octaua SS. Dionisij. Rustici,
et eleutherij martyr. oratio.
Protegat nos domine sæ-
pius beatorum martyrum
tuorum Dionysij, Rustici, et eleu
therij repetita solemnitas: vt quo
rum patrocinia sine intermissio-
ne recolimus, perpetuam defensio-
nem sentiamus. Per dominū
nostrum iesum christum filium:-

D S. Ambrosij Byturicensis. o.
a quæsumus. de communi.
In festo S^ti. lucæ euangelistæ. o.

Interveniat pro nobis, quæsumus domine, sanctus tuus lucas euangelista: qui crucis mortificationem iugiter in suo corpore, pro tui nominis honore portavit. Per dominum nostrum iesum christum. &c.

E S. Maglorij episco. ora.
xaudi q̃s. de communi.
SS. crispini et crispiniani. ora.

Deus qui nos concedis.
Vigilia Sanctorum
simonis et Iudæ. or. preces.

Concede quæsumus omnipotens deus: vt sicut apostolorum tuorum simonis et Iudæ gloriosa natalitia prævenimus: sic ad tua beneficia promerenda maiestatem tuam pro nobis ipsi præveniant. Per dominum no.



In festo Translationis Sanctæ Genovefæ. Ora.

Deus, qui nos hodierna die beatissimæ Virginis Genovefæ translatione tribuisti gaudere: concede propitius, vt eius adiuvemur meritis, cuius castitatis

instruimur exemplis. Per domi
num nostrum Iesum christum.

In festo ss. Simonis et iude.

Deus, qui nos per beatos a
postolos tuos Simonem et iudã
ad agnitionem tui nominis veni
re tribuisti: da nobis eorum glo
riam sempiternam et proficiendo
celebrare, et celebrando proficere.
Per dominum nostrum iesum.

S. Quintini marty. ora.

Adesto domine supplicatio
nibus nostris, et intercessione
beati quintini martyris tui, per
petuam nobis misericordiam be
nignus impende. Per dominũ.



In festo omnium Sanctorum. Capitulum.

Ecce ego Joannes vidi alterum angelum ascendentem ab ortu solis habentem signum dei vivi: et clamavit voce magna quatuor angelis, quibus datum est nocere terre et mari, dicens: nolite nocere terre et mari, neque arboribus, quoadusque signemus servos dei nostri in frontibus eorum.



Oratio.

Omnipotens sempiterne deus, qui nos omnium

sanctorum tuorum merita sub-
una tribuisti celebritate venera
ri: quaesumus, ut desideratam
nobis tuae propitiationis abun
dantiam, multiplicatis intercessoribus largiaris. Per dominum
nostrum Jesum christum filium.

Ad Sextam. Capitul.

Post haec vidi turbam magnam quam dinumerare nemo
poterat, ex omnibus gentibus,
et tribubus, et populis, et linguis
stantes ante thronum dei, in conspectu agni, amicti stolis albis,
et palmae in manibus eorum.

Ad nonam. Capitulum.

Benedictio, et claritas, et sapientia, et gratiarum actio, honor, virtus, et fortitudo deo nostro, in saecula saeculorum. Amen.

Commemoratio fidelium defunctor. ut in officio. Ora.

Fidelium deus omnium.

S. Marcelli episcopi et confes.

Oratio.

Da nobis, quaesumus domine, famulis tuis inviolabile fidei firmitatem: ut beati Marcelli confessoris atque pontificis transitum celebrantes, meritis ipsius intervenientibus regni

celestis

celestis gaudia consequamur. Per dominum nostrum iesum.

P SS. Quatuor coronator: or.

Resta quesumus omnipotens deus: ut qui gloriosos martyres fortes in sua confessione cognovimus: pios apud te in nostra intercessione sentiamus. Per dominum nostrum iesum.

D S. Theodori martyris. ora

Eus, qui nos beati theodori martyris tui confessione gloriosa circumdas et protegis: presta nobis, ex eius imitatione proficere, et oratione fulciri. Per dominum nostrum iesum.

D S[ti]. martini pap et m[r]. ora.
eus qui nos beati. de commun.



In festo S. Martini, Archiepiscopi et confessoris.

Oratio.

Eus, qui conspicis. quia ex nulla nostra virtute subsistimus: concede propitius, ut intercessione beati Martini confessoris tui atque pontificis, contra adversa omnia muniamur. Per dominum nostrũ.

SS. Baccty, et Gendulphi. ora.
Deus qui nos sanctorum. de com.
Translatio S. Ceraunni episc. ora.
Deus qui populo. de commun.
S. Amani, episcop, et conf. o.
Da quaesumus. de commun.
S. Aldae virginis. oratio.
Exaudi nos deus. de commun.
S. Elisabeth. viduae. oratio.
Tuorum corda fidelium deus miserator illustra: et beatae elisabeth precibus gloriosis, fac nos prospera mundi despicere, et caelesti semper consolatione gaudere. Per dominum nostrum Jesum christum filium tuum.

In festo Presentationis B. Mariae Virginis. cap. ut in pryno off. ora.

Deus, qui beatam mariam semper virginem, spiritus sancti habitaculum, hodierna die in templo presentari voluisti: presta quesumus, ut eius intercessione in templo glorie tue presentari mereamur. Per dominum nostrum Jesum christum filium:-

S. Cecilie Virginis. ora.

Deus, qui nos annua beate Cecilie virginis et martyris tue solemnitate letificas: da, ut

quam

quam veneramur officio, etiam
piae conversationis sequamur
exemplo. Per dominum nostrum.

S. Clementis pap. et mr. O.

Deus, qui nos annua be
ati Clementis martyris tui at
que pontificis solemnitate lae
tificas: concede propitius, ut cu
ius natalitia colimus, virtutem
quoque passionis imitemur.
Per dominum nostrum iesum.

S[te] felicitatis mart. Ora.

Praesta quaesumus omni
potens deus: ut beatae felicitatis
martyris tuae solemnia recensen
tes, meritis ipsius protegamur,

et precibus. Per dominum no
strum Iesum christum filium :
S. Chrysogoni, mart. Ora.
Adesto domine supplicatio
nibus nostris: ut qui ex iniqui
tate nostra reos nos esse cognos
cimus, beati chrysogoni marty
ris tui intercessione liberemur.
Per dominum nostrum iesum.
Ste. Catherinae Virginis. Ora.
Deus, qui dedisti legem
moysi in summitate montis sinai,
et in eodem loco per sanctos an
gelos tuos corpus beatae Catheri
nae Virginis et martyris tuae mi

rabiliter collocasti: praesta quaesumus, ut eius meritis et intercessione, ad montem qui christus est, pervenire valeamus. Per eundem dominum nostrum iesum:-



In festo S. Genovefae V. de miraculo Ardentium.

Deus, qui beatae Genovefae Virginis excellentiam, multiplici virtutum gloria declarasti: concede nobis, quaesumus, ut qui hodierna die per gratiam tuam in membris humanis ignis horrendi consumpsit incendium: nos quoque a gehennae incendiis liberatos, ad gaudia

trans ferat angelorum. Per dominum nostrum Iesum christum :-

O S. Siffredi epi. et cof. ora. A quesumus. de communi:-



Dedicatio ecclesie beate Genouefe:

Capitulum.

In ciuitatem sanctam ierusalem nouam descendentem de celo a deo, paratam, sicut sponsam ornatam viro suo. R. Deo

Oratio.

Deus, qui nobis per singulos



gulos annos huius sancti tem
pli tui consecrationis reparas-
diem, et sacris semper mesterijs
representas incolumes: exaudi-
preces populi tui, et presta: ut
quisquis hoc templum beneficia-
petiturus ingreditur, cuncta se-
impetrasse letetur. Per dominum
nostrum Jesum christum filium.

Ad completorium. et Ad primam. dr:

DEus, qui de vivis et
electis lapidibus eternum maie
stati tue condis habitaculum:
auxiliare populo tuo supplicanti



ut quod ecclesiae tuae proficit in corporalibus spatiis, spiritualibus amplificetur augmentis. Per dominum nostrum Iesum Christum.

Ad sextam. Capitulum.

Et audivi vocem magnam de throno, dicentem: ecce tabernaculum dei cum hominibus, et habitabit cum eis: et ipsi populus eius erunt, et ipse deus cum eis erit eorum deus.

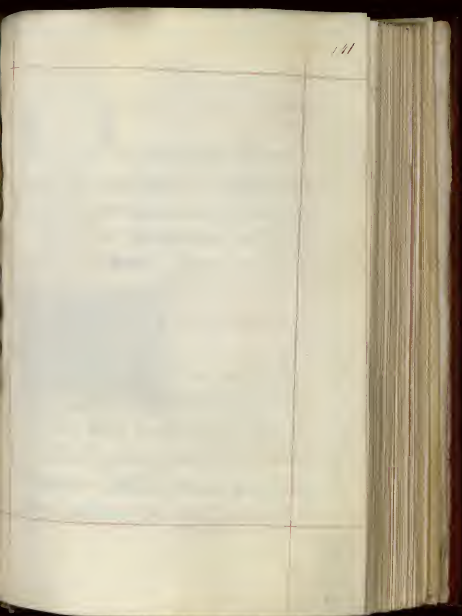
Ad nonam. Capitulum.

Et absterget deus omnem lacrymam ab oculis eorum, et mors ultra non erit, neque lu

ctus

ctus, neque clamor, neque dolor
erit ultra, quia prima abierunt:
et dixit qui sedebat in throno:
ecce nova facio omnia.
Deo gratias:—




141



De Communi Sanctorum.
Oratio.
Da quesumus omnipotens deus, ut beati N. Apostoli tui, quam preuenimus, ueneranda solemnitas; et deuotionem nobis augeat, et salutem. Per dominum.
In Vigilia Apostolorum.
Capitulum.
Iam non estis hospites et aduene: sed estis ciues sanctorum, et domestici dei, superedificati supra fundamentum apostolorum et prophetarum, ipso summo angulari lapide
xpo

christo iesu. ℟. Deo gratias.

Ad sextam. Capitulum.

Per manus autem apostolorum fiebant signa et prodigia multa in plebe. ℟. Deo gratias.

Ad nonam. Capitulum.

Ibant apostoli gaudentes a conspectu concilij, quoniam digni habiti sunt pro nomine iesu contumeliam pati. ℟. Deo gra.

In Natali evangelistarum. capi.

Dilecti deo et hominibus sancti evangeliste, qui ordinaverunt tempora christi bono odore

vsque ad consummationem vite.

S Ad sextam. Capitul.
Apientiam eorum narrãt
omnes populi, et laudem eorum
pronuntiat omnis ecclesia sanctorum.

R Ad nonam. Capitul.
Repleuit eos dominus spi
ritu sapientie et intellectus, io
cunditatem et exultationem the
saurizauit super eos. ℟ Deo gra.

S In cõmuni Apost.
et euangelist. nec nõ
duorum et plurium m. de temp.
Tabunt iusti in
magna constantia aduersus eos,
qui se angustiauerunt, et qui ab

stulert

tinuerunt labores eorum. ℟ Deo.

Ad sextam. Capitul.

Ecce quomodo computati sunt inter filios dei, et inter sanctos sors illorum est. ℟ Deo gra.

Ad nonam. Capitul.

Scimus quoniam diligentibus deum omnia cooperantur in bonum, his qui secundum propositum vocati sunt sancti. Deo.

In Natali unius martyris capitulum.

Beatus vir qui suffert tentationem: quoniam cum

probatus fuerit, accipiet coronam vite, quam repromisit deus diligentibus se. R. Deo gratias.

Pro martyre tantum. O.

P Resta quesumus omnipotens deus: ut qui beati N. martyris tui natalitia colimus: intercessione eius in tui nominis amore roboremur. Per dominum no:-

Alia. Oratio.

P Resta quesumus omnipotens deus: ut intercedente beato N. martyre tuo, et a cunctis adversitatibus liberemur in corpore: et a pravis cogitationibus mundemur in mente. Per dominum:-

Pro martyre et pontif. o.

Infirmitatem nostram respice omnipotens deus: et quia pondꝰ propriæ actionis grauat, beati N. martyris tui atque pontificis intercessio gloriosa nos protegat. Per dominum nostrum Iesum christū.

Alia. Oratio.

Deus, qui nos beati N. martyris tui atque pontificis annua solemnitate letificas: concede propitius, vt cuius natalitia colimus, de eiusdem etiam protectione gaudeamus. Per dominum nostrum.

Ad sextam capitu.

Cibauit illum pane vitæ

et intellectus, et aqua sapientiæ
salutaris potabit illum dominus
deus noster. ℟. Deo gratias.

Ad nonam capi.

Iustus cor suum tradidit
ad vigilandum diluculo ad domi-
num qui fecit illum: et in con
spectu altissimi deprecabitur:–

Commune plu
rimorum martyrum.

Ad vesperas. cap.

Iustorum animæ in
manu dei sunt. et non tanget il-
los tormentum mortis: visi sunt
oculis insipientium mori: illi au-
tem sunt in pace. ℟. Deo gratias.

Oratio.

Deus qui nos annua sanctorum martyrum tuorum N. et N. solemnitate letificas: concede propitius: ut quorum gaudemus meritis, accendamur exemplis. Per dominum nostrum.

Alia. Oratio.

Deus qui nos concedis sanctorum martyrum tuorum N. et N. natalitia colere: da nobis in eterna beatitudine de eorum societate gaudere. Per dominum.

Alia oratio pro pluribus martyribus et pontificibus.

Beatorum martyrum,

pariterque pontificum N. et
N. nos quesumus domine festa
tueantur, et eorum commendet
oratio veneranda. Per dominum:-
SS. fabiani et seba. o.
I N firmitatem nostram
respice omnipotens deus: et quia
pondus proprie actionis grauat:
beatorum martyrum tuorum fa
biani et Sebastiani intercessio
gloriosa nos protegat. Per
dominum nostrum iesum xpm:-
Ad sextam. Capitu.
R Eddet deus mercedem la
borum sanctorum suorum, et
deducet illos in via mirabili: et
fuit

sunt illis in velamento diei, et in luce stellarum nocte. ℟. Deo.

Ad nonam. Capitu.

Fulgebunt iusti, et tamquam scintillae in arundineto discurrent: iudicabunt nationes, et dominabuntur populis: et regnabit dominus illorum in perpetuum. ℟. Deo gratias.

Commune confessoris pontificis.

Ad vesperas. capitu.

Ecce sacerdos magnus, qui in diebus suis placuit deo, et inventus est iustus: et in tempore iracundiae factus est re

conciliatio. ℟. Deo gratias.

Oratio.

Da quesumus omnipotens deus: ut beati N. confessoris tui atque pontificis veneranda solemnitas, et devotionem nobis augeat et salutem. Per dominum.

Alia. Oratio.

Exaudi quesumus domine preces nostras, quas in beati N. Confessoris tui atque pontificis solemnitate deferimus: et qui tibi digne meruit famulari, eius intercedentibus meritis ab omnibus nos absolve peccatis. Per dominum nostrum iesum:—

Ad sextam. Capitu.

Non est inuentus similis illi, qui conseruaret legem excelsi: ideo iureiurando fecit illum dominus crescere in plebem suam.

Ad nonam. Capi.

Fungi sacerdotio, et habere laudem in nomine ipsius, et offerre illi incensum dignum in odorem suauitatis. R. Deo gratias.

In natali vnius confess. nō pontif. et vnius abb.

Beatus vir, qui inuentus est sine macula, et qui post aurum non abiit, nec sperauit in pecunia et thesauris: quis est

hic, et laudabimus eum: fecit enī mirabilia in vita sua. ℟ Deo gra.

Oratio.

Adesto domine supplicationibus nostris, quas in beati N. confessoris tui solemnitate deferimus: ut qui nostrae iustitiae fiduciam non habemus, eius, qui tibi placuit, precibus adiuvemur. Per dominum nostrum iesum christum :–

Alia Oratio.

Deus, qui nos beati N confessoris tui annua solemnitate laetificas: concede propitius: ut cuius natalitia colimus, etiam actiones imitemur. Per dominum nostrū :–

Pro vno tantum Abb. or.

Intercessio nos quesumus
domine beati N. Abbatis com-
mendet: vt quod nostris meritis
non valemus, eius patrocinio as-
sequamur. Per dominum no.

Ad sextam. capitulum.

Iustus cor suum tradidit
ad vigilandum diluculo ad domi
num qui fecit illum: et in con
spectu altissimi deprecabitur.

Ad nonam. capitu.

Iustum deduxit dominus
per vias rectas, et ostendit illi re
gnum dei, et dedit illi scientiam
sanctorum: honestauit illum in

laboribus, et complent labores illius. ℟. Deo gratias :—

In Natalitiis, plurimorum confess. incap.

Hi sunt viri misericordiae, quorum iustitiae oblivionem non acceperunt: cum semine eorum permanent bona: hereditas sancta nepotes eorum :—

Oratio ad omnes horas.

Deus, qui nos sanctorum confessorum tuorum pariterque pontificum N. et N. confessionibus gloriosis circumdas et protegis: da nobis ex eorum imitatione proficere, et intercessio

ne

ne gaudere. Per dominum nostr.

Pro cōfessorib' nō pontif. ō.

Anctorum confessorum tu-orum N. et N. nos domine fo-ueat preciosa confessio, et pia iu-giter intercessio tueatur. Per do-minum nostrum Iesum xpm.

Ad sextam. capitul'.

Isti in generationibus gentis sue gloriam adepti sunt, et in diebus suis habentur in laudibus. ℟ Deo gratias.

Ad nonam, capitul'.

In testamentis stetit semē eorum, et gloria eorum non de-relinquetur. ℟ Deo gratias:—



In Natalitijs. Virginum. Capitul.

Qui gloriatur, in domino glorietur: non enim qui seipsum commendat, ille probatus est, sed quem deus commendat.

Oratio.

Deus, qui inter cetera potentie tue miracula etiam in sexu fragili victoriam martyrij contulisti: concede propitius, ut qui beate N. virginis et martyris tue natalitia colimus, per eius ad te exempla gradiamur. Per dominum nostrum iesum:-

Alia. Oratio.

In dulgentiam nobis, quae
sumus domine, beata N. virgo et
martyr imploret: quae tibi grata se
per extitit, et merito castitatis,
et tuae professione virtutis. Per
dominum nostrum iesum xpm :-

Pro virgine non mar
tyre. oratio.

Exaudi nos -
deus salutaris noster: ut sicut de
beatae N virginis tuae festivita
te gaudemus: ita piae devotionis
erudiamur affectu. Per domi
num nostrum iesum christum:-

Pro plurib⁹ V. Oratio.

Da nobis, quaesumus do
mine deus noster, sanctarum vir-

ginum et martyrum N. et N.
palmas incessabili deuotione ve-
nerari: vt quas digna mente nō
possumus celebrare, humilibus sal
tem frequentemus obsequijs.
Per dominum nostrum iesum.

Ad sextam. Capitulū.
Aemulor enim vos dei emu
latione: despondi enim vos vni vi-
ro virginem castam exhibere xpō.

De Virgine nō mr̄. Capitul.
Domine deus meus, exalta
sti super terram habitationem meā,
et pro morte defluente deprecata-
sum: inuocaui dominum patrem
domini mei, vt non derelinquat

me in

me in die tribulationis mee, et in tempore superborum sine adiutorio. Pro Virgine non martyre. capitul.

O Quam pulchra est casta generatio cum claritate. immortalis est enim memoria illius: quoniam apud deum nota est, et apud homines. ℟. Deo g.

Commune non Virginum

pro martyre tantū. ca.

Confitebor tibi domine rex, et collaudabo te deum salvatorem meum: confitebor nomini tuo, quoniam adiutor et protector

factus es mihi, et liberasti corpus meum a perditione. Pro nec vir gine nec martyre. capi.

Mulierem fortem quis inve niet: procul, et de ultimis finibus pretium eius: confidit in ea cor viri sui, et spoliis non indigebit.

Pro una martyre tantu.

Deus, q[ui] inter cetera. Oratio.

Pro pluribus martyribus tantu.

Da nobis, q[uae]s. Oratio.

Pro nec virgine nec martyre

Exaudi nos. Oratio.

Pro martyre tantum.

Capitu.

Liberasti me secundum mul

titudine[m]

titudinem misericordie nominis tui a rugientibus preparatis ad escam, de manibus querentium animam meam, et de multis tribulationibus que circumdederunt me.

Ad sextam. capitu.

Manum suam aperuit inopi, et palmas suas extendit ad pauperem: non timebit domui sue a frigoribus nivis.

Pro martyre tantu. ca

Laudabit usque ad mortem anima mea dominum: quoniam eruis sustinentes te, et liberas eos de manu angustie, domine deus noster. Pro nec virgine nec m^r. ca.

Multe filie congregauerunt diuitias, tu super gressa es uniuer sas: fallax gratia, et uana est pul chritudo; mulier timens dominum, ipsa laudabitur. ℟. Deo gratias :-

## Officium Beate marie in Sabbato

Capitulum :-

Ab initio, et ante secula creata sum, et usque ad futu rum seculum non desinam, et in habitatione sancta coram ipso mi nistraui. ℟. Deo gratias :-

Oratio.

Concede nos famulos tu

os

os. queſumus domine deus, per
petua mentis et corporis ſanitate
gaudere: et glorioſa beate marie
ſemper virginis interceſſione, a
preſenti liberari triſtitia, et eter-
na perfrui letitia. Per dominū
noſtrum Jeſum chriſtum filium.

Ad primam. Capitu.

Regi ſeculorum immorta
li et inuiſibili, ſoli deo honor et
gloria in ſecula ſeculorum.

Ad ſextam. Capitu.

Et ſic in ſion firmata ſū.
et in ciuitate ſanctificata ſimiliter
requieui, et in ieruſalem poteſtas
mea: et radicaui in populo hono

rificato. et parte dei mei heredi
tas illius: et in plenitudine sã
ctorum detentio mea. ℟ Deo.

In nonam. Capitu.

In plateis. sicut cinna
momum et balsamum aroma
tisans odorem dedi: quasi myr
rha electa dedi suauitatem o
doris. ℟ Deo gratias

Post Natiuitatem vsque ad puri
ficationem Officium beate marie

Dicitur vt supra, exceptis his que sequuntur.
Deus. qui salutis eterne, o.
beate marie virginita
te fecunda, humano generi pre
mia prestitisti: tribue quesumus:

vt

vt ipſam pro nobis intercedere ſentiamus, per quam meruimus auctorem vitae ſuſcipere, Domi num noſtrum Jeſum chriſtum filium tuum. Qui tecum viuit.

Officium beate m. extra Aduentū.

Ad completorium. cap.

Ego mater pulchrae dile ctionis, et timoris, et magnitudinis, et ſancte ſpei.

Oratio.

Beatae et glorioſae, ſemper que virginis mariae, quaeſumus domine, interceſſio glorioſa nos protegat: et ad vitam perducat aeternam. Per dominum no:

Ad laudes. capitul.

Viderunt eam filie sion: et beatissimam predicauerunt, et regine laudauerunt eam.

Oratio.

Deus, qui de beate marie virginis vtero, verbum tuum, angelo nunciante, carnem susci pere voluisti: presta supplicibus tuis: vt qui vere eam genitricem dei credimus, eius apud te intercessio nibus adiuuemur. Per eundem dominum. Ad primam, capit.

Que est ista, que progre ditur quasi aurora consur gens: pulchra vt luna, electa vt

sol, terribilis vt castrorum acies ordinata. ℟ Deo gratias.

Oratio.

Deus, qui virginalem aulam beatae mariae virginis, in qua habitares, eligere dignatus es: da quaesumus, vt sua nos defensione munitos, iucundos facias suae interesse commemorationi. Qui viuis et regnas. etc.

Ad Tertiam, Capitu.

Et sic in sion firmata sum, et in ciuitate sanctificata similiter requieui, et in ierusalem potestas mea. ℟ Deo gratias.

Oratio.

Deus, qui salutis. quere, fo.

Ad Sextam. Capitulum.

Et radicaui in populo ho
norificato, et in parte dei
mei hereditas illius, et in plenitu
dine sanctorum detentio mea.

Oratio.

Concede misericors deus
fragilitati nostre presidium ut
qui sancte dei genitricis memoriā
agimus, intercessionis eius auxi
lio, a nostris iniquitatibus resur
gamus. Per eundem dominum.

Ad nonam. capitul.

In plateis, sicut cinnamo
mum et balsamum aromatizans

odorē

odorem dedi: quasi myrrha electa dedi suauitatem odoris. ℟. Deo.

Oratio.

Famulorum tuorum, quesumus domine, delictis ignosce: ut qui tibi placere de actibus nostris non valemus, genitricis filij tui domini nostri intercessione saluemur. Per eundem dominum nostrum iesum xp̄m.

Officium beate marie. In Aduentu. Capitulū.

Egredietur virga de radice iesse, et flos de radice eius ascendet, et requiescet super eum spiritus domini. ℟. Deo.

Deus, qui de beatæ mariæ
virginis utero, verbum tuum an
gelo nuntiante, carnem suscipere
voluisti: præsta supplicibus tuis: ut
qui vere eam genitricem dei credi
mus, eius apud te intercessionibus
adiuvemur. Per eundem domi
num nostrum iesum christum:—

Deinde pro sanctis Ad vesperas
et laudes tantum. Oratio.

Conscientias nostras, quæ
sumus domine, visitando
purifica: ut veniens iesus christus
filius tuus dominus noster cũ
omnibus sanctis, paratam sibi

in

in nobis inueniat mansionem. Qui tecum viuit et regnat.

Ad completorium. cap.

Ecce virgo concipiet, et pariet filium, et vocabitur nomen eius emmanuel: butyrum et mel comedet, ut sciat reprobare malũ, et eligere bonum. ℟ Deo gratias.

Ad sextam, Capitulũ.

Dabit ei dominus deus sedem dauid patris eius, et regnabit in domo iacob in eternum, et regni eius non erit finis.

Incipiunt suffragia sanctorum . Ad vs. et ad matutinu͂. Primo de trinitate. a͂.

Te invocamus te adoramus te laudamus obcata trinitas . V. Benedicamus patrem et filium cum sancto spiritu R. laudemus et

Omnipotens sempiterne Oratio. deus qui dedisti famulis tuis in confessione vere fidei eterne trinitatis gloriam agnoscere, et in pote͂tia maiestatis adorare unitatem, quesumus ut eiusdem fidei firmitate ab omnibus semper muniamur adversis. Per christum dominum.

De cruce. Antiphona.

Salva nos xp̄e salvator per virtute͂ sancte crucis qui salvasti petrum

in mari miserere nobis. ℣. Per signum.

Perpetua nos, quesumus domine, pace custodi, quos per lignum sancte crucis redimere dignatus es. Qui vivis et regnas deus. ℟. Amen. De cruce temp. pasch. a.

Crucifixus surrexit a mortuis et redemit nos alleluia all'a. Ad vesperas.

Crucem sanctam subiit qui infernum confregit accinctus est potentia surrexit die tertia alleluia. ℣. Dicite in nationib'.

Deus, qui pro nobis filium tuum crucis patibulum subire voluisti, ut inimici a nob' expelleres potestatem: concede no

bis famulis tuis: ut resurrectionis
gratiam consequamur. Per.
De sancta maria. Ad vesperas. a.
Sancta maria succurre miseris iuua pu
sillanimes refoue flebiles ora pro populo
interueni pro clero intercede pro deuoto
feminneo sexu sentiant omnes tuum iu
uamen quicunqȝ celebrant tuam san
ctam commemorationem. V. Ora pro
nobis sancta. Oratio Concede nos fam.
Ad matutinum. Antiphona.
Aue maria gratia plena dominus
tecum benedicta tu in mulieribus. V.
Post partum virgo inuiolata. Oratio.
Deus, qui de beate marie
virginis utero, verbum tuū,
angelo nunciante, carnem susci
pere

exper volnisti: presta supplicibus tu
is; vt qui vere eam genitricem dei
credimus, eius apud te intercessioni
bus adiuuemur. Per eundem.
In purificatione, Ad vesperas. a.
Ecce maria genuit nobis saluatorem quem
iohannes videns exclamauit dicens ecce agn'
dei ecce qui tollit peccata mundi alleluia.
V. post partum. Ad matutinum. a.
O admirabile commercium creator gene
ris humani animatum corpus sumens
de virgine nasci dignatus est et procedens
homo sine semine largitus est nobis suam
deitatem. V. Benedictus qui venit. Ora.
Deus qui salutis eterne, be
ate marie virginitate fe

cunda, humano generi premia pre
stitisti: tribue quesumus, ut ipsam
pro nobis intercedere sentiamus, per
quam meruimus auctorem vite sus
cipere dominum nostrum iesum. &c.

De Apostolis. Antiphona.

Gloriosi principes terre quomodo in
vita sua dilexerunt se ita et in morte non
sunt separati. V. In omnem terram. oratio.

Deus cuius dextera beatum pe
trum ambulantem in fluctibus
ne mergeretur erexit, et coapostolum
eius paulum tertio naufragantem
de profundo pelagi liberavit: exaudi
nos propitius, et concede ut ambo
rum meritis eternitatis gloriam

consequamur. Qui vivis et regis.

De Sancta Genouefa. Ad vs. an.

O felix ancilla dei nos pondere pressos exonera. et fessos mordacibus exue culpis. etheris ut patrat te supplice ianua nobis. V. Ora pro nobis beata virgo genouefa. R. Ut digni. Ad matutinum.

Ante dominum pia virgo preces effundere certa erumnis pro nostro nobis et posce medelam infirmis que luce poli perfungere crimus. V. Ora pro nobis beata. Oratio.

Presta quesumus omnipotens deus: ut beate Genouefe virginis tue presentiam venerantes, meritis ipsius protegamur et precibus. per. In Adventu. Antiphona.

E cce dominus veniet et omnes sancti eius cum eo et erit in die illa lux magna alleluia. V. Ecce apparebit dns. Oratio.

C onscientias nostras quesumus domine visitando purifica ut veniens dominus noster iesus christus cum omnibus sanctis paratam sibi in nobis inveniat mensionem. Qui tecum vivit.

Tempore paschali. Antiphona.

L ux perpetua lucebit sanctis tuis domine alla. et eternitas temporum alleluia alleluia. V. Dicite in nationibus. Oratio.

O mnium sanctorum. quere. fo.

Per annum. Antipha.

O mnes sancti dei oramus intercce

de pro nobis. ℣. Letamini in domino et
exultate iusti. ℟. Et gloriamini. Oratio.
Omnium sanctorum tuorū
quesumus domine intercessione placatus. et veniam nobis
delictorum tribue, et remedia sem
piterna concede. Per.

De sancto victore. Antiphona.

Ora pro nobis beate victor. ut digni
efficiamur promissione xpi. ℣. Posuisti
domine sup caput eius. ℟. Coronā. Ora.
In firmitatem nostram re
spice omnipotens deus: et
quia pondus proprie actionis gra
vat, beati Victoris martyris tui
intercessio gloriosa nos ptegat. Per.

De Sancto Augustino. aña.

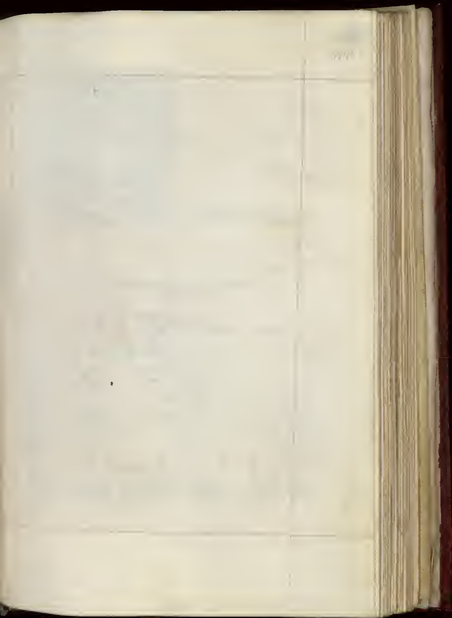
Sacerdos dei augustine pastor egregie ora pro nobis deum. V. Ecce sacerdos magnus. R. Qui in diebus suis. Oratio.

Adesto supplicationibus nostris omnipotens deus: et quibus fiduciam sperande pietatis indulges. intercedente beato Augustino confessore tuo atque pontifice consuete misericordie tribue benignus effectum. Per christum do.

Pro pace. Antiphona.

Da pacem domine in diebus nostris quia non est alius qui pugnet pro nobis nisi tu deus noster. V. Fiat pax in virtute tua. R. Et habundantia. Oratio.

Deus a quo sancta desideria recta consilia . et iusta sunt opera . da servis tuis illam quam mundus dare non potest pacem . ut et corda nostra mandatis tuis dedita . et hostium sublata formidine . tempora sint tua protectione tranquilla . Per domi.







Officium defun
ctor: . Ad vesperas . ã.

Lacebo domino.

ps Dilexi quoniam . ã. Placebo do

mino in regione vivorum . ana

Hei mihi . ps Ad dominum cũ tri.

Hei mihi domine quia incolatus

meus prolongatus est. ā.

Dominus. ps. Levavi oculos.

Dominus custodit te ab omni

mal' custodiat animam tuam domin'.

ā Si iniquitates. p. De profundis. ā.

Si iniquitates observaveris do

mine domine quis sustinebit. ã.

O pera. ps. Confitebor tibi do.

O pera manuum tuarum do

mine ne despicias. Ad magnif. ã.

Nun lazarum. cã. Magnificat. S. Amen. ã. Qui laza

rum resuscitasti a monumen

to fetidum tu eis do mine

dona requiem et locum indul

gentie. pater noster. ℣.

Et ne nos inducas in tentationem. ℟.

Sed libera nos a malo. psalm.

Lauda anima mea ℣.

Requiem eternam dona eis domine. ℟.

Et lux perpetua luceat eis. ℣.

A porta inferi. ℟.
Erue domine animas eorum. ℣.
Requiescant in pace.
℟. Amen. ℣.
Domine exaudi orationem meam. ℟.
Et clamor meus ad te veniat. ℣.
Dominus vobiscum. ℟.
Et cum spiritu tuo. Oratio.
Deus, qui inter apostolicos. &c.
quere post laudes. Ad matut.
Invitator.

Regem cui omnia vivunt.

Venite adoremus. Ps. Venite.

D[i]rige. ℣. Verba mea.

Dirige domine deus meus in conspectu tuo viam meam. A

Convertere. ℣. Dñe ne in furore.

Convertere domine et eripe animam meam quoniam non

est in morte qui memor sit

tui . ãn Ne quando . ps Dñe

deus meus ĩ te speraui . ã . Ne quã

do capiat ut leo animam meã

dum non est qui redimat neq;

qui saluum faciat . ℣ A porta in feri . ℟ Erue dñe aĩas eor . f. j.

Parce mihi domine: nihil enim
sunt dies mei. Quid est homo, quia
magnificas eum? aut quid apponis er-
ga eum cor tuum? Visitas eum dilucu-
lo, et subito probas illum. Vsque-
quo non parcis mihi, nec dimittis me,
vt glutiam saliuam meam? Peccaui:
quid faciam tibi, o custos hominum?
Quare posuisti me contrarium tibi,
et factus sum mihimetipsi grauis? Cur
non tollis peccatum meum, et quare
non auferes iniquitatem meam? Ec-
ce nunc in puluere dormiam, et si
mane me quesieris, non subsistam.

Responsorium. j.



Qui lazarum. Versus.

Qui venturus es iudicare vivos et mortuos et seculum per ignem. Tu eis. ℣. iij.

Tedet animam meam vitae meae: dimittam adversum me eloquium meum: Loquar in amaritudine animae meae. dicam deo. Noli me condemnare. Indica mihi. cur me ita iudices? Numquid bonum tibi videtur, si calumnieris me, et opprimas me opus manuum tuarum. et consilium impiorum adiuves? Numquid oculi carnei tibi sunt,

aut

aut sicut videt homo, et tu videbis?
Numquid sicut dies hominis dies tui,
et anni tui sicut humana sunt tempora,
ut quaeras iniquitatem meam, et pecca
tum meum scruteris? Et scias quia ni
hil impium fecerim, cum sit nemo qui
de manu
tua possit
eruere. R. Credo quod. V.

Quem visurus sum ego

ipse et non a lius et oculi

mei con specturi sunt.

℣. Et in car ne me a. f. iij.

Manus tuae domine fecerunt me, et plasmaverunt me totum in circuitu, et sic repente praecipitas me? Memento quaeso, quod sicut lutum feceris me, et in pulverem reduces me. Nonne sicut lac mulsisti me, et sicut caseum me coagulasti? Pelle et carnibus vestisti me, ossibus et nervis compegisti me. Vitam et misericordiam tribuisti mihi visitatio tua custodivit spiritum meum. R. iij. H ℣. mihi.

℟. Anima mea turbata est val

de sed tu domine sic eue

re e i . Visse ece. In iiº nocturº. Antiph.

In loco . p̄ Dñs regit . ā.

In loco pascue ibi me collocauit.

Delicta . ps. Ad te domine leuaui.

Delicta iuuentutis mee et igno

rantias meas ne memineris domi

ne . a . Credo videre . ps . Dominus

illuminatio . a . Credo videre bo

na domini in terra viventium .

v. In memoria eterna erunt iusti . R. vij. Responde mihi: quantas habeo iniquitates et peccata : scelera mea et delicta ostende mihi . Cur faciem tuam abscondis , et arbitraris me inimicum tuum ? Contra fo

lium

lium, quod vento rapitur, ostendis poten
tiam tuam, et stipulam siccam perseque
ris. Scribis enim contra me amaritu
dines, et consumere me vis peccatis a
dolescentiae meae. Posuisti in nervo pe
dem meum, et observasti omnes semi
tas meas, et vestigia pedum meorum con
siderasti. Qui quasi putredo consumen
dus sum, et quasi vestimentum quod
comeditur a tinea. Responsorium.

Ne recor de ris. V.

Am plius la va me do
mine ab iniusti tia me a

et







Homo natus de muliere, brevi vivens tempore, repletur multis miseriis. Qui quasi flos egreditur et conteritur, et fugit velut umbra, et numquam in eodem statu permanet. Et dignum ducis super huiuscemodi aperire oculos tuos, et adducere eum tecum in iudicium? Quis potest facere mundum de inmundo conceptum semine? nonne tu qui solus es? Breves dies hominis sunt, numerus mensium eius apud te est: constituisti terminos eius, qui

præteriri

praeteriri non poterunt. Recede paululum ab eo, ut quiescat, donec optata veniat, sicut mercenarii dies eius. Responsor.

D omine. ℣. Commis sa mea pavesco et an te te erubes co dum veneris iudicare noli me condem na re. Quia. f. vi.

Quis mihi hoc tribuat, ut in inferno protegas me, et abscondas me donec pertranseat furor tuus, et constituas mihi tempus, in quo recorderis mei? Putasne mortuus homo rursum vivat? Cunctis diebus, quibus nunc milito, expecto donec veniat immutatio mea. Vocabis me, et ego respondebo tibi: operi manuum tuarum porriges dexteram. Tu quidem gressus meos dinumerasti: sed parce peccatis meis.

Responsorium. vj.

Peccantem . V. De profundis clamavi ad te domi

ne domine exaudi vocem me

am. Quia in.

In tertio Nocturno. Antiphona.

Complaceat. ℣. E xpe

ctans expectavi. ℟. Complaceat

tibi domine ut eripias me do

mine ad adiuvandum me res

pice. ã. Sana domine. ps.

Beatus qui intelligit. ã. Sana

domine animam meam quia

peccaui tibi. ã. Sitiuit. ps.

Quemadmodum. ã. Sitiuit a

nima mea ad deum fontem vi

unum quando veniam et appa

re bo ante faciem domini.

℣. Audivi vocem de celo dicentem mihi. Lectio. vij.

Spiritus meus attenuabitur, dies mei breviabuntur, et solum mihi superest sepulchrum. Non peccavi, et in amaritudinibus moratur oculus meus. Libera me domine, et pone me iuxta te, et cuiusvis manus pugnet contra me. Dies mei transierunt, cogitationes mee dissipate sunt, torquentes cor meum. Noctem verterunt in diem, et rursum post tenebras spero lucem. Si sustinue

ro, infernus domus mea est, et in tenebris
stravi lectulum meum. Putredini dixi,
pater meus es: mater mea, et soror mea,
vermibus. Ubi est ergo nunc praestola
tio mea, et patientia mea? Tu es domi
ne deus meus. Responsorium.

D omine secundum. V.

Quoniam iniquita

tem meam ego cognos co et

delictum meum coram me est

semper tibi so[...]li pecca

ui. In deo de pre cor.

Pelli mee, consumptis carnibus, adhesit os meum, et derelicta sūt tantummodo labia circa dentes meos. Miseremini mei, miseremini mei, saltē vos amici mei, quia manus domini tetigit me. Quare persequimini me sicut deus, et carnibus meis saturamini? Quis mihi tribuat, ut scribantur sermones mei? Quis mihi det, vt exarentur in libro stylo ferreo, et plumbi lamina, vel celte sculpantur in silice? Scio enim quod redemptor

meus vivit, et in novissimo die de terra surrecturus sum: et rursum circumdabor pelle mea, et in carne mea videbo deum Salvatorem meum. Quem visurus sum ego ipse, et oculi mei conspecturi sunt, et non alius: reposita est hec spes mea in sinu meo.

Responsor.



[M]emento mei. V.

Et non revertetur oculus meus ut videat

bo na. Nec aspiciat. ℣.

Quare de vulua eduxisti me? qui utinam consumptus essem, ne oculus me videret. Fuissem quasi non essem, de utero translatus ad tumulum. Numquid non paucitas dierum meorum finietur brevi? Dimitte me ergo, ut plangam paululum dolorem meum; antequam vadam et non revertar, ad terram tenebrosam, et opertam mortis caligine: terram miserie et tenebrarum, ubi umbra mortis, et nullus ordo, sed sempiternus horror inhabitat.

Libera me do mine

de morte eter na in die illa

tremen da. Quando ce li

mo uendi sunt et terra. ℟.

Dies illa dies ire cala mi

tatis et miserie dies magna et

amara valde. Quando ce. ℣.

Tremens factus sum ego

et ti meo dum discussio ve

nerit atque ventura ira. Quã.

℣. Quid ergo miserrimus

quid dicam vel quid faciam dñ

nil boni perferam ante tan

tum iudicem. Quando ce. ℣.

Lugent se super se omnis tribus ter re. Quando. ℣.

Vix iustus saluabitur et ego miser ubi parebo. Quādo ℣.

Creator omnium rerum

deus qui me de limo terre forma
sti et mirabiliter proprio sangui
ne redemisti corpus meum li
cet modo putrescat de sepulchro
facies in die iudicij resuscita
ri exaudi exaudi exaudi me

vt animam meam in sinu a

bra he patriarche tui inbeas

colloca ri. Rep.

Libera me. Vs. Dum

ve neris iudica

re se culum per i

gnem.

gnem . Ad laudes . Antipho[a].

E xultabunt. Mise

re mei. Exultabunt domi

no ossa humiliata. Exau

di domine. ps. Te decet hym[nus]. a.

Exaudi domine orationem me

am

am ad te omnis ca ro ueni

et .. ā. Me susce pit. ps Deus

deus meus. ān Me susce pit

dextera tua domine. ā. A por

ta inferi erue domine animā

meam: ps. Ego dixi in dimidio.

Omnis spiritus laudet dominũ.

Ad bened.

℣ Laudate dominũ. Antiphona.

Credo domine deus me

us iesu christe carnis resur

rectionem et vitam eternam

sed tantum de pure cor tuam

clementiam vt non inter he

dos sed inter a gnos consor

tium merear. ℣. Benedictus.

Alia. ana

Ego sum resurre

ctio et vita qui credit in me

etiam si mortuus fuerit viuet

et om nis qui vivit et credit

in me non morietur in eter

num. ℟. Benedictus. S Am.

Pater noster. ℣.

Et ne nos inducas in tentationem. ℟.

Sed libera nos a malo. ℣.

In memoria eterna erunt iusti. ℟.

Ab auditione mala non timebunt. ℣.

A porta inferi. ℟.

Erue domine animas eorum. ℣.

Credo videre bona domini. ℟.

In terra viventium. psalm'

De profundis. &c. in fine.
Requiem aeternam dona eis domine et lux perpetua luceat eis. ℣.
Requiescant in pace.
℟. Amen. ℣.
Domine exaudi orationem meam. ℟.
Et clamor meus ad te veniat. ℣.
Dominus vobiscum. ℟.
Et cum spiritu tuo.

Oratio.

Deus qui inter Apostolicos sacerdotes, famulos tuos pontificali, seu sacerdotali fecisti dignitate vigere: praesta quaesumus, ut eorum quoque perpetuo aggregentur cõsortio. Oratio.

Deus, veniae largitor, et humanae salutis amator: quaesum⁹

clementiã

clementiam tuam, vt nostræ
congregationis fratres, propin
quos, et benefactores, qui ex hoc
sæculo transierunt, beata maria
semper virgine intercedente cũ-
omnibus sanctis tuis, ad perpe-
tue beatitudinis consortium per
uenire concedas. Oratio.

Fidelium deus omnium cõ
ditor et redemptor, anima
bus famulorum famularumque
tuarum remissionem cunctorũ
tribue peccatorum: vt indulgẽ
tiam, quam semper optauerunt,
piis supplicationibus consequan
tur. Qui viuis et regnas in
sæcula sæculorum. Amen.

Oratio.

Absolue quaesumus domine animam famuli tui N. ut defunctus saeculo, tibi vivat: et quae per fragilitatem carnis humana conversatione commisit, tu venia misericordissimae pietatis absterge. Per dominum nostrum.

Oratio.

Deus indulgentiarum domine: da animabus famulorum famularumque tuarum, quorum anniversarium depositionis diem commemoramus: refrigerii sedem, quietis beatitudinem, et luminis claritatem. Per dominum.

Oratio.

Inclina domine aurem tuam ad preces nostras quibus misericordiam tuam supplices deprecamur: ut animas famulorum tuorum benefactorum nostrorum quas de hoc seculo migrare iussisti, in pacis ac lucis regione constituas, et sanctorum tuorum iubeas esse consortes. Per do.

Kyrieleison . Christe eleison . Christe audi nos . Pater de celis deus miserere nobis . Fili redemptor mundi deus miserere nob. Spiritus sancte miserere nob. Sancta trinitas unus deus miserere nobis .

Sancta maria ora pro nob.
Sancta dei genitrix ora p nob.
Sancta virgo virginum . ora .
Sancte mychael ora .
Sancte Gabriel . or.
Sancte Raphael or.
Omnes sancti angeli et archangeli ora .

Omnes sancti beatorum spiritum ordines ora.
Sancte ioannes baptista ora.
Omnes sancti patriarche et prophete ora.
Sancte petre ora.
Sancte paule ora.
Sancte andrea ora.
Sancte iacobe ora.
Sancte ioannes ora.
Sancte thoma ora.
Sancte iacobe ora.
Sancte philippe ora.
Sancte bartholomee ora.
Sancte mathee ora.
Sancte symon ora.

Sancte thadee ora.
Sancte matthia ora.
Sancte marce ora.
Sancte luca ora.
Sancte barnaba ora.
Omnes sancti apl̄i et euāgliste o
Omnes sancti discipuli dñi or̄.
Omnes sancti innocentes ora.
Sancte stephane ora.
Sancte uictor ora.
Sancte clemens ora.
Sancte alexander ora.
Sancte syxte ora.
Sancte corneli ora.
Sancte cypriane ora.
Sancte laurenti ora.

Sancte vincenti ora.
Sancte dionysi cum socijs tuis ora.
Sancte maurici cum socijs tuis ora.
Sancte ypolite cum socijs tuis ora.
Sancte fusciane cū socijs tuis ora.
Sancte leodegari ora.
Sancte sabastiane ora.
Sancte quintine ora.
Sancte gervasi ora.
Sancte protasi ora.
Sancte georgi ora.
Sancte thoma ora.
Omnes sancti martires orate pro nobis.
Sancte silvester ora.
Sancte hylari ora.

Sancte ambrosi ora.
Sancte martine ora.
Sancte Augustine ora.
Sancte gregori ora.
Sancte nicholae ora.
Sancte Remigi ora.
Sancte vedaste ora.
Sancte ceraune ora.
Sancte lucrti ora.
Sancte ieronime ora
Sancte marcelle ora.
Sancte germane ora.
Sancte benedicte ora.
Sancte medarde ora.
Sancte eligi ora.
Sancte maglori ora.

Sancte dodoalde ora.
Sancte guillerme ora.
Sancte iudouce ora.
Omnes sancti confessores ora
te pro nobis.
Sancta Genouefa ora.
Sancta maria magdalena ora.
Sancta felicitas ora.
Sancta perpetua ora.
Sancta agatha ora.
Sancta lucia ora.
Sancta Agnes ora.
Sancta cecilia ora.
Sancta anastasia ora.
Sancta scolastica ora.
Sancta clotildis ora.
Sancta Alda ora.

Sancta aurea ora.
Sancta oportuna ora.
Sancta fides ora.
Omnes sancte virgines orate
pro nobis
Omnes sancti ora.
Propitius esto parce no. do.
Ab insidiis diaboli liba no. do.
A damnatione perpetua lib no.
Ab imminentibus peccatorum
nostrorum periculis l.
Ab infestationibus demonum l.
A spiritu fornicationis l.
Ab appetitu inanis glorie l.
Ab omni immunditia mentis
et corporis l nos do.

Ab ira et odio et omni mala-
voluntate l' no. do.
Ab immundis cogitationib' l'.
A cecitate cordis l no. do.
A fulgure et tempestate l'.
A subitanea et eterna morte l'.
Per misterium sancte incar
nationis tue l' no. do.
Per passionem et crucē tuam l'.
Per gloriosam resurrectionem
tuam l' no. do.
Per admirabilem ascensionē
tuam l' no do.
Per gratiam sancti spiritus
paracliti l' nos do.
In die iudicii libera nos dñe.

pecca

Peccatores te rogamus audi nos.
Ut pacem nobis dones te ro. a. n.
Ut misericordia et pietas tua
nos custodiat te ro. a. n.
Ut ecclesiam tuam regere et
defensare digneris te ro. a. n.
Ut domnum apostolicum et oms
gradus ecclesie in sancta religio
ne conservare digneris te ro.
Ut epos et abbates nostros et
oms congregationes illis comis
sas in tuo sancto servitio conser
vare digneris te ro. a. n.
Ut regibus et principibus nris
pacem et veram concordiam do
donare digneris te ro. a. n.
Ut cunctum populum christia

nium pretioso sanguine tuo
redemptum conseruare dign' te ro.
Ut omnibus benefactorib' nris
sempiterna bona retribuas te r.
Ut animas nras et parentum
nostrorum ab eterna dampnati
one eripias te ro. m'.
Ut fructus terre dare et conse
uare digneris te rogam'.
Ut oculos misericordie tue su
per nos reducere digneris te r.
Ut obsequium seruitutis nre
rationabile facias te rog. a.d.
Ut mentes nras ad celestia de
sideria erigas te rog. a.d.n.
Ut miserias paupm et captiuo

ʒuum intueri et relaxare digner̃ te r.
Ut locum istum et om̃s habitã
tes meo visitare et consolari digne
ris. te rog. a. d.
Ut regularibus disciplinis nos
instruere digneris. te rogam' a.
Ut omnibus fidelibus defunctis
requiem eternam dones. te r.
Ut nos exaudire digneris. te r.
Fili dei 1618 te rog.
Agnus dei qui tollis pecca
ta mundi parce nobis do.
Agnus dei qui tollis peccata
mundi exaudi nos domine.
Agnus dei q̃ tollis peccata mũ
di miserere nobis.

Christe audi nos. Kyrie eleisō.
Christe eleison. Kyrie eleison.
Pater noster. V.
Et ne nos. Et veniat super
nos misericordia tua domine.
Sacerdotes tui ind' iu.
Domine saluum fac regem.
Saluum fac po. t. d. et. be. h. tue.
Fiat pax in uirtute tua.
Oremus pro fratribus nostris.
Et pro benefactoribus nostris.
Anime omnium fidelium def.
r. in pace. Amen.
Domine exaudi o. m.
Dominus vobiscū. Et cū. Ora.
Deus, cui proprium est mi

serere semper, et parcere: suscipe de
precationem nostram: ut nos, et
omnes famulos tuos quos delicto
rum catena constringit, miseratio
tue pietatis clementer absoluat.

Oratio.

Deus, qui nos a seculi vani
tate conuersos ad superne vocatio
nis amorem accendis, pectoribus no
stris purificandis illabere. et grati
am nobis qua in te perseueremus
infunde. ut protectionis tue mu
niti presidijs. quod te donante pro
misimus impleamus. et nostre pro
fessionis executores effecti, ad ea
que perseuerantibus in te dignatus

es

es promittere pertingamus. Ora

Omnipotens sempiterne deus, qui facis mirabilia magna solus. pretende super famulos tuos, et super cunctas congregationes illis commissas spiritum gratie salutaris. et ut in veritate tibi complaceant. perpetuum eis rorem tue benedictionis infunde. Oratio.

Pretende domine famulis et famulabus tuis omnibus benefactoribus nostris. dexteram celestis auxilii. ut te toto corde perquirant. et que digne postulant assequantur. Oratio.

Deus a quo sancta desideria

recta consilia . et iusta sunt ope
ra . da servis tuis illam quam mun
dus dare non potest pacem . ut et
corda nostra mandatis tuis dedi
ta . et hostium sublata formidine .
tempora sint tua protectione tran
quilla . Oratio .

A Domo tua quesumus do
mine spirituales nequitie
repellantur . et aeriarum discedat
malignitas tempestatum . Oratio .

Adesto domine supplicationi
bus nostris . et viam famu
lorum tuorum in salutis tue pro
speritate dispone . ut inter omnes
vie et vite huius varietates tuo
semper protegantur auxilio .

Animabus quesumus domi
ne famulorum tuorum fratrum
nostrorum . et omnium fidelium
defunctorum . oratio proficiat sup
plicantium . ut eas et a peccatis
omnibus exuas . et tue redemptio
nis facias esse participes . p x . d n.
Deus qui es sanctorum tu
orum splendor mirabilis .
atque lapsorum sublevator inenar
rabilis . fac nos famulos tuos sã
cte dei genitricis semperque virginis
marie . et omnium sanctorum tuo
rum ubique tueri presidiis . nec non
familiaritate atque consanguinitate
nobis coniunctis . et omni popu

lo christiano cunctis insidiis fallacis
inimici depulsis concede ad celestē
patriam redeundi aditum, ac dest̄i
ctorum omnium sacri baptisma
tis unda renatorum animabus
quiete perfrui sempiterna. Per
eundem do. nō. Benedicam' dño.
Preces quadragesimales super
psalmos.
Kyrie eleison .iij. Pater nr̄.
Et ne nos, &c. Et veniat sup
nos misericordia tua domine.
Sacerdotes tui induant' iustitiā.
Domine saluum fac regem.
Saluum fac populum tuum
dñe. et benedic hereditati tue.

Fiat pax in virtute tua.
Oremus pro fratribus nostris.
Ut pro benefactoribus nostris.
Anime omnium fidelium defunctorum requiescant in pace.
Domine exaudi orationē meam.
Dominus vobiscum. Et cum.

Feria secunda. Oratio.

Actiones nostras quesumus domine aspirando preveni et adiuvando prosequere, ut cuncta nostra operatio et a te semper incipiat, et per te cepta finiatur. Per christum. Feria tertia. Oratio.

Omnipotens sempiterne deus qui facis mirabilia ma

gna solus. pretende super famulos tuos, et super cunctas congrega tiones illis commissas spiritum gratie salutaris. et ut in verita te tibi cōplaceant. perpetuum eis rorem tue benedictionis infunde. Per xpm. Feria Quarta. Oratio.

DEus qui conspicis omni nos virtute destitui. inte rius exteriusqꝫ custodi. ut et ab omnibus adversitatibus muni amur in corpore. et a pravis co gitationibus mundemur in mē te. Per xpm. Feria v. Oratio.

DEus qui nos in tantis periculis constitutos pro

humana scis fragilitate non posse
subsistere: da nobis salutem men
tis et corporis. ut ea que pro pecca
tis nostris patimur. te adiuvante
vincamus. Per christum do.

Oratio.

Deus virtutum cuius est
totum quod est optimum. insere pe
ctoribus nostris amorem tui no-
minis. et presta in nobis religio-
nis augmentum. ut que sunt nu
trias. ac pietatis studio que sunt
nutrita custodias. Per christum.

Oratio.

Deus qui errantibus ut
in viam possint redire iustitie.

ueritatis tue lumen oſtendis: da cunctis qui chriſtiana profeſſione cenſentur. et illa reſpuere que huic inimica ſunt nomini, et ea que ſunt apta ſectari. Per chriſtum.

## Ceremonies qui ſ'obſeruent en la deſcente de la Chaſſe S.^te^ Geneuieue Et de la Proceſſion qui ſe fait en l'Egliſe de noſtre Dame de Paris

Sur l'aduis & les plaintes que recoiuent meſſieurs les Preuoſt des Marchands & les Echeuins de Paris, des neceſſitez publiques, peſtes, guerres, famines, maladies de la Perſonne du Roy, & de la Reine; de la perte des biens de la terre, faute de pluye, ou de beau tems ou de quelque autre vrgente neceſſite publique ils ſe transportent vers Monſieur l'Archeueſque de Paris pour luy faire entendre le beſoin qu'on á de recourir á Dieu par prieres sur tout par l'interceſſion de S.te Geneuieue Patrone de la Ville: Et la neceſſite de de deſcendre ſa Chaſſe pour eſtre proceſſionellement portée a noſtre Dame comme il á de couſtume d'eſtre prattiqué en ſemblables neceſſitez. ¶ Monſieur l'Archeueſque accompagné du Preuoſt.

& des Escheuins se transportent en la Cour de Parlement pour luy faire entendre la mesme necessité. a Cour ordonne par Arrest que les Chasses de S.t Marcel et de S.te Geneuieue seront descendues, et processionellement portees, et que Monsieur l'Archeuesque en donnera aduis au R.d Pere Abbé, et aux Religieux de S.te Geneuieue. Elle enioint en outre par le mesme Arrest aux Lieutenants Ciuil et Criminel de mettre ordre que les lieux soient netoiés et tendus par ou doit passer la procession. uelques iours auant la descente de la Chasse M.r l'Archeuesque le fait publier par toutes les paroisses de Paris, faisant faire vne Procession generalle en l'Eglise S.te Geneuieue pour disposer le peuple á cette action. la il est receu auec Messieurs de nre Dame par les Religieux de S.te Geneuieue reuestus de Chappes. La predication que doit Monsieur l'Archeuesque, ou son Eglise se fait en l'Eglise de S.t Esthienne du Mont premiere fille de S.te Geneuieue, pour faire entendre au peuple le suiet de la Procession: -

a messe dite M.r l'Archeuesque accompagné de tous les chanoines de nre Dame se rend au Chapitre de l'Abbaye, ou il prend le costé droit auec les chanoines tandis que le R.d Pere Abbé et les Religieux tiennent le costé gauche. Lá il fait entendre l'Arrest de la Cour, expose la necessite de descendre la Chasse et demande le iour qui sera pris pour cet effet. Abbé remonstre les charges et les difficultez de cette descente, qui ne se doit faire que pour de tres vrgentes necessitez: que si on insiste il ne laisse pas de l'accorder, faisant neanmoins promettre que rien ne sera laissé des solennités, et Ceremonies qui ont coustume d'y estre obseruees. Ensuite ils auisent par ensemble du iour qui sera pris pour la descente de la Chasse et la procession sans aucunement parler du lieu ou elle se doit faire, estant vne coustume inuiolable que la Chasse de S.te Geneuieue n'a iamais esté et n'est portee ailleurs en procession que dans l'Eglise de nre Dame de Paris. e iour estant determiné ils se departent les vns des autres auec toute sorte d'affection et d'honesteté. a procession retirée l'Abbé exhorte ses Religieux á s'y preparer par les prieres, et le ieusne ordinaire de trois iours qui est continué iusques á ce que toute la solennité de la procession soit acheuée, et la Chasse replacée en son lieu: et donne charge que les beneficiers tant du dedans que du dehors la Ville en soient aduertis á ce quils ayent á s'y trouuer si aucune difficulte ne les en empesche. es Porteurs de la Chasse sont aduertis par le clerc de leur fabrique appellé par le Cheuessier ou sacristain pour ce suiet du iour de la descente de la Chasse á ce quils ayent soin de s'y disposer par la Confession et communion quils font le iour de la descente en la chapelle de la misericorde qui est preparée a cet effet. es matines se disent la veille du iour de la descente, tout l'office se fait comme au iour des miracles de S.te

l'oraison excepté

Geneuieue, qui est la commune au lieu de l'on dit

les leçons du second et troisieme nocturne sont accommodées au suiet de la descente de la Chasse, le septieme et huictieme Respons se dit comme au =

iour de sa feste. e iour arrivé de la descente de la Chasse les Religieux sont assemblés au Choeur environ la minuit par le son de la plus petite Cloche qui sonne depuis vnze heures iusques á minuit disent les heures de Prime Tierce Sexte et None. es heures dites, les Religieux s'assemblent auprés du Maistre Autel pour dire tous prosternes contre terre sur des tapis et les pieds nuds qu'ils ont ainsy iusques au retour de la procession, les sept Pseaumes qui sont commencés par l'Abbé revestu d'aube, d'etolle, et de Chappe, ala fin desquels il dit les oraisons, et y adiouste celles qui sont propres au suiet de la descente, puis il donne l'Absolution, aux Religieux comme au mercredi des Cendres. a benediction donnée on fait sonner toutes les cloches de l'Eglise, et le Chevessier accompagné d'vn autre Religieux monte ala Chasse pour aider ala descendre laquelle est receue par quattre Religieux et portée sur vne table á ce disposée en la Chapelle de S.te Clotilde: lors le Chantre commence le Respond iusques, á ce quelle soit descendue · apres quoy l'Abbé dit l'oraison, laquelle finie l'Abbé et les Religieux vont la saluer et baiser. ela fait l'Abbé dit la grande Messe a laquelle communient tous les Religieux tant prestres que Clers vn seul prestre excepté qui est d'ordinaire le Chantre pour dire la Messe des porteurs en la Chapelle de misericorde. a Messe dite les Religieux se retirent en leur Chambre allans neanmoins par tours reciter le Pseautier devant la Chasse iusques au tems de la Procession. Pendant lequel tems M.r le Baillif de S.te Genevieve son Lieutenant procureur fiscal et autres officiers de l'Abbaye demeurent auprés de la Chasse, pour la garder iusques á ce que Messieurs du Chastelet soient arrivés. e matin sur le point du iour les lieutenans civil et criminel le Procureur et l'Advocat du Roy sont obligez se rendre en l'Eglise de S.te Genevieve auec nombre de Commissaires et autres officiers pour prendre la Chasse en leur protection au nom de toute la Ville s'obligeans par promesse et sermens de la garder fidellement ils accompagnent la Chasse durant tout le Cours de la Procession, et ne la quittent point quelle ne soit remise en sa place ordinaire, le chevessier aussy marche touiours immediatement devant la Chasse tant en l'allée qu'au retour de la procession vne baguette en la main pour empescher les trop grandes approches que pourroit faire le peuple de la chasse. e Parlement aussy a coustume d'assister ala Procession en Robbes rouges, il s'assemble en vne salle de l'Abbaye et attend lá iusques á ce quil soit adverti par quelq'vn des Religieux de l'heure de la Procession laquelle estant en estat de partir Messieurs du Parlement vont saluer la Chasse et la baiser les vns apres les autres. orsque les processions et les Chasses de S.t Paxence, S.t Magloire, S.t Landeric, S.t Merry, S.t Anoye, S.te Oportune, et autres Reliques arriveront elles sont portées par l'Eglise, et sans s'y arrester acause de la multitude de peuples sont conduites dans le Chapitre de l'Abbaye tapissé á cet effect pour estre posées sur des tables honestement preparées á cette

fin. à aussy se trouuerront les porteurs nuds pieds et nuds testes reuestus de grands rochets de lin pour receuoir la Chasse S.t Marcel quils porteront depuis le portail de l'Eglise iusques sur le maistre Autel. essieurs de nr̃e Dame entrans dans l'Eglise prennent le coste droit, les Chantres commencent vne Antienne, ou vn Respons de S.t Pierre et de S.t Paul quils acheuent estans entré dans le Choeur apres quoy M.r l'Archeuesque dit l'Oraison.

n suite Messieurs de nr̃e Dame entonnent l'Antienne apres laquelle Monsieur l'Archeuesque dit l'Oraison: Et si tost que l'Antienne se commence les Orfeures de Paris Porteurs de la Chasse S.t Marcel portent la Chasse de S.te Geneuieue iusques soubs le Portail. oraison de S.te Geneuieue acheuée par M.r l'Archeuesque le Chantre de S.te Geneuieue commence l'Antiene de S.t Marcel O dulce decus Parisiorum. Et aussy tot les porteurs de S.te Geneuieue portent semblablement la Chasse de S.t Marcel iusques dessoubs le portail. apres lantienne de S.t Marcel l'Abbe de S.te Geneuieue dit l'oraison Deus qui populo tuo. oraison de S.t Marcel dite le Chantre de S.te Geneuieue entonne le Respons de tous les SS. Concede nobis quæsumus veniam delictorum et intercedentibus sanctis quorum hodie præsentiam veneramur &c. n'y ayans que les Religieux qui chantent tout le cours de la Procession.

ors la procession commence a partir, les Eglises Paroissiales marchent deuant chacune selon son ordre, en dernier rang viennent Messieurs de nr̃e Dame qui tiennent le coste gauche auec les filles, et les Religieux de S.te Geneuieue auec les filles S.t Esthienne et S.t Medard qui gardent le coste droit vis a vis les vns des autres ensorte que le premier des chanoines responde au premier des Religieux et ainsy des autres et l'Abbe de S.te Geneuieue a M.r l'Archeuesque. Et entre l'Abbé et les Religieux marchent les officiers de la iustice de S.te Geneuieue spirituelle et temporelle scauoir le conseruateur, Baillif, Lieutenant, Procureur fiscal et les autres Officiers de l'Abbaye. Abbe de S.te Geneuieue donne la Benediction par tous les lieux de la Procession conioinctement auec M.r l'Archeuesque tant en l'allee qu'au retour. e respons de tous les SS. acheué on en chante d'autres qui sont propres au suiet de la Procession, si pour la Paix Tua est potentia. si pour la pluye Dominator Domine Cœlorum. si pour le beautems Rex omnipotens in ditione &c Si pour raison de la maladie Recordare Dñe testamenti tui. Si pour la guerre Dñe Deus qui conteris bella. stant sur le petit Pont se chante le Respons de la Vierge S.te Geneuieue Adueniente ou Ingrediente. l'entree de nr̃e Dame se chante le Respons Gaude Maria Virgo. et l'antiene Inuiolata. Et on se met a genoux pour chanter trois fois O Benigna. l'entree de nr̃e Dame les porteurs de S.te Geneuieue prennent la Chasse de S.t Marcel. ceux de S.t Marcel celle de S.te Geneuieue pour les porter au lieu a ce destiné. et vis avis d'icelle au costé

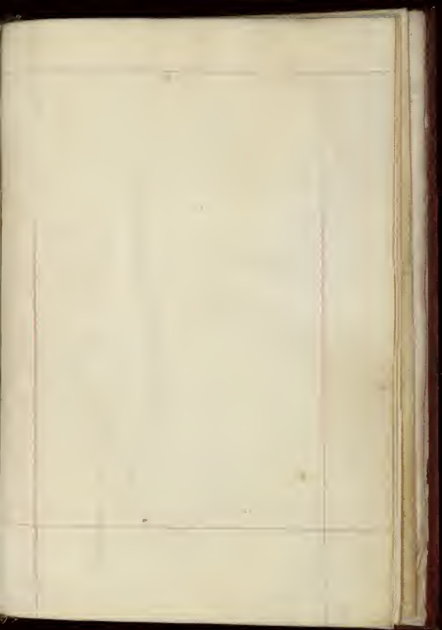
,droit le sacristain de S.te Geneuieue auec vne baguette à la main se met en vne des basses chaires du Chœur destinée pour luy à cet effect pour les raisons ci dessus mentionnées. es Religieux de S.te Geneuieue tiennent le costé droit en l'Eglise nre Dame, les chanoines le gauche, qui font aux Religieux de S.te Geneuieue dans leur Eglise tous les mesmes honneurs que les Religieux de S.te Geneuieue leur font et accordent dans la leur et ce pour la reuerence de la S.te es places prises la messe est chantée par les Religieux de S.te Geneuieue selon l'ordre qui suit et celebrée par M.r l'Archeuesque assisté des diacres soubsdiacres et autres officiers de S.te Geneuieue. e chantre de S.te Geneuieue et celuy de nre Dame portans Chappes commencent l'Introïte Salue sancta Parens &c qui est poursuiui tout entier par les Religieux de S.te Geneuieue. e premier Kyrie est ioué sur l'Orgue, le second est chanté par les Religieux de S.te Geneuieue, le troisieme par Messieurs de nre Dame et ainsy du reste. e Gloria in excelsis est chanté par les Religieux de S.te Geneuieue. endant la Messe se fait le sermon au peuple en la grande Salle d'enhault ou en quelque autre lieu conuenable. e Graduel est chanté par M.rs de nre Dame et l'Alleluya par les Religieux de S.te Geneuieue. e premier Verset de la prose hac clara est chanté par l'Orgue le second par les Religieux de S.te Geneuieue et le troisieme par M.rs de nre Dame, et ainsy du reste. e Credo est chanté en musique par les Chantres de nre Dame e Sanctus auec le Verset O salutaris hostia, l'Agnus et la Postcommunion est tout chanté par les Religieux de S.te Geneuieue. urant la Messe l'Abbé de S.te Geneuieue tient la premiere place du costé droit reuestu de ses habits Pontificaux et accompagné de deux Acolythes et autres Officiers ordinaires, et à son costé la M.r le premier President et les autres Presidens et Conseillers du Parlement iusques au milieu du Chœur, le reste des chaires demeurans pour les Religieux de S.te Geneuieue. essieurs de la Ville doiuent fournir le luminaire comme les cierges et les torches qui sont aux costés des Chasses durant la procession. a Messe dite le chantre de S.te Geneuieue commence l'Antienne Salue Regina apres laquelle l'Abbé de S.te Geneuieue dit l'oraison famulorum tuorum. oraison acheuée les Porteurs de S.te Geneuieue prennent la Chasse de S.t Marcel et la portent iusques au petit Pont, et lorsquelle passe à trauers le Chœur les Religieux de S.te Geneuieue chantent le Respons de S.t Marcel O Sancte Marcelle Christi Confessor. es Porteurs de la Chasse de S.t Marcel portent celle de S.te Geneuieue iusques au mesme lieu. e Respons de Saint Marcel acheué se commence celuy de S.te Geneuieue Flos sudans ou autre.

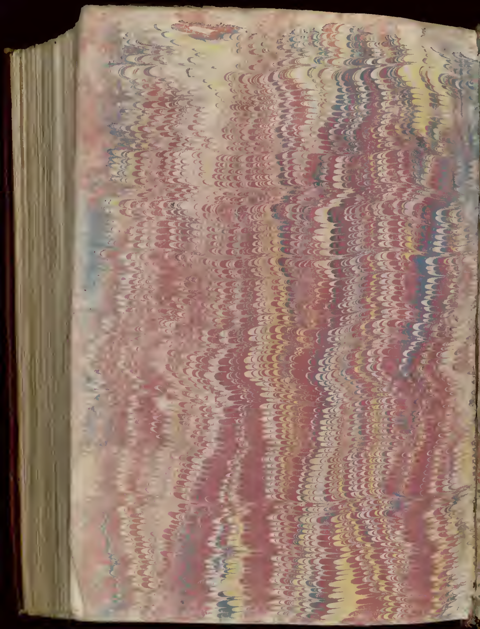
onsieur l'Archeuesque et les chanoines de nre Dame reconduisent la chasse de S.te Geneuieue iusques deuant l'Eglise de S.te Geneuieue des Ardens en l'ordre et rang auquel ils se trouuent Scauoir Messieurs de nre Dame à droit, et les

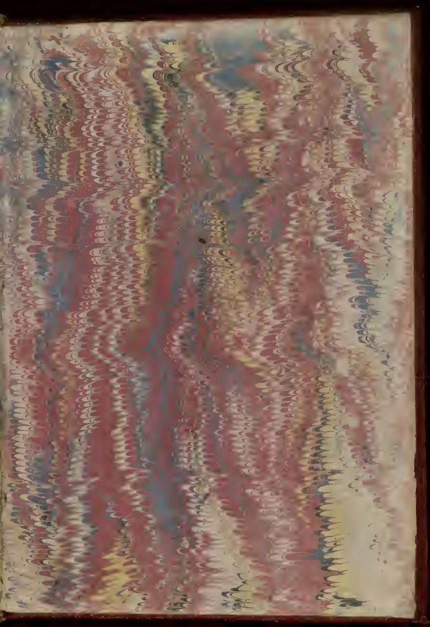
Religieux de S[te]. Geneuieue a gauche. yans la pris congé auec respect & tesmoignage d'honneur et d'affection les vns des autres, la procession de nr̃e Dame retourne en son Eglise, et les Religieux de S[te]. Geneuieue auec la Chasse de la S[te]. en la leur accompagnez de M[rs]. de S[t]. Marcel, et precedés des quattres ordres mendians, et de leurs Parroisses S[t]. Estienne et S[t]. Medard. es Augustins la quittent vn peu au dela du petit Pont : les Cordeliers en la place Maubert : les Carmes a leur Eglise : M[rs]. de S[t]. Marcel et leur suite au Carfour dit la fonteine S[te]. Geneuieue : les Iacobins la reconduisent iusques soubs le Portail de S[te]. Geneuieue : Et leurs Parroisses de S[t]. Estienne et S[t]. Medard ne la quittent point qu'elle ne soit remontée en sa place. es cloches cependant sont tousiours sonnées et lors qu'on est arriué a la Croix des Carmes on chante le Respons de S[t]. Pierre Cornelius centurio. a procession arriuée soubs le portail les porteurs attendent que les Religieux soyent passez qui s'arrestent en la nef pour y chanter le Bz. le Bz acheue se chante l'Ant.

pour rentrer au Chœur durant laquelle la chasse est remontée en sa place. apres icelle l'Abbe dit l'oraison, laquelle dite les Relig. se retirent et vont lauer leurs pieds. les Vespres se disent de S[te]. Geneuiefue cōe a la feste des miracles l'oraison exceptée. les chapeaux de fleurs qui auront reposez sur la chasse sont rendus a ceux qui les ont fourny. le diner est deub de la part des Relig. a messieurs les lieutenans ciuil et criminel a leurs Officiers et a ceux de la iustice de S[te]. Geneuiefue.










IHS
MA
MA
IHS



